लक्ष्मण आय यातु ते प्राण बचायो ॥ जनक भूप मम जनक ससुर दशरथ द्रुत आयो ॥ मेघना-दकी खड्ग प्राण मेरो बचवाई ॥ अगमो रामजी अयश बोल रोती असमाई ॥ ३२१८ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

मेघनाद अतिशय गर्जाये ॥ मार खड्ग अध टूक कराये ॥ निरखि भालु कपि अति कल-पाई ॥ इन्द्रजीत बध कारण धाई ॥ ३२१९ ॥ शिव मिचाय हनुमन्त रिसाये ॥ कूद कूद औषध वन आये ॥ रासपाय अतिशय सुखराई ॥ आग समितिते प्राण बचाई ॥ ३२२० ॥ जाहा गढ़ भीतर चलि आए ॥ तब हनुमान फिरे घबड़ाए ॥ करि क्रन्दन रघुपतिको आई ॥ भये युगल पदमो शिर नाई ॥ ३२२१ ॥ मम माता कर्बुर प्रभु घाए ॥ भाग दुष्ट निज प्राण बचाए ॥ सुन मूर्छित होवे रघुराई ॥ करि क्रन्दन लक्ष्मण घबड़ाई ॥ ३२२२ ॥ लै प्रभुको निज कण्ठ लगाए ॥ रोवें लक्ष्मण सर्व सब आए ॥ नल आदिक सेनापति आवें ॥ सुन सुन हाहाकार करावें ॥ ३२२३ ॥ पहुंचे अन्त विभीषण आई ॥ नारायणको चेत कराई ॥ भये

शत्रु पदमो शिरनाये ॥ माया निरखि नाथ भय-
पाये ॥ ३१२४ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

मात लक्ष्मी जानकी ताहि सबकी मार ॥
माया सीता काटके भागा रथते छार ॥ भागा
रथते छार नाथ हनुमन्त पठाए ॥ वन अशोकाते
लेहु मातको हाल मगाए ॥ शुनत वचन हनुमन्त
दौड़ प्रस्थान कराई ॥ निरखि जानकी मात बीर
लौटे हरषाई ॥ ३१२५ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

खबर पाय ईश्वर हरषाए ॥ दौना कोल शत्रु
को जाए ॥ मित्र बोल पूछैं रघुराई ॥ क्यों करि
ताको देहुं खपाई ॥ ३१२६ ॥ भयो शत्रु पदमो
शिरनाए ॥ कमलासनते बर वह पाए ॥ जो ताका
मख ध्वंस करावैं ॥ सो ताको प्रभु मार सकावैं ॥
॥ ३१२७ ॥ लक्ष्मणको दीजे रघुराई ॥ करूं भंग
ताको मख जाई ॥ शुन राघव बोलैं मुसकाए ॥
अवरज कोमल गात धराए ॥ ३१२८ ॥ क्योंकरि
ताको देहुं पठाई ॥ गढ़ भीतर सङ्कट पुर भाई ॥
ओड़ भुजादल शत्रु बतावैं ॥ तब प्रसाद मख ध्वंस
करावें ॥ ३१२९ ॥ कृपादृष्टि जापर तब भाई ॥

मेघनादसो कोट खपाई ॥ सुन रघुवीर महा हरषाये ॥ सैन्यकन्त सबको बुलवाये ॥ ३२३० ॥ हनूमान आदिक दै साथं ॥ भेजा मिल साथ रघुनाथं ॥ उत रावण सुत मेध करावैं ॥ इतसे नारायण बल जावे ॥ ३२३१ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

गड़के हागे मारके यज्ञअंश पुन कौन ॥ मेघशालमो आयके क्रतूवस्तुको छौन ॥ क्रतूवस्तुको छीन नाश हुज्या को कीना ॥ यज्ञकुण्डमो मूत अनल ठण्डाकरि दीना ॥ कूद कूद हनुमन्त याग रक्षकको घाए ॥ मेघनाद भग्न पाय शरासन लीन उठाए ॥ ३२३२ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

इतसे लक्ष्मण वीर सिधाए ॥ उतसेइन्द्रजीत चलिआए ॥ भयो परस्पर घोर लड़ाई ॥ को कवि सके समरसो गाई ॥ ३२३३ ॥ मेघनाद जलधर मो आये ॥ मार मार शर मर्क खपाये ॥ हनूमान झपटै गरजाई ॥ मारा लात व्योममो जाई ॥ ३२३४ ॥ पदाघात करि स्पन्दन घाए ॥ चरण पकड़ धरणी पटकाए ॥ जव चेतन रावणसुत पाई ॥ भागा वली गेह घबड़ाई ॥ ३२३५ ॥ वहां नील नल पहुंचे जाए ॥ मार गदातन चूर्ण

कराए ॥ भागा उतसि यातु डराई ॥ गढ़ लङ्का जावैं घबड़ाई ॥ २२३५ ॥ वहां विभीषण देख रिसाये ॥ लै कृपाण सन्मुख चलि आये ॥ तास पाय भाग्यो युवराई । घेरा लक्ष्मण कोप कराई ॥ ॥ २२३७ ॥ मेघनाद भागन नहि पाये ॥ युद्ध परस्पर होन लगाये ॥ को ताको रणभाष सकावैं ॥ लिखत लिखत शारद थकि जावैं २२३८ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

वीर युगल तब समरमो करैं बाण अवतार ॥ ताको कछु वर्णन करूं रामचन्द्र उरधार ॥ रामचन्द्र उरधार बाण सामर्थ चलाई ॥ और बाण सामर्थ नाम पद्मापन भाई ॥ इन्द्रजाल हरिजाल हुताशन काल चलाए ॥ वरुण बाण खरयान और उल्का बतलाए ॥२२३९॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

विद्युतमौनचक्र कहावैं ॥ गजेन्द्र सूचीमुख नाम धरावैं ॥ सिंहदन्त ऐषिकशरभाई ॥ वज्रदन्त औ दण्ड कहाई ॥२२४०॥ सूर्य्य शशीमुख कर्ण कहावैं ॥ शङ्कर नील विकट बतलावैं ॥ अर्द्धचन्द्र खुरुपार्श्व चलाई ॥ समधार ज्योतिर्म्मय भाई ॥ ॥२२४१॥ यह प्रकार बहु बाण चलावैं ॥ शारद शेष अन्त नहि

पावै ॥ ब्रह्मवाण सुरपति पठवाए ॥ ताको लछमण चाप लगाए ॥३२४२॥ मारा गर्ज्ज यातुको जाई ॥ काटमुगड पच टूक कराई ॥ पश्च अमर मङ्गल सब गाये ॥ सब मर्क नाचैं हरषाये ॥३२४३॥ सुर सब प्रभु शिर पुष्प चढ़ाई ॥ कोनाकोट नुतो हरषाई ॥ त्रिभुवन मोजो जीव रहावैं ॥ हर्ष हर्ष मङ्गल सब गावैं ॥३२४४॥ भक्त बिभीषण अति हरषाई ॥ लै लछमण रघुपतिपै आई ॥ चरणाम्बुज मो मुगड निवाये ॥ इन्द्रजीत वध गर्ज्ज सुनाये ॥३२४५॥

॥ कवित्त ॥

सुन रण जीत हाल विहस दनुज काल निज अग्रज धीप्रकगठ मोलगायकी ॥ शिरको चुम्बन करि मित्र विभीषण धरि मिलत परसपर गल लपटायकी ॥ अङ्गद सुग्रीव आय नाचत मङ्गल गाय भालु कपि सब मिल आनन्द करायकी ॥ श्रीगरू गोबिन्दसिंह तिनकी पदार विन्द मदनगोपालसिंह गावत मना-यकी ॥ ३२४६ ॥

अथ श्रीलक्ष्मणजीका शक्तीशेल वर्णनम् ।

॥ कवित्त ॥

सूर्य्यवंशी प्रगट साथ इन्द्रजीत होतपात रावण को हाल कोई भाषत न जायके॥ द्वितीय प्रहर जब भग्नदूत आय तब बोलत दलप निज मुण्ड पट कायके॥ वीरशून्य भया घर कौन भूप महेश्वर इन्द्रजीत पास लक्ष्मण कौन घायके॥ शुनत दनुज-पति क्रन्दन करत अति हाहा सुत मेघनाद कहाँ गरजायके॥ १२४७॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

पुत्र शोक भूभृत अतिपाये॥ सीताको कवि भाष सकाये॥ पुत्र निधन राणी शुनपाई॥ गिरी भूमि मूर्च्छित हो भाई॥१२४८॥ जब चेतन राणी वह पायो॥ कहाँ पुत्र कहिकै कलपायो॥ पुरजन हाहाकार कराई॥ नरनारी रोवैं कलपाई॥१२४९॥ सुलोचना शुभ नागकुमारी॥ कन्तहेतु क्रन्दन करि भारी॥ रामचन्द्रकी निकट सिधावैं॥ करि बहु

नुती वती शिरनावैं ॥३२५०॥ घृतचन्दन चोआ मगवाई ॥ वैठो चितामध्यमो जाई ॥ सतीत्व यनलते काष्ठ जलायो ॥ कन्त सङ्ग तन भस्म करायो ॥३२५१॥ जय जयकार भयो पुरमाहीं ॥ धन्य धन्य भणं लोग सराहीं ॥ निरखि दशानन नुती करावैं ॥ समर हेतु निज वलय वुलावैं ॥३२५२॥ मन्दोदरी भणै शिरनाई ॥ कान्त रामपदपद्म मनाई ॥ दे सीता निज प्राण वचाए ॥ करौ राज रघुनाथ मनाए ॥३२५३॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

शुन कान्ताके वचनको भूभुज उत्तर दीन ॥ मोक्षरूप मे राजको नारि युक्ति यह कौन ॥ नारि-युक्ति यह कौन बोल प्रस्थान कराए ॥ ढोल नगाड़ा आदि सर्व्व वाजा वजवाए ॥ महाप्रलयकी शब्दतुल्य रणसाज वजाई ॥ पहुचा पश्चिमद्वार जहा लक्ष्मण रघुराई ॥ ३२५४ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

पञ्चानन सम शब्द कराए ॥ पहुचे भालुकपी सव धाए ॥ भयो परस्पर खूब लड़ाई ॥ भागे भालु मर्क घबडाई ॥३२५५॥ सेनापति सव नाथ वुलाए ॥ चन्द्र चन्द्र रणमो पठवाए ॥ सव पर रावण वाण चलाई ॥ करि दीना मूर्च्छागत भाई ॥३२४६॥ निरखि लक्ष्मण

शरचाप लगाए ॥ मेघनादरथ सन्मुख चलि आए ॥ अभ्यागमन्काना पख ओरं ॥ वरषैं युग्म आरतै तारं ॥ ३२५७। लक्ष्मण ऐषिक वाण चलाए ॥ मुण्ड मार-थीका दूत घाए ॥ निरखि विभीषण मन्त्र सिखावैं ॥ स्यन्दन पदाघात करि घावैं ॥३२५८॥ तब रावण अति कोप कराई ॥ छोड़ा शैलपाट गर्जाई ॥ नि-रखि शैल साधू घबड़ाए ॥ द्रुत लक्ष्मण शर मार खपाए ॥३२५९॥ शैल और लङ्केश चलायो ॥ तिस को भी लक्ष्मण झट घायो ॥ और शैल रावण पुन मारा ॥ उसको भी रघुनाथ विदारा ॥३२६०॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

तब रावण अति क्रोध कर भणै गर्जके आय ॥ बार बार मम शैलको दीना आप खपाय ॥ दीना आप खपाय बलयका प्राण बचाये ॥ अब तुमको मै हनौ करो रक्षा निज आये ॥ असभण शक्तीशैल शमन की स्वसा उठाई ॥ मारा मन्त्र अलाय लखन नहि रोकशकाई ॥३२६१॥

॥ पादा कुलक छन्द ॥

शमन स्वसाको शीर्ष निवाये ॥ भणै राम अति-शय कलपाये ॥ अवर प्राण मम दान करावैं ॥ तब प्रसाद अवरजनिजपावैं ॥३२६२॥ भणै शैल प्रभुको

शिर नाए॥ मन्त्रपाठ करि यतु चलाए॥ ताका वार व्यर्थ नहिं जाई॥ क्षमाकरी मुझपर रघुराई ॥३२६३॥ सुन ईश्वर मूर्छित हो जाये॥ लगा प्रेम लक्ष्मणको आये॥ गिरे प्रभो धरणी तड़फाई। हाहाकार करें रघुराई ॥३२६४॥ कोप धार शर चाप लगाये॥ भिड़े प्रभो रावणसे जाये॥ मार मार शर गात खपाई॥ भागा यातु त्रास पति पाई ॥३२६५॥ नाथ निकट लक्ष्मणके जाये॥ रोवें हाहाकार कराये॥ क्या जगमो मैं तुण्ड दिखावें॥ क्या अवधीगणको बतलावें ॥३२६६॥ क्या करि हौं निज गात रखाई॥ मरूं डूब सागर मैं जाई॥ असमय कराघातउर करते॥ भालु मर्क प्रभुको सब धरते ॥३२६७॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

कातर प्रभुको देखके भयो सोच सब साथ॥ क्या कारण व्याकुल प्रभो अनुज प्राण तव पाय॥ अनुज प्राण तव पाय सुषेण भयो शिरनाई॥ गन्ध-मादन पर अगद श्रेष्ठ हूसका रघुराई॥ वायुजको प्रभु भेज शीघ्र लोजे मगवाये॥ रात्रिमध्यमे मिले हेतु लक्ष्मण जिलवाये ॥३२६८॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

सुन रघुपति अतिशय हरषाई। जगतप्राण-सुतको पठवाई॥ गण्य वीर प्रणाम करायो॥ निरखि दशानन अति भय पायो॥२१६९॥ निज मातुलको तीन बुलाई॥ ताको कलप कलप समुझाई॥ लक्ष्मणको मैं मार खुपाये॥ मादन गन्ध पवनसुत धाये॥२१७०॥ भेषजको रजनी मो लाई॥ प्राण-लखणको दान कराई॥ताते आप छलो गिरिजाये॥ जाते मर्कं बडो मरजाये।२१७१॥ मामा पवन पुत्र को घाई॥ कीजे अर्द्धराज मम भाई॥ मैं तुमको उपदेश बतावैं॥ जाते विना समर मर जावैं॥२१७२॥ तपखि,का तुम वेग धराये॥ माया को फल कुटी बनाये॥ रहो गन्धमादन पर जाई॥ जहां गन्ध-काली हैं भाई॥२१७३॥ महावीर पहुचैं जब जाये॥ सेवा बोल अतीत कराये॥ न्हान हेतु सरवर पठवावैं॥ वहां गन्धकाली धर खावैं॥२१७४॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

सुनत दशासुतकी वचन कालनेमि बतलाय॥ जिस-मो सुत युझो करो काम एक नहि आय॥ काम एक नहि आय प्राणं मेरो भी जाई। राज तुमारा ताहि काज मेरै क्या आई। भणे गण्य अति भूप

काल मातुल तब आए ॥ ताते मम उपदेश आप चितमो नहि लाए ॥ ३२७५॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

कालनेमि तब कीनविचारा ॥ है दोऊदिश मृत्यु हमारा ॥ ताते राम दूत कर भाई ॥ निधन भलो मुक्तो मिल जाई ॥३२७६॥ यह विचार प्रस्थान कराये ॥ छिनमो यातु शैल पर आये ॥ माया को मुनिरूप धराई ॥ वैठा वकुल समाधि लगाई ॥३२७७॥ पहुचे महावीर जब आए ॥ निरखि तपोप्रवर माथ निवाए ॥ भयो विप्र आशीस कराई ॥ रहो अतीत गेह मम आई ॥३२७८॥ पाणि जोड़ हनुमन्त बतावें ॥ क्यों करि मे प्रभु वास करावें ॥ रावण शक्तीसिन चलाई ॥ मम गुरुको मारा मुनिराई ।३२७९॥ लेने भेषजको मे आवें ॥ वचन नाथ तब माथ रखावें ॥ भणे भाड तपस्वो कालपाई ॥ धर्म्मभ्रष्ट मेरो होजाई ॥३२८०॥ जो अतीतसेवा नहिं करते ॥ सो जन नर्ककुण्डमो पड़ते ॥ ताते मोरकहा यह कीजे ॥ कन्दमूल भोजन कर लीजे ॥ ३२८१ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

तात मोर आशीससे प्राण नाथ तब पाय ॥ अवसाहन करि तार्थमो कन्दमूल मम खाय ॥ कन्दमूल

मम खाय त्वरित बूटी लै आवो ॥ गुरुको दै करि प्राण विक्रमो नाम रखावो ॥ शुनत वचन हनुमन्त दौड़ सरवरमो जावैं ॥ करते मज्जन कूद गन्धकाली तव आवैं ॥ ३२८२ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

पकड़ा हनूमानको धाये ॥ उछल वीर वाहर चलि आये ॥ नक्र निरखि के मर्क डराई ॥ मारा लात गर्व्वके जाई ॥३२८३॥ जलहस्ती निज प्राण तजाए ॥ दिव्य रूप धरि विहस चलाए ॥ शुनो पवन सुत हाल हमारी ॥ जाते नक्रयोनि मै धारी ॥ ३२८४॥ मै गन्धर्ब्ब सुताथी भाई ॥ दक्षमुनीतन पाद लगाई ॥ अभिसम्पात मुनीवर दीना ॥ नक्र-योनि पावो मतिहीना ॥३२८५॥ मै द्विजके पदमो शिरनाए ॥ करि क्रन्दन भूरी रिझवाए ॥ हो प्रसन्न तब विप्र बतावैं ॥ नारायण नरगात धरावैं ॥३२८६॥ तिनके चरको दर्शन पाए ॥ अभिसम्पात तोर कटजाए ॥ सो मै पूर्ब्बरूप निज पाई ॥ तुमको भगडमुनो भुलवाई ॥३२८७॥ सावधान हो काज करावैं ॥ जाते कष्ट नाथ नहिं पावैं ॥ असभग कालीगन्ध सिधाई ॥ मनमोघोर यातु सो खाई ॥ ३२८८॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

देर भयो हनुमन्तको कीना नक्र अहार ॥ अब रावण ते जायके लेवैं जौन करार ॥ लेवैं जौन करार लङ्कको भाग कराई ॥ उत्तर दक्षिण और जौन पूरव दिश भाई ॥ ताको लेवैं आप भूपको पश्चिम देवैं ॥ सागरका उतपात तहाँ ताते नहि लेवैं ॥३२८९॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

अस विचार असुर हरषावैं ॥ तब ते पवनपुत्र उत आवैं ॥ पश्य यातु मनमो घबड़ाये ॥ राजहर्ष-सब गयो भुलाये ॥३२९०॥ स्वप्ने तुल्य राज्यको पाई ॥ मनमनमो बहु खीर पकाई ॥ हनूमान भाषे गर्ज्जाए ॥ भण्डतपस्वी मोहिं ठगाए ॥३२९१॥ दुष्ट तोहि यम-लोक पठाई ॥ करूं काज सतगुरुको जाई ॥ असुर कौणप निजरूप धराए ॥ पाणि वसू शिर वेद कराए ॥३२९२॥ भीमरूप गर्ज्जन करि भारी ॥ भिड़ा पवनसुतको दै गारी ॥ ताका मुण्ड वीर धरि पाए ॥ पटक शैलतन चूर्ण कराए ॥३२९३॥ चार पदको धरि उदर भराई ॥ मुष्टिप्रहार कीन गर्ज्जाई ॥ कालनेमि तनत्याग कराये ॥ फेका ताको वीर घुमाये ॥३२९४॥ गिरा यातु लङ्कामो जाई ॥

रावण पश्य त्रास अति पाई ॥ दिनकरको बोलै समझाए ॥ करो दिवा पूरबदिश जाए ॥३२९५॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

सुन रावणके वचनको भयो भानु कलपाय ॥ प्रहर पाछि रजनी गई क्यों करि प्रातकराय ॥ क्यों करि प्रातकराय यातु बोलें धमकाई ॥ चितमो मोर अनिष्ट धार यह ढोंग रचाई ॥ सुनत प्रभाकर वाक शीघ्र प्रस्थान कराए ॥ निरखि वीर हनुमन्त गन्धमादनते आए ॥३२९६॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

भयो अरुण पदमो शिरनाई ॥ अबते प्राण प्रभो नहिं पाई ॥ तबते प्रात आप नहि कीजे ॥ यह वर-दान मुझे प्रभु दीजै ॥ ३२९७ ॥ भयो अर्क कपिको समुझाई ॥ कोप करे रावण सुन भाई ॥ कहा वीर पुन मुण्ड निवाए ॥ सुनी निकट ईश्वर मम आए ॥ ३२९८ ॥ जाते कोप न भूप करावें ॥ सो मै युक्ति नाथ बतलावें ॥ हर्ष निकट भास्कर तब आए ॥ पकड़ वीर द्रुत बगल दबाए ॥ ३२९९ ॥ लछमण हेतु तपन हरषाई ॥ महाधृष्टि निज गुप्त कराई ॥ महा वीर आनन्द धराएं ॥ गन्धशैल मादन पुन आए ॥३३००॥ विशल्य करणि भेषजको खोजें ॥ चर गन्धर्व

आय तिहं सोजैं ॥ देगारी रोकैं धमकाई ॥ पकड़ ताहि द्रुत वीर खपाई ॥ ३३०१॥ खबर भूप हाहाने पाए ॥ छूहूकी लौना बुलवाए ॥ इतरेतर वह युक्ति कराई ॥ धरणेको निज फौज पठाई ॥ ३३०२ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

देख बलय हनुमानजी कीना क्रोध अपार ॥ चन्द्र चन्द्र शिरथामके पटका शैल मझार ॥ पटका शैल मझार कटक यमलोक सिधाए ॥ खबर पाय करि कोप युगल भूभृतसो आए ॥ तिसको भी हनुमन्त चक्रसी साथ खपावैं ॥ लगे खोजने अगध वीरताको नहि पावैं ॥ ३३०३ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

लौना गिरिको पाणि उठाई ॥ धरि मस्तक प्रस्थान कराई ॥ कछुक दूर पहुचे जब आए ॥ अहङ्कार मन मध्य कराए ॥३३०४॥ उणमो कालनेमिको घाई ॥ धरि पूषणको वगल दवाई ॥ कोट नयन गन्धर्व्व खपाए ॥ कीना लङ्का भस्म जलाए ॥ ३३०५ ॥ नाथ भरतका करै वड़ाई ॥ देखूंगा तिनका बल जाई ॥ असभण नन्दीग्राम सिधाए ॥ निरख भरत अति कोप कराए ॥ ३३०६ ॥ मारा शरको चाप लगाई ॥ गिरे वीर मूर्च्छित हो भाई ॥ राम नाम भण शोर

मचाये ॥ शुनत भरत शवूघण आये ॥३३०७॥ पूछन लगे भरत कलपाई ॥ को तुम तात कहांते आई ॥ भखे पवन सुत कोप कराये ॥ रामचन्द्र मुझको पठवाये ॥ ३३०८ ॥ सीता रावण हरण कराई ॥ ताते सिन्धु बांध रघुराई ॥ समर करें लङ्कामो जाए ॥ रावण शक्तीशेल चलाए ॥ ३३०९ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

लक्ष्मणको मारा प्रभो निरख विकल रघुनाथ ॥ औषध कारण शैलको ले जावैं धरि माथ ॥ ले जावैं धरि माथ अगट रजनीमो पाई ॥ जीवैं लक्ष्मण नाथ प्रात होमेते भाई ॥ तजै वीर निज प्राण शोक रघुनाथ कराये ॥ डूबैं सिन्धु मझार नाथ कटक तब जाये ॥ ३३१० ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

बाण मार मुझको प्रभु घाए ॥ वैर भाव निज प्रगट कराए ॥ मरैं राम लक्ष्मण तड़फाई ॥ सुखसे राज करौ पच भाई ॥३३११॥ नाथ प्रशंसा नित्य करावैं ॥ परम भक्त मम भरत बतावैं ॥ नित मङ्गल तव नाथ मनाये ॥ सो तव भक्ति पथ्य मैं पाये ॥३३१२॥ शुनत वचन अतिशय कलपाई ॥ क्रन्दन करण लगे पच भाई ॥ गिरे भूमि मूर्च्छित हो आये ॥ निरखि वशिष्ठ

मुनी घबड़ाये ॥३३१३॥ भरत कहपू हन होश कगाई ॥ भये युग्म भ्राता कलपाई ॥ हमरे जियत प्रभो दुख पाए ॥ मारौं लङ्क अन्तमें जाए ॥३३१४॥ भये वशिष्ठ मुनी समुझाई ॥ जो निदेश कीना रघुराई ॥ सो तुम तात करौ चितलाए ॥ देहु पवन सुतको पठवाए ॥३३१५॥ भये भरत कपिको कलपाई ॥ मम अपराध क्षमा कर भाई ॥ ले धावन लङ्कापुर जाए ॥ लक्ष्मणका द्रुत देहु जिलाए ॥ ३३१६ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

शुनत भरतके वचनको भये वीर शिरनाय ॥ क्यों करि मै जावैं प्रभो मुझसे उठा न जाय ॥ मुझसे उठा न जाय भरत भाषे समुझाई ॥ मम शर पर लै शैल आप बैठो झट धाई ॥ बिना परिश्रम तोहि ताति मे देहु पठाए ॥ करौ प्रभोका काज मोर उपकार क्षमाए ॥३३१७॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

शुनत वीर अति गर्व कराये ॥ ले पर्व्वत निज गात बढ़ाये ॥ तिष्टे कूद बाण पर जाई ॥ भरत उठा शर तान चलाई ॥३३१८॥ चला रोप विद्युत सम धाये ॥ लौटे पवनपुत्र हरषाये ॥ भये भरत पदमो शिरनाईं ॥ प्रभो पश्य विक्रम तव पाईं ॥ ३३१९ ॥

नित रघुपति बल तोर बखानै ॥ मै पामर चितमो नहि आनै ॥ तिहं कारण यह ढोंग रचाई ॥ देखा तव विक्रम रघुराई ॥ ३३२० ॥ असभण वीर प्रणाम कराये ॥ लै भूधर लङ्कापुर आये ॥ भणौ प्रभो पदमो शिरनाईं ॥ भेषजको देखन नहि पाईं ॥ ३३२१ ॥ ताते मै गिरिवर लै आये ॥ खोजै वैद्य आदरको जाये ॥ तब रघुनाथ सुषेण बुलाई ॥ औषध खोजन हेतु पठाई ॥३३२१॥ अन्वेषण करि भेषज लाये ॥ पीस जड़ी तनलेप लगाये ॥ अगद सुगन्धि घ्र णमो जाईं ॥ लक्ष्मण प्राण दानको पाईं ॥३३२३॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

हर्ष प्रभो तव लखनको सीमा गोद उठाय ॥ शिर चुम्बन करि अनुजको आशीर्व्वाद कराय ॥ आशीर्व्वाद कराय मर्कं भालुक हरषाये ॥ रामचन्द्र जय बोल नभमो शोर मचाये ॥ चढ़ि रावनकी मध्य मर्कं भालुक पाण खाईं ॥ जामवन्त तब भणौ प्रभ पदमो शिरनाईं ॥३३२४॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

कारजसिद्ध भयो रघुराई ॥ अब पर्व्वतको देहु पठाई ॥ मारुत सुतको नाथ बुलाए ॥ दे रावन राखन पठवाए ॥३३२५॥ निरख लङ्कपति कोप

कराई ॥ दीना सिन्धु वीर पठवाई ॥ धोष्ठवक्र बांकामुख धाये ॥ तलभङ्ग चौर उल्कामुख धाये ॥ ३३२६॥ दर्शनघोर सिंहमुख भाई ॥ नयन प्रचण्ड सप्त भट धाई ॥ घेर वीरको गालि चलाए ॥ गर्ज्ज हनू निज पूंछ वढ़ाए ॥३३२७॥ सप्तवीर गलमो लपटाई ॥ मरैं यातु फांसी गलपाई ॥ गात लघू तल भङ्ग धराये ॥ निकस पूंछते प्राण वचाये ॥३३२८॥ खबर भयी रावणको जाई ॥ शुन भूभुज भूरीभय पाई ॥ महावीर रावन लै धाये ॥ राखा वहां जहां ते लाये ॥३३२९॥ हनूमान तब कीन विचारा ॥ मै गन्धर्ब्ब कोट वै मारा ॥ तिन सबको अव देहुं जिलाए ॥ अस विचार भेषज वह लाए ॥३३३०॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

पीस शैल पर अगदको सबको लेपन कीन ॥ कोट-चतु गन्धर्व्वको प्राणदान तब दीन ॥ प्राण दान तब दीन वीर प्रस्थान कराये ॥ क्षणमो लङ्कामध्य प्रभो को माथ निवाये ॥ कच्छदेशमो पद्म प्रभाकरकी प्रभु पाई ॥ पिता आनु निज धौम्र प्रभो तिनको छुटवाई ॥३३३१॥

॥ कवित ॥

मुक्त भये सूर्य्य अब गगणमो धाए तब भयो कर-

जोड़ प्रभो स्तुतीको अनायके ॥ प्रानइअन मोर नाथ कोना अनुग्रह साथ भृत्यको बगन निज तेजको सुकायके ॥ विहस भगत हंस यातु वंस अरि ध्वंस अमर बन्धन प्रभो कोन मुक्त आयके ॥ बानू नन्हा सिंहसुत करन गोविन्द नुन श्रीगुरू पूरण ब्रह्म नानक मनायके ॥३३३२॥

अथ महीरावण वधः।

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

अधो भूमिके मध्यमो रावण पुत्र रहाय ॥ नाम महीरावण रह्यो ताको भूप बुनाय ॥ ताको भूप बुनाय आपनो कष्ट जनाई ॥ भयो पुत्र समुझाय जनक पदमो शिरनाई ॥ प्रथमतः यह हाल पिता जो मोहिं बतावैं ॥ तो काहे निज वंस ध्वंस देखन को पावैं ॥ ३३३३ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

सम डरते सुनके सन रङ्का ॥ कोवत नाश होय मम लङ्का ॥ ऐसा तात शुना नहि कतहीं ॥ जाकी खांयं वही धरि हतहीं ॥३३३४॥ रण क्या

कहूं भक्त ते आये ॥ रच माया ले जाऊं चुराये ॥ इन्द्र शचीगण आमर ल्यावें ॥ आको भगै ताहि पितु लावें ॥३३३५॥ नर वानर तो खाद्य हमारी ॥ इनको ठगूं काम क्या भारी ॥ राम लखणको तात चुराये ॥ कालीको देवें बलि जाये ॥३३३६॥ शुनत दशानन अति हरषाई ॥ लै गोदी चुम्बन करि भाई ॥ लच्च लच्च आशीस कराये ॥ निरखि विभीषण शन्त डराये ॥३३३७॥ भणै राम लच्मणको जाई ॥ सङ्कट विकट अद्य रघुराई ॥ मन्दोदरी प्रसव सुत कीना ॥ नाम महीरावण रखि दीना ॥३३३८॥ तप कठोर वह दुष्ट कराए ॥ भूभुजको वरदान शुनाए ॥ जनक प्रसूको तुष्ट कराई ॥ राज रसातलका वह पाई ॥३३३९॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

तन्त्र योग ते चण्डिका कीना वशमो नाथ ॥ सो लङ्कामो आयके तिष्ठ जनकके साथ ॥ तिष्ठ जनकके साथ नाथ वह युक्ति करावें ॥ अद्य रात्रिको आय दुष्ट हरके ले जावें ॥ शुनत वाक रघुनाथ शोक सागरमो आये ॥ जामवन्त करजोड़ प्रभोको युक्ति बताये ॥३३४०॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

देहु गगणमो चक्र पठाई ॥ और गरुड़को लेहु बुलाई ॥ पवनपुत्र निज पूंछ बढ़ावैं ॥ ताते गढ़-निर्म्माण करावैं ॥३३४१॥ ता मे कोट मंदिर रचाई ॥ करी निवास रात्रिको जाई ॥ चौकी शन्त विभीषण देवें ॥ मायाचीन्ह घातु कोलेवैं ॥३३४२॥ द्वारी करो गरुड़को लाई ॥ क्या करि सके घातु रघुराई ॥ सुनि युक्ती रघुपति हरषाये ॥ महावीर-निज नेज बढ़ाये ॥३३४३॥ गढ़ निर्माण कीन श्रम भाई ॥ जामे रहै वलय सब जाई ॥ सुग्रीव गोद प्रभुको ले आये ॥ लक्ष्मणको अङ्गद ले धाये ॥३३४४॥ गढमो युगल भ्रात हरषाई ॥ तिष्ठे गोद युग्मके जाई ॥ अगल वगल सब वलय रहाये ॥ चक्र गगणमो दीन पठाये ॥३३४५॥ काश्यप सुतको लीन वुलाई ॥ गढ़के द्वारदीन वैठाई ॥ शन्त विभीषण नाथ बुलाए ॥ पहिरा कारणदीन पठाए ॥३३४६॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

गढ़के चारो ओरमे देवें चौकी जाय ॥ अर्द्ध-रात्रि वीती जबै तब रावण सुत आय ॥ तब रावण सुत आय गगण मारग दे भाई ॥ चक्र सुदर्शन पश्य दुष्ट भागत भय पाई ॥ दशरथ को धरि रूप गरुड़के

निकट सिधाये ॥ पवन पुत्र को भणे पुत्र मेरे पख
पाये ॥३३४७॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

तिनसे भेट करूं मैं जाई ॥ धार छोड़ दीजे कपिराई ॥ भणे गन्धर्व गजशिर नाये ॥ कहो विभीषणसे प्रभु आये ॥३३४८॥ सुनत यातु प्रस्थान कराई ॥ पहुंचे शान्त विभीषण आई ॥ समाचार पवनज सब गाए ॥ महाराज दशरथ सुत आए ॥३३४९॥ मैं तिनको तव पास पठाहीं ॥ भयो भेंट भुभुज यानाहीं ॥ सुनत विभीषण शान्त बतावैं ॥ यद्यपि जनक श्वसन तव भवैं ॥३३५०॥ तिनका भी विश्वास न कीजे ॥ मारग छोड़ कधी नहिं दीजे ॥ पसभव शान्त पयान कराये ॥ भरत होय रावण सुत आये ॥ ३३५१ ॥ कहा मभीरजको समुझाई ॥ ज्येष्ठ पवर शित हैं मम भाई ॥ तिनसे भेंट करूं मैं जाए ॥ भणे अनिल सुत माथ निवाए ॥ ३३५२ ॥ कहो विभीषण का प्रभु आई ॥ तिनसे हाल मिले रघुराई ॥ सुनि अनप प्रस्थान कराये ॥ पहुंचे शान्त विभीषण आये ॥ ३३५३ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

पश्य विभीषणको भणे महावीर हरषाय ॥

भंटनको धाये भरत मे तिनको भुनवाय ॥ मै तिन को भुनवाय आपके पास पठाए ॥ भयो भेंट या नहीं भूप वाको सच चाए ॥ भये विभीषण शन्त जगत प्राणजको भाई ॥ यहो जनक तब आय करो विश्रम न भाई ॥ ३३५४ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

असभण शन्त विभीषण धाये ॥ जनक होय रावण सुत आए ॥ भये पाशुगजको समुझाई ॥ मम द्रमाद लक्ष्मण रघुराई ॥ ३३५५ ॥ बहु बासर देखन नहि पाये ॥ देहु वीर द्रुत भेंट कराये ॥ मातरिपुजनज भये थिर नाई ॥ कहो विभीषणको प्रभु जाई ॥ ३३ ५६ ॥ यातुधान प्रस्थान कराये ॥ पहुचे शन्त विभीषण आये ॥ हृषद्रुजज सब हाल जनाई ॥ आये रहे जनक सुन भाई ॥ ३३५७ ॥ मे तिनको तब पास पठावें ॥ भयो भेंट या नाहि बतावें ॥ कहा विभीषण शन्त बुझायं ॥ यदि तब जनक प्रसन्न आयं ॥ ३३५८ ॥ उनका भी पाश्वास न कीजे ॥ मारग छोड़ कधीनहि दीजे ॥ जो धावें मम पास पठावें ॥ असभण शन्त विभीषण जावें ॥ ३३५९ ॥ य तु विभीषणरूप धराई ॥ भये स्पर्शनजको द्रुत

भाई ॥ अब राखि है काल समानो ॥ रावण महो-
महा ठग जानो ॥ ३३६० ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

दशरथ आदिककुलकी धरि रावण सुत आय ॥
जिनसे तात न भूलि हो यादू दुष्ट कराय ॥ यादू दुष्ट
कराय बुद्धिको भ्रष्ट कराई ॥ करै आपनो काज सत्य
मै तोहि बताई ॥ गलमो गण्डाजाय नाथके देहु
बंधाये ॥ याते यादू मन्त्र प्रभोको लगे न जाये॥३३६१॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

सुनत वचन हनुमन्त बतावैं ॥ गण्डा बांधि वेग
चलि आवैं ॥ हर्ष महीरावण गढ़ आये ॥ महामन्त्र
पढ़ि छार उड़ाये ॥ ३३६२ ॥ कटक सहित लक्ष्मण
रघुराई ॥ भये अचेत मृत्यु सम भाई ॥ महामन्त्र पुन
पाठ कराये ॥ ताते चन्द्र सुकुल बनाये ॥ ३३६३ ॥
लेस्काध लक्ष्मण रघुराई ॥ रावण सुत निज भवन
सिधाई ॥ पहुंचे सन्त विभीषण आए ॥ निरख
प्रभञ्जन सुत घबड़ाए ॥३३६४॥ पूछैं अतिशय कोप
कराई ॥ कितसे तुम निकले हो भाई ॥ मै तुमरो
कछु मन्त्र न पावैं ॥ कपट प्रीत प्रभु साथ करावैं
॥३३६५॥ सुनत विभीषण सन्त डराई ॥ पूछन लगे
हाल क्या भाई ॥ भये प्रवसनसुत कोपकराये ॥ गढ़

गाडाबांभन तुम धाये ॥३३६६॥ अब अभंक मम बात करायो ॥ याज्ञा उचित दगड नृपपायो ॥ शुनके शन्त विचार कराये ॥ छन कीना रावण सुत आये ३३६७॥

॥ कुगडलिया छन्द ॥

देव क्रोध हनुमन्तका भगो विभीषण शन्त ॥ मै प्रभुको दै मन्त्रणा कीना सबका अन्त ॥ कीनासबका अन्त मुझे कपटी बतलाये ॥ मम स्वरूपको धार तात रावणसुत आये ॥ देखो गड़मो जाय नाथको हरण कराई ॥ शुनत बोर घबड़ाय युग्म प्रस्थान कराई ॥ ३३६८ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

गड़मो प्रभु देखन नहि पाये ॥ रोवैं हाहाकार कराये ॥ लोटैं शन्त भूमि तड़फाई ॥ लागे बल क्रन्दन शुन भाई ॥३३६९॥ रोवैं ऋक्ष मर्क कलपाये ॥ निधन हेतु सागर तट आये ॥ जामवन्त सबको समुझावैं ॥ क्यों नाहक बल प्राण तजावैं ॥३३७०॥ कौं ईश्वरको मार सकाये ॥ मिलैं नाथ झट करौ उपाये ॥ भजो अनिल पुत्रको भाई ॥ खोजैं लोक नयनमो जाई ॥३३७१॥ यद्यपि प्रभो मिलैं नहिं पाउ ॥ तब निज प्राण तजो सब जाय ॥ शुनत

युक्ति सुग्रीव बतलावैं ॥ खोज समीरज झटित करावैं ॥३३७२॥ प्रथम सुरङ्ग राह टैसाई ॥ बली लोक सब तत्त्व कराई ॥ वहां यदपि प्रभुको नहि पायो ॥ स्वर्गमृत्यु सब खोज करायो ॥३३७३॥ हनुमन्त बोलें शिरनाई ॥ नारायण जो मिलैं न भाई ॥ लङ्का सहित सिन्धुमो जाए ॥ पतन करूं निज गात डुबाए ॥३३७४॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

पसभण खोजनको चले महावीर हनुमन्त ॥ अधो भूमिके बीचमे आ पहुचे वह शन्त ॥ जा पहुंचे वह शन्त बली सद्मनको पाये ॥ वहां खूब करि तत्त्व कपिलमुनि भवन सिधाये ॥ विप्रपुरीको खोज नाग मन्दरमा आई ॥ कह्या तत्त्व युगयोर वीर प्रभुको नाहिं पाई ॥३३७५॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

कितनो तीर्थ यती मुनि पाई ॥ ख्याती भगवति गङ्गामाई ॥ रावण महीपुरीमो धाये ॥ ज्वरामृत्यु देखन नहि पाये ॥३३७६॥ सूक्ष्मरूप हनुमन्त धराई ॥ बैठि महोदर पर जाई ॥ वनभरमे नारी सब आवैं ॥ निरखि वीर मनमो हरषावैं ॥३३७७॥ आपुसमो गण नारि बलाई ॥ ऐसाकर्क दृश्य नहिं

पाई ॥ भयो ब्रह्म नारी भू आये ॥ तप कठोर मम भूप कराये ॥३३७८॥ तुष्ट होय कालीजी आवैं ॥ लेहु भूप वर मात अलावैं ॥ भयो महीप चरण शिरनाई ॥ अमर करौ मुझको जगमाई ॥ ३३७६ ॥ भयो चण्डिकामात हंसाये ॥ जीतो लोक चतु तुम जाये ॥ यक्ष भुजङ्ग यातु सुर भाई ॥ तुमको मार सकैं नहिं आई ॥ ३३८० ॥ सुन वरदान भूप हरषाए ॥ भयो मातको गर्भ कराये ॥ नर वानर है भक्ष्य हमारा ॥ इनका क्या वरदान तुमारा ॥३३८१॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

सुनत वचन देवी भयो सुनो यातु चितलाय ॥ जाहि खाद्य पामर कहा सो सम्रन तव आय ॥ सो सम्रन तव आय छाग सम तोहि खवावैं ॥ भक्ष्य बोल क्या यातु गर्भ मन माहि करावैं ॥ अस दै करि जग मात शाप प्रस्थान कराई ॥ पुन करिके तप घोर भूप देवीको लाई ॥ ३३८२ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

सो कल भूप मृत्यु निज लाए ॥ नर सुन्दर पक्ष कैद कराए ॥ अद्यमको पहुंचा यह आई ॥ होन-हार कछु भाष न जाई ॥३३८३॥ असभयो ब्रह्मा भवन सिधावैं ॥ अल भरको दासीगण आवैं ॥ तिनसे नगर

नारि वतलाई॥ क्या उत्सव भूभुज गृह माई॥३३८४॥ सुनि हाशोगण ताहि वतावैं॥ अद्य वली नर भूप करावैं॥ पूजें दुष्ट कालिका माई॥ तिहं कारण उत्सव यह भाई॥३३८५॥ सुनत ग्राम नागो हर्षावें॥ तब पर महावीर सुनि पावैं॥ रूप मक्षिका तुल्य बनाई॥ पहुंचे वहां जहां रघुराई॥ ३३८६ ॥ मृत्यु तुल्य प्रभुको लखि पाये॥ चरण पकड़ द्रुत चेत कराये॥ भयो राम लक्ष्मण घवड़ायं॥ कहां कटक मम मित्र सिधायं॥३३८७॥ भयो वीर पदमो शिर नाये॥ नाथ महीरावण हरलाये॥ लङ्कामो सब वलय रखाई॥ पहुंचे प्रभो निकट तव आई॥ ३३८८॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

सुनि रघुपति निज हरणको भयो ढोंग करि भाय॥ पास सरासन है नहीं क्यों करि प्राण रहाय॥ क्यों करि प्राण रहाय वीर भाखैं सिरनाई॥ तव सेवक रघुनाथ यातु यम लोल पठाई॥ जगदम्बा महराज यातु गृह वास करावैं॥ पूंछि वात दो चार प्रभो तिनसे मैं आवैं॥३३८९॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

असभणि वीर पयान कराए॥ पहुंचे कालीके

गृह आए ॥ पूछन लगे चरण शिरनाई ॥ तब सेवक
प्रभुको हर लाई ॥३३९०॥ देवै वलो मात तब पागी ॥
क्या मरजो तब है वड़ भागे ॥ सर्व्वाणी बोलैं मुश-
काई ॥ शुद्ध भयो सद्मन मम भाई ॥ ३३९१ ॥ निज
कलुष मम भृत्य कराए ॥ मोक्ष कौन ईश्वर गृह
आए ॥ बोलौ तात रामको जायं ॥ अर्ज्जुनको मुझको
नृप आयं ॥ ३३९२ ॥ भये प्रणाम करौ अब आई ॥
प्रभु तब कहैं कवन विधि भाई ॥ करि प्रणाम
मुझको सिखलावैं ॥ तब मै भूप प्रणाम करावैं
॥३३९३॥ शुनत यातु मनमो हरषाए ॥ करि प्रणाम
प्रभुको दिखलाए ॥ तब तुम खड्ग मोर ले भाई ॥
करौ मुण्ड छेदंन द्रुत धाई ॥३३९४॥ शुनिके युक्तिवीर
हरषाए ॥ करि प्रणाम प्रस्थान कराए ॥ भये राम
लक्ष्मणको जाई ॥ युक्ति मात यह नाथ वताई ॥३३९५॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

जब प्रभुको भूभुज भये करौ दण्डवत आय ॥
तब रघुपति ताको कहैं मुझको देहु वताय ॥ मुझ-
को देहु वताय यातु प्रणिपात करावैं ॥ ले द्रुत मेरो
खड्ग आप ताका शिरघावैं ॥ यह युक्ती भक्त मात
नाथ दीना वतलाई ॥ शुनि रघुपति निज दास
नाशकी मा हरषाई ॥३३९६॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

असभग वीर पयान करावैं ॥ पुन गोगी मन्दिर मो आवैं ॥ मात पृष्ठमो रहे लुकाये ॥ उत महीप बाजा बज वाये ॥३३९७॥ लै रघुपतिको हर्ष बढ़ाई ॥ नृत्य राग करि स्नान कराई ॥ पहुचे देवीके गृह आये ॥ गन्धपुष्पनैवेद्य चढ़ाये ॥३३९८॥ बलीदान का कौन तयारी ॥ भयो त्रास सुरको मन भारी ॥ राम लक्ष्मणको धरि घावैं ॥ क्यों करि कष्ट दमन को जावैं ॥३३९९॥ स्वारथ लागि अमर घवड़ाई ॥ पूछैं ब्रह्माके गृह जाई ॥ क्यों करि नाथ त्राण अब पावैं ॥ दुष्टयातु बलिदान करावैं ॥३४००॥ शुनि विरिञ्चि बोलैं मुसकाई ॥ क्या करि सके यातु वह भाई ॥ नारायणको मार सकाये ॥ अस को वीर विश्वमो आये ॥३४०१॥ पूर्व्व कथा मै लेख शुनावैं ॥ जाते भ्रान्ति तुमन की जावैं ॥ शुक्रधनू गन्धर्व्व रहाए ॥ विष्णुलोक नित गाण कराए ॥३४०२॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

वासरभूको हाल है शुनो विबुध चित लाय ॥ हरिके दर्शन आयके अष्टावक्र कराय ॥ अष्टावक्र कराय पश्य गन्धर्व्व हसाए ॥ भणे विप्रके निकट नाथ तप घोर कराए । ताते सुन्दरगात आप पायो

मुनिराई ॥ सुन द्विज पुङ्गव भणे य तु होवो तुम जाई ॥३४०३॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

सुन विद्याधर शाप डराए ॥ करि क्रन्दन मुनिको रिझवाए ॥ भणे विप्र तिनको समुझाई ॥ वाक हमारो पलट न भाई ॥३४०४॥ तप करिके दुर्गा गृह लावैं ॥ राज रसातल मध्य करावैं ॥ नारायण नरगात धराए ॥ यातुवंसको ध्वंस कराए ॥३४०५॥ तिनको हर सज्जन लै आयो ॥ प्रभु सेवक कर प्राण नशायो ॥ शापमुक्त तेरो हो जाई ॥ करो गोलोक वास पुन पाई ॥३४०६॥ असभण मुनिवर भवन सिधाए ॥ तब विद्याधर प्राण तजाए ॥ रावणके गृह जन्म धरायो ॥ राज रसातलको वह पायो ॥३४०७॥ महावीर अब ताहि खपाई ॥ मुक्त करैं ईश्वरको भाई ॥ सुनि निर्जरगण अति हरषाए ॥ चले वली सज्जनको धाए ॥३४०८॥ चढ़ि विमान देखे सुर जाई ॥ राम लखणको यातु बुलाई ॥ कहो दुष्ट प्रभुसो धमकाए ॥ करो प्रणाम मातको जाए ॥३४०९॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

सुनत वचन रघुपति भणे सुनो भूप चित लाय ॥

में प्रणाम जानो नहीं मुझको देहु बताय ॥ मुझको देहु बताय यातु मनमो हरषाए ॥ अष्ट अङ्गले लोट मातको माथ निवाए ॥ ले देवीका खड्ग कूद हनुमन्त चलाई ॥ काट मुण्ड ततकाल वीर पञ्च टूक कराई ॥३४१०॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

देवी हाहाकार करावैं ॥ राम लछमण सेवक लावैं ॥ तब कारण निज भृत्य खपाई ॥ राखा अपयश विश्वमो भाई ॥ ३४११ ॥ भणों राम लछमण शिर नाए ॥ मात प्रसाद प्राण मै पाए ॥ निरख देवीकस मङ्गल गावैं ॥ शुनि राणी अति कोप करावैं ॥३४१२॥ भणै दुष्ट मनमो गर्जाई ॥ प्रथम मातको देह छुटाई ॥ पुन मर वानरको मै जाए ॥ देहुं मार यमलोक पठाए ॥३४१३॥ असविचारि निज कटक बुलाई ॥ प्रधन हेतु रण भूमि सिधाई ॥ पश्य प्रभञ्जन पुत्र रिसाये ॥ मार मार भण शोर मचाये ॥ ३४१४ ॥ धरि धरि बल यम लोक पठाई ॥ तब राणी शर चाप लगाई ॥ मारा महावीरको धाये ॥ बाण खाय हनुमन्त रिसाये ॥३४१५॥ मारा लात उदरमो जाई ॥ तब राणी सुत प्रसव कराई ॥ महाभयङ्कर पुत्र लखाये ॥ मुण्ड वेद वसु पाणि रहाये ॥३४१६॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

पुत्र पश्च राखो भयो सुनो तात मन लाय ॥ जनक रूपको जायकै दीजै त्वरित खपाय ॥ दीजै त्वरित खपाय पुत्र प्रस्थान करायो ॥ पञ्चानन सम गर्ज्ज पवन सुतसे बतलायो ॥ मार हमारे जनकको अब मनमें गर्भाये ॥ पश्च भुजा बल मार दुष्ट रणमें द्रुत धाये ॥ ३४१७ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

पश्च विरञ्च प्रभो मुशकावैं ॥ भयो कतौं अस देख न पावे ॥ भयो भूमिष्ट पुत्र यह अवही ॥ करे समर देखा नहिं कबही ॥३४१८॥ पुत्र महीरावणको आये ॥ नाम मही रावण रखवाये ॥ कपिको मुष्टिप्रहार कराई ॥ महावीर धरणे नहिं पाई ॥ ३४१९ ॥ वार वार सुत मार सिधायं ॥ ताते हनूमान घबड़ायं ॥ धरो वीर पर्भंजको धाई ॥ सटक पुत्र प्रस्थान कराई ॥३४२०॥ गर्भ रुधिर तनमें है सारे ॥ ताते सटक जाय बहु वारे ॥ महावीर निज जनक वुलायो ॥ तिनसे गरदाको झड़वायो ॥३४२१॥ लगो धूलि सुतके तन जाई ॥ यामा कूद पवनसुत धाई ॥ पटक भेजपर प्राण नशाये ॥ भाग्यो कटक सर्ब्ब भय पाये ॥३४२२॥ निरख अमर मङ्गल सब गावैं ॥

निज निज गेह गये हरषाई ॥ देवी भयी रामको आये ॥ को ध्येवा दूत मोर कराये । ३४२२॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

राम भये हनुमन्तको लेहु मातको भ त ॥ मृत्यु लोककी मध्यमों करो स्थापना मात ॥ करो स्थापना मात वीर प्रतिबिम्ब उठाये ॥ जम्बूद्वीप मझार राख लङ्कामो आये ॥ भयो खालसासिंह ऋच्छमर्कट हरषाई ॥ मिले प्रभोसे धाय पुत्र जननी जस पाई ॥३४२४॥

अथ रावण का तृतीयबार युद्धमें गमन ।

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

पुत्र मरणको श्रवण करि लङ्केश्वर घवड़ाय ॥ प्रश्न हेतु निज कटकको लोना शीघ्र बुलाय ॥ लीना शीघ्र बुलाय मन्दोदरि नार बुलाई ॥ कोबिदहो करि कन्त बुद्धि क्यों भ्रष्ट कराई ॥ विश्वपती रघुपती वैर तिनसे पतिकीना । निज करते निज वंस ध्वंस भूभुज करि दीना ॥३४२५॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

अब सीताको कन्त फिराये ॥ लेहु आपनो प्राण बचाये ॥ मिहु यतीश्वर मुनि बतलावैं ॥ रमणी कौ शुभ वाक्य सुनावैं ॥३४२६॥ तिनको पण्डित याद्य कराई ॥ लेवैं अपनो काज बनाई ॥ सुन लङ्केश कहा मुसकाये ॥ मूर्ख जान मुझको शिखलाये ॥३४२७॥ सुनत वचन राणी शरमाई ॥ निरख भूप पुन ताहि बताई ॥ जाको यती सती नहिं पावैं ॥ सो मुझको नित याद करावैं ॥३४२८॥ याग होम करि जाहि न पाये ॥ सो मेरे शरको नित खाये ॥ मम सम भागवन्त नहिं कोई ॥ भिड़े परमगुरु ईश्वर होई ॥३४२९॥ प्रभु आरती निज गात नशाये ॥ कगौं गोलोक धाम मै जाये ॥ असमाण भार्य्याको समुझायो ॥ चढ़ि स्यन्दन रणभूमि सिधायो ॥३४३०॥ भिड़ा द्वार पश्चिमसो आई ॥ जहां राम लक्ष्मण पख भाई ॥ मर मार भण शोर मचए ॥ भिड़े राम-लक्ष्मण द्रुत धाए ॥२४३१॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

चढ़ि स्यन्दन रावण लड़े रघुपति पैदल आय ॥ देख इन्द्र निज यानको दीना शीघ्र पठाय ॥ दीना शीघ्र पठाय प्रभो चढ़िकन दर धाए ॥ दिव्य अरासम

पश्य नाथ मनमो हरषाए ॥ भणो सारथी दौड़ नाथ पदमो शिरनाई ॥ तब कारण शरचाप प्रभो सुर-कन्त पठाई ॥३४३२॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

शुनके रामचन्द्र हरषाये ॥ भणे मातलीको समुझाये ॥ चलो यान सन्मुख लै भाई ॥ देवैं लेख चपु मे घाई ॥३४३३॥ शुन यन्तृ सन्मुख रथ लाए ॥ निरखि यातु पति कोप कराए ॥ भणे मातलीको धमकाई ॥ मार रामलक्ष्मणको भाई ॥३४३४॥ एक एक मे लेख खवावैं ॥ तब याके फल को सुर पावैं ॥ इन्द्र सूत शुनके भय पाये ॥ मारा बाण राम गर्ज्जाये ॥३४३५॥ लगा रोप रावणको जाई ॥ गिरा भूप मूर्च्छित हो भाई ॥ छण भू बादचेत पुन पाये ॥ मारा सर्पबाण गर्ज्जाये ॥३४३६॥ गरुड़ बाण रघुनाथ चलाई ॥ दीना ताका नाग नशाई ॥ वज्र अस्त्र पुन यातु चलाये ॥ ताको पश्य नाथ घबड़ाये ॥ ३४३७ ॥ भणे मातली सूत बुझाई ॥ कौन अजिस्मग इन्द्र पठाई ॥ ताको रघुपति तूर्ण चलाये ॥ दीजे वज्र अस्त्र को घाये ॥ ३४३८ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

शुनत वचन सर्व्वेष्टका असो नाथ चलाय ॥

वज्र अस्त्रको काटके अपनो प्राण बचाय ॥ अपनो प्राण बचाय प्रभो पुनबाण चलाये ॥ दशकन्धर भट मार रोपसो दीन खपाये ॥ असंख्यबार इस तीर बीर यस बाण चलाई ॥ जर जर कीना गात आपको सभी लड़ाई ॥ ३४३९ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

वज्र अस्त्र जब नाथ चलाए ॥ ताको भूप न काट सकाये ॥ लगा विशिख रावणको जाई ॥ गिरा भूप मूर्छित हो भाई ॥ ३४४० ॥ लखि प्राजिहले रथ भागा ॥ दगड बाद लङ्कापति जागा ॥ समर भट को देख रिसाई ॥ गर्जे नियन्तृको धमकाई ॥३४४१॥ रणते भाग दुष्ट क्यों आए ॥ नष्ट हमारो नाम कराए ॥ नरते घूस भ्रष्ट तूं खाई ॥ भागा समर छोड़ ववराई ॥३४४२॥ कहा जब पदमो शिर नाये ॥ मूर्छा पश्च भूप तब लाये ॥ लड़ो कान्त मानुषते जाई ॥ असमथ दीन अताङ्ग चलाई ॥ ३४४३ ॥ पहुचे संख्य भूमिमो आए ॥ पश्च नाथ निज यान चलाए ॥ भयो परस्पर खूब लड़ाई ॥ को कवि सके भाषसो भाई ॥ ३४४४ ॥ भूप गदा पढ़ि मन्त्र चलाए ॥ अर्धचन्द्र शरसे प्रभु घाए ॥ और गदा पुन यातु चलायो ॥ प्रभू पिशाच अस्त्रते घायो ॥ ३४४५ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

रुद्र मन्त्रको पाठ करि भूभुज शूल चलाय ॥ भौममन्त्र पढ़ि बाण लै दौना राम खपाय ॥ दौना राम खपाय यातु पुन बाण चलाए ॥ ताको लक्ष्मण राम तूर्ण शरते निज घाए ॥ निश बासर दुशतौर समर दिन निम्भु कराई ॥ स्वर्ग मृत्यु पाताल त्रास रणको लखि पाई ॥३४४६ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

कहं लग प्रभुका प्रधन लिखावैं ॥ लिखत लिखत शारद थकि जावैं ॥ बाण युग्म असवीर चलाए ॥ अन्धकार सब सृष्टि कराए ॥३४४७॥ वेड़ा पाक नाम शर भाई ॥ मारा रामचन्द्र गर्व्वाई ॥ लगा कालम्ब भूपको जाये ॥ ताते रावण तेज हराये ॥ ३४४८ ॥ धर्म्म अस्त्र पुन नाथ चलाई ॥ ताते भूप गिरो घबड़ाई ॥ मन मनमो भुनता हरषावैं ॥ अब प्रभुशे कर प्राण तजावैं ॥ ३४३९ ॥ अन्त समय पहुच्यो मम आई ॥ करौं नुती रघुपतिको जाई ॥ तुष्ट होय जो नाथ न मारैं ॥ बाजी जीत फेर मे हारैं ॥३४५०॥ धर्मविचार बोला धमकाई ॥ खरदूषण सुभको नहिं पाई ॥ मै लङ्केश त्रिभूवन जाने ॥ नर वानर भोजन निज माने ॥ ३४५१ ॥ भाग समरते प्राण बचाओ ॥

मुझसे प्राण दान नहीं पायो ॥ सुन रघुपति अति कोप कराये ॥ मारा शङ्कर बाण चलाये ॥३४५२॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

रुद्रबाणको खयके मूर्छागत हो जाय ॥ पुन चेतनको पायके चण्डी रोप चलाय ॥ चण्डीरोप चलाय लग्यो राघवको जाई ॥ कछुक देरके बाद चेत नारायण पाई ॥ मारा चक्र चलाय भूप मूर्छित हो जाये ॥ जब चेतनको पाय सुतीक्षना वह आये ॥३४५३॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

तब सुनके ईश्वर घबड़ावें ॥ क्यों करि यातु कन्तकों घावें ॥ सेवक को नहि मार सकायं ॥ समर छोड़ लौटे रघुरायं ॥३४५४॥ पश्च दिवौकसगण घबड़ाए ॥ सरस्वतीको दौर पठाए ॥ बैठो मात कण्ठमो आई ॥ दोन वुद्धको भ्रष्ट कराई ॥३४५५॥ ले कर शस्त्र यातु धमकाये ॥ भणे रामलक्ष्मणको आये ॥ मे रणमो निज इष्ट मनाई ॥ तुम ईश्वर हो प्रधन तजाई ॥३४५६॥ अद्य ताहि यमलोक पठावें ॥ तो मे रावण सत्य कहावें ॥ सुनके राम लक्ष्मण गर्जाये ॥ ले ले शस्त्र भिड़े पुन आये ॥३४५७॥ इतरेतर वहु युद्ध कराई ॥ को करि सके भाषमो

भाई ॥ भयो विभीषण मन्त्र बुझायो ॥ ब्रह्म कवच मनमो लट बायो ॥३४५८॥ ताते अस्त्र लगे नहि कोई ॥ काटो कवच प्रलय तब होई ॥ सुन ईश्वर परब्रह्म चलाए ॥ ताते ब्रह्म कवचको घाए ॥३४५९॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

कालचक्रशर मन्त्र पढ़ छोना राम चलाय ॥ ताते दशमर्दन हने पुन मस्तक बढ़ जाय ॥ पुन मस्तक बढ़ जाय जुटा धड़मो सब धाई ॥ अर्द्धचन्द्र शर छोड़ नाथ गईन पुन धाई ॥ कूट शीर्ष तत काल लगे धड़मो सब जाए ॥ ब्रह्मजाल शर छोड़ नाथ मस्तक पुन घाए ॥३४६०॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

लगा जोड़ गईन पुन जाये ॥ देख प्रभो मनमो घबराये ॥ जब काटें ताके शिर जाई ॥ लगै जोड़ तनमो पुन धाई ॥३४६१॥ ताते रामलखण घबड़ाये ॥ भिड़े पवनसुत कोपकराके ॥ मारा लात भूपको जाई ॥ ताते लाज यातुपति पाई ॥३४६२॥ रुद्राणी को योद्ध कराये ॥ पहुंची सर्वाणी द्रुत आये ॥ ले रावणको गोद चलावें ॥ क्यों सुत बर रणते भय पावें ॥३४६३॥ करूं समर अवशो मै जाई ॥ देवें नरवानरको घाई ॥ यद्यपि रुद्र समरमो आवें ॥

तिनसे भी मै युद्ध करावें ॥३४६४॥ सुनत दशानन अति हरषायो ॥ लै देवी सन्मुख पुन आयो ॥ पश्चय प्रभो निज अस्त्र तजाये ॥ जोड़भुजादल शीर्ष निवाये ॥३४६५॥ भणै चण्डिकाको कलपाई ॥ क्यो माता रणमो तूं आई ॥ मीन सर्प सुतको जस खावैं ॥ तस जननी तुझको मै पावैं ॥ ३४६६ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

सुन राघवके वचनको देवी लज्जा पाय ॥ समर जीत भण समरते रावणका लै जाय ॥ रावणको लै जायं डङ्क रण जीत वजाये ॥ लै राघव निज कटक हार पश्चिममो आये ॥ भणै खालसासिंह निरख निर्भर घबड़ावैं ॥ क्यों करि रावण मरै युक्ति सब सैन करावैं ॥३४६७॥

अथ श्रीदुर्गोत्सव।

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

सुनत विभीषणको भणै रामचन्द्र कलपाय ॥ अब क्यों करि रावण मरैं दीजे मित्र बताय ॥ दीजे मित्र बताय विभीषण सुनत अलावैं ॥ अब मेरो कछु युक्ति

नाथ नहि काम करावैं॥ सुनके रोवैं रामचन्द्र लक्ष्मण कलपाये॥ और वीर हनुमन्त ऋक्ष मर्कटगण आये ॥ ३४६८ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

देव इन्द्र सब लेख बुलाई॥ पूछें ब्रह्माके गृह जाई॥ क्यों करि रावण मारा जाये॥ रक्षा जगदम्बा करि आये॥ ३४६९ ॥ भणो विधाता ताहिं बुझाई॥ बिना चण्डिका मात मनाई॥ यातु कन्त मारा नहिं जाये॥ सत्य वचन मै तोहि बताये॥ ३४७० ॥ वज्र-पाणि बोले शिरनाई॥ कहो आप राघवसे जाई॥ तब वेधस प्रस्थान कराये॥ भणे राम लक्ष्मणको आये॥३४७१॥ करो स्थापना घट रघुराई॥ तब देवें देवी बर आई॥ लङ्केश्वर मारा प्रभु जाये॥ भणे राम लक्ष्मण हरषाये।३४७२। क्यों करि अर्चन मात करावैं॥ काल अकाल माम बतलावैं॥ और प्रती-पद गमन कराये॥ आश्विन शुक्ल रोप तिथि आये॥३४७३॥ भणे प्रजापति पुनः बुझाई॥ काल अकाल तुल्य तब भाई॥ जब अर्चन प्रभु आप करावैं॥ तब देवी देवें बर आव॥३४७४॥

कुण्डलिया छन्द ॥

काल शुक्ल ऋतु प्रात शुभ आवैगी सुन नाथ॥

दुर्गाको करि स्थापना पर्व प्रेमकी साथ ॥ पर्व प्रेमकी साथ पाठ चण्डीका कीजै ॥ लै गुड़ल्ण कुष्माण्ड नारिअलका बलि दीजै ॥ लगे अष्टमी आय सप्तमी गमन करावैं ॥ तब सर्व्वो पुन पूज बली कुष्माण्ड चढ़ावैं ॥३४७५॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

रात्रि जागरण नाथ करावैं ॥ कटक सहित दुर्गा गुण गावैं ॥ पुनः अष्टमी मो रघुराई ॥ पर्व्वो चण्डी मात मनाई ॥ ३४७६ ॥ होम और कुष्माण्ड चढ़ाये ॥ लीजै कालीको रिझवाये ॥ चण्डी पाठ करी रघुराई ॥ क्लेश सर्व्व सर्व्वाणी धाई ॥ ३४७७ ॥ निशवासर दुर्गा गुण गाए ॥ लिहु मातको नाथ रिझाए ॥ नव नौमी तिथिको प्रभु पावें ॥ तब चण्डी पुन पाठ करावें ॥ ३४७८ ॥ प्रथमतः घटका करि पूजा ॥ कीजै होम पाठ प्रभु दूजा ॥ रात्रि जागरण करि रघुराई ॥ दुर्गा-माता करी हरषाई ॥ ३४७९ ॥ तुष्ट होय देवीजी आवैं ॥ दै वर दान भवन निज जावैं ॥ प्रात विसर्जन नाथ कराई ॥ वधो आप रावणको जाई ॥ ३४८० ॥ असभण विधि प्रस्थान कराये ॥ इत राघव सब द्रव्य मगाये ॥ प्रगे होत उठकै रघुराई ॥ करि मज्जन तन शुद्ध कराई ॥ ३४८१ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

कन्या राशी मध्यमो शरद्रितु ऋठपाय ॥ राम तीसरे प्रहरको कीन्ह स्थापना माय ॥ कीन स्थापना माय पाठ चण्डीका लाय ॥ दुर्गाका गुण गाय अन्त-रजनी करि दीन ॥ प्रात सातमी अर्चं प्रभो चण्डी गुण गावैं ॥ कीन निश्चय त्याग गमन लसु परवेश करावैं ॥३४८२॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

तब सप्ती अर्चौं रघुराई ॥ कुष्माण्ड कोट बलि दान कराई ॥ प्रात अष्टमीका करि पूजा ॥ कुष्माण्ड बली दीना पुन दूजा ॥ ३४८३ ॥ चण्डी पाठ करे रघुराई ॥ कन्दमूल नैवेद्य चढाई ॥ रटि दुर्गा गुण राति काटाये ॥ प्रत्यूष प्रभू नौमी तिथि पाये ॥३४८४॥ होम यज्ञ बहु भांत कराई ॥ देवीको अर्चौं रघुराई ॥ दुर्गा पाठ कीन हरषायं ॥ घटमो देवी वास करायं ॥३४८५॥ करुणामयी मातजौ आई ॥ गोपनते पूजा सब खाई ॥ नाथ भणे देवी नहि आवैं ॥ क्या अपराध मात मम पावैं ॥३४८६॥ भणै विभीषण शन्त बुझाई ॥ नीलोत्पल प्रभु दान कराई ॥ प्रसन्न मातको नाथ करावैं ॥ तब देवी देने वर आवैं ॥ ३४८७ ॥ तब राघव बोलैं कलपाई ॥ नीलपद्म पावैं कितभाई ॥

जोड़पाणि पुन मन्त्र बतावैं ॥ पङ्कज देवोदृहमो पावैं ॥ ३४८८ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

तत्काल हनुमन्तको दीना राम पठाय ॥ एक दण्डकी मध्यमो ले उत्पल वह आय ॥ ले उत्पल वह आय अष्टशत दीन गिनाई ॥ ले पुष्कर रघुनाथ विप्र सङ्कल्प कराई ॥ एक एक मैं कमल प्रभो पढ़ि मन्त्र चढ़ावैं ॥ पद्म पांखुड़ी सात तामरसचन्द्र चुरावैं ॥ ३४८९ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

पद्म एकशो सात चढ़ाई ॥ रोवैं राम लखण कलपाई ॥ नलिन भूमिको उरग कराये ॥ कीना सर्वनाश सम आये ॥३४९० ॥ व्यथभयो सङ्कल्प हमारो ॥ गावैं कष्ट निज मन भारो भणे विभीषण मन्त्र बुझाये ॥ दीना अष्टोत्तर गाये ॥३४९१॥ जगदम्बे अरविन्द चुराई ॥ कहं क्लेश तुम्हें प्रभु आई ॥ मुनि रघुपति रोवैं कलपाये ॥ मर्कट बंधु सर्व घबड़ाये ॥३४९२॥ हाहाकार करैं सब कोई ॥ भणे प्रभो अब कैसे होई ॥ कमल नयन जगमोहिं बतावैं ॥ तातैं मैं निज नैन चढ़ावैं ॥३४९३॥ अस-भण ज्यों शर नाथ लगाये ॥ त्यों देवी आसै कर

आये ॥ भयो भक्ति देखन तब पाई ॥ लेहु राम राजिव निज आई ॥३४६४॥ लै सारस तब माथ चढ़ाये ॥ जोड़ भुजा दस स्तोत्र अलाये ॥ भयो मात चण्डी मुसकाई ॥ तुम हौ विश्वकन्त रघुराई ॥ ३४६५॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

भक्तनके हितकारणे कीना मै यह काज ॥ जो तब कृत अर्चन करे आश्विनमो महराज ॥ आश्विनमो महराज क्लेश कबहूं नहि पावैं ॥ प्रात दशहरा अर्च राम रावणको घावैं ॥ भयो खालसासिंह मात पुन युक्ति बताई ॥ चण्डी करी अशुद्ध पाठ रावणका जाई ॥३४६६॥

अथ रावण वधः ।

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

अस देवी वरदान दै कन्त भवनमो जाय ॥ नाचै वानर भालुगण दुर्गाको गुण गाय ॥ दुर्गाको गुणगाय निशा अवसान कराए ॥ प्रात दशहरा पूज विजय डङ्का वजवाए ॥ पवन पुत्रको भक्त प्रभो अब ही तुम जाई ॥ चण्डी करी अशुद्ध वृहस्पति को भमकाई ॥३४६७॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

करि प्रणाम हनुमन्त सिधाये॥ रूप मच्छिका को धरि आये॥ अक्षर आठ और युग खाई॥ काठ बृहस्पति पाट कराई॥३४६८॥ पश्च कोप हनुमन्त कराये॥ छोर पत्र पख टोन खपाये॥ सुरगुरु पाठ अशुद्ध कराई॥ तब रावणको मात तजाई॥३४९९॥ महावीर मनमो हरषाए॥ भणे प्रभो पदमो शिर-नाए॥ करि अशुद्ध चण्डी मे आवैं॥ मात नाथ निज भवन सिधावैं॥३५००॥ शुनि रघुपति मनमो हरषाए॥ भणे विभीषण शन्त बुझाए॥ पूर्व्व कथा मै प्रभो शुनावैं॥ पूर्व्वज तपस कठोर करावैं॥३५०१॥ वर देनि चतुरानन आये॥ भणे दशानन माथ निवाये॥ अमर करो मुझको वर देवी॥ कहा विरिञ्चि वाण कर लेकि॥३५०२॥ मृत्युबाण तेरो यह भाई॥ याको धरो गेहमो जाई॥ और अस्त्र याके विन-ओई॥ मार सकै तुझको नहि कोई। ३५०३॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

करपदं मस्तक समरमो यदी काटतनजाय॥ तत्तकाल तनमो जुटे मम वरते द्रुत आय॥ मम वरते द्रुत आय शुनत अग्रज हरषावे॥ लै शर सो महराज छोप्र सद्मनमो आये॥ वासर भू यह बाण

प्रभो देखन मै पाई ॥ पट राणीको दीन भूप सब हाल जनाई ॥ ३५०४ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

जित राणी वह राप रखाई ॥ सो मेरो जाना नहि भाई ॥ भणे पवनसुत माथ निवाये ॥ मे लाऊं अवही शर जाये ॥३५०५॥ अमभण राम चरण शिरनाई ॥ झट ब्राह्मणको रूप धराई ॥ शिरमो फोटा दीर्घ लगाए ॥ गात वृद्ध अरु वेश पकाए ॥३५०६॥ थर थर तन कम्पत सव भाई ॥ लै लाठी कुब्जक सम धाई ॥ राणीके सन्मनमो आए ॥ जय जय जय तव रुद्र कराए ॥३५०७॥ उठ राणी प्रणिपात कराई ॥ दे आसन द्विजको वैठाई ॥ करि आशीस विप्र वत लावैं ॥ तव मङ्गल मै नित्य मनावैं ॥ ३५०८ ॥ नर वानर लङ्कामो आई ॥ पुत्र पौत्र तेरो सब धाई ॥ प्राण दान भुनता जो पावैं ॥ पुत्र पौत्र वहुता हो जावैं ॥ ३५०९ ॥ मै ज्योतिष मतते लखि पाई ॥ क्या करि सकैं तोर रघुराई ॥ जो धन नृप तव पास रखावैं ॥ सो काहूको नाहि वतावैं ॥३५१०॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

शुन राणी करजोड़की भणै चरण शिरनाय ॥ क्या मुझको भर्तादयी द्विज वर देहु वताय ॥

द्विज वर देहु बताय विप्र बोलैं मुसकाये ॥ मृत्यु बाधा निज जौन भूप ब्रह्माते पाये ॥ भये मन्दोदरि हर्षं विप्रपदमो शिरनाई ॥ परम यत्न करि बाधा तौन राखा द्विज राई ॥ ३५११ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

तब बाहुन तिनको समुझायें ॥ यद्यपि पिता मात तब थायें ॥ तिनसे भी यह हाल लुकाई ॥ करी राज लङ्कामो माई ॥ ३५१२ ॥ असभाग विप्र पयान कराये ॥ कछुक दूर जाकर पुन आये ॥ कलप कलप बोलैं समुझाई ॥ तब प्रतीत मुझको नहि माई ॥३५१३॥ अबला जाति आप कहि लावैं ॥ बाबा भूप कतहूं पनि जावैं ॥ दासी दास रोपको पाई ॥ दे देवें रघुपतिको जाई ॥ ३५१४ ॥ तब पनिष्ठ भूभुजको होवैं ॥ असभाग कलप विप्रवर रोवे ॥ क्रन्दन निरख नारि चितलाई ॥ पतिहितकारी मम द्विज राई ॥३५१५॥ इनसे कपट कह्यो नहि जाये ॥ मरें विप्र मम शोच कराये ॥ अस विचार राखो बतलावैं ॥ खम्भ मध्यं शर नाथ रखावैं ॥ ३५१६ ॥ शुनत भाण्ड ब्राह्मण हरषाये ॥ मारा लात खम्भमो धाये ॥ गिरो खम्भ टूटिके भई ॥ लै शर द्विज प्रस्थान कराई ॥ ३५१७ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

रामचन्द्रको आयके दीना बाण हसाय ॥ पश्च प्रभो हनुमन्तको लीना कण्ठ लगाय ॥ लीना कण्ठ लगाय विजय डङ्का बजवाई ॥ शुनके रावण बन्धु सर्व्व निज त्यार कराई ॥ सिंहनाद करि राम चाप टङ्कार करावें ॥ शुन भूभुज कर कोप समर धरणी मो धावें ॥३५१८॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

इतसे लक्ष्मण राम सिधावें ॥ उतसे यातु कन्त चलि आवें ॥ भयो परस्पर घोर लड़ाई ॥ बलय युगल दलको दल घाई ॥ ३५१९ ॥ प्रहर नेव तक युद्ध कराये ॥ कोकविसके समर सो गये ॥ मृत्युवाण प्रभु चाप लगाई ॥ ब्रह्ममन्त्र पढ़ि दीन चलाई ॥३५२०॥ लगा रोप रावण उर जाये ॥ गिरा भूमि निज होश हराये ॥ हाहाकार यातुगण कीना ॥ शरण आय रघुपतिको लीना ॥ ३५२१ ॥ राम मनै मन कीन विचारा ॥ परम भक्त दश शीर्ष हमारा ॥ द्वारपाल मम भूप रहाये ॥ शाप भ्रष्ट हो करि यह धाये ॥३५२२॥ दे दर्शन निज मोक्ष करावें ॥ अस विचार अवरज बुलवावें ॥ भणे प्रभो तिनको समुझाई ॥ राजनीति रावण ते भाई ॥ ३५२३ ॥

शिक्षण करि अविलम्बित आवें ॥ भूप भात प्राचीन कहावें ॥ सुन लक्ष्मण प्रस्थान कराये ॥ पूछे राव-णते द्रुत आये ॥३५२४॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

शिक्षण कारण नीतिको भेजदीन रघुनाथ ॥ सो मुझको भूभुज कहो शीघ्र अनुग्रह साथ ॥ शीघ्र अनुग्रह साथ भणे रावण कलपाये ॥ कीना कीटन पाप यातु का योनिधराये ॥ करि किरपा रघुवीर नीतिको आड़ कराई ॥ मोक्ष हेतु मम नाथ आपको दीन पठाई ॥३५२५॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

अन्त समय मुझ पर रघुराई ॥ कृपादृष्टि की नाथ कराई ॥ कहो जाय प्रभुको शिरनाये ॥ पूछें आप निकट मम आये ॥३५२६॥ जो जानी मै देहुं बताई ॥ सुनि लक्ष्मण प्रस्थान कराई ॥ कह्यो हाल रघुपतिको जाये ॥ पहुंचे हर्ष प्रभो द्रुत आये ॥ ३५२७॥ पड्यो दशानन माथ निवाई ॥ भयो कमल-पदमो चितलाई ॥ मै पापी बहु पाप कराये ॥ अन्त रूप नारायण पाये ॥३५२८॥ करो ज्ञान मुझको रघुराई ॥ देहु चरण मम माथ लगाई ॥ तव रघु-पति बोलें कलपाये ॥ राजनीति शिक्षण मै आये ॥

३५२९॥ क्यों करि देवैं चरण लगाई॥ भये भूप पुन माथ निवाई॥ राजनीति को आइ कराए॥ मोक्ष कारण मुझको प्रभु आए॥ ३५३०॥ केहु चरण मम मुण्ड लगाई॥ निकले प्राण मोर रघुराई॥ तव करुणामय पैर छुलाये॥ भये नीति कछु देहु बताये॥३५३१॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

शुनि रघुपतिके वचनको भये भूप शिरनाय॥ अन्त समय मेरो प्रभो क्या मे नीति वताय॥ क्या मे नीति वताय प्रभो पख नीति चलावैं॥ धर्म्म कर्म जो होय तौन तत काल करावैं॥ पापकर्म्म मो करौ खूब आलस रघुराई॥ आज काल करि काल नाथ सब देहु कटाई॥३५३२॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

याको प्रभु दृष्टान्त बतावैं॥ काज नेत मे चित्त धरावैं॥ नर्ककुण्डको नष्ट कराए॥ देवैं कुण्ड सुगन्ध वनाए॥३५३३॥ लवनसिन्धुको दूरि कराई॥ लावैं दुग्धसिन्धु मे जाई॥ स्वर्गमार्ग मे देहुं वनाये॥ सारे जीव जन्तु सब जाये॥३५३४॥ यह कारज चित्तमो शुभ लाई॥ आज काल करि काल विताई॥ अन्त समय पहुंचा मम आये॥ मन का मन ही

माहि रहाये ॥३५३५॥ पापकर्म्म का शुनो नज़ीरं ॥ जाते गात गई मम चीरं ॥ सुपनखा निज घ्राण नशाई ॥ कहा मुझे लक्कामो चाई ॥३५३६॥ सीता की हरके लै घावैं ॥ तब अपनो मै शोक मिटावैं ॥ शुनत वाक प्रस्थान कराये ॥ छल प्रभुसे करि सीता लाये ॥३५३७॥ ताते वंसनाश करि सारे ॥ अन्त आप भी पैरपसारे ॥ यह मै युग्म नोति रघुराई ॥ उदाहरण संयुक्त बताई ॥३५३८॥

कुण्डलिया छन्द ॥

असभय रावण रामको रामनाम मुखलीन ॥ नाथ चरण चित लायके गात त्याग निज कीन ॥ गात त्याग निज कीन स्वर्ग प्रस्थान कराये ॥ अमर लोकके मध्य अमरमङ्गल सब गाये ॥ करि क्रन्दन कलपाय विभीषण शन्त चलावैं ॥ सीताको गृह लाय भ्रात गृह आप तजावैं ॥३५३९॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

भग्नदूत महलों मे जाये ॥ राणीगणको हाल जनायै ॥ पतिशहस्र चतुर्दश पाई ॥ रोवैं घेर भूपको भाई ॥ ३५४०॥ मन्दोदरी भयो कलपाए ॥ सीता मृत्यु नाथ निज लाए ॥ कन्त मुझे किसको दे जावैं ॥ क्यों करि तब बिन प्राण धरावैं ॥३५४१॥ जो मेरे

पतिको धरि घाए ॥ तिनका पद देखूं मैं जाए ॥ असमभणको प्रस्थान कराई ॥ कौन प्रणाम रामको जाई ॥३५४२॥ सियाजान आशीस अलावें ॥ भोग अखण्ड सोहाग करावें ॥ सुन राणी बोले शिरनाई ॥ वाक अव्यर्थ तोर रघुराई ॥३५४३॥ देहु नाथ मम कान्त जिआये ॥ तव ईश्वर मनमो घबड़ाये ॥ भणे मन्दोदरिको समुझाई ॥ वाक्य व्यर्थ मेरो नहि माई ॥३५४४॥ चिता भूपको लोप न होई ॥ सदा सोहागिन बोलें लोई ॥ शुन राणी मनमो हरषाई ॥ कान्त शोक तजि भवन सिधाई ॥३५४५॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

शन्त विभीषणको भणे रामचन्द्र समुझाय ॥ क्यों सीता क्रन्दन करो काल लोप होजाय ॥ काललोप होजाय शीघ्र सतकार करावें ॥ शुनत विभीषण शन्त कफन काठो मगवावें ॥ भये खालसासिंह रथीमो अस्ति चढ़ाई ॥ सरित कान्त तट जाय तुण्डमो अग्नि लगाई ॥ ३५४६ ॥

अथ बिभीषणको लङ्काका राज्याभिषेक।

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

लङ्कापतिको मारके मर्कपती बुलवाय ॥ भणे प्रभो दशोलको तव प्रसाद मैं भाय ॥ तव प्रसाद मैं भाय दुष्ट रावणको घाए ॥ कहैं सन्त सुग्रीव प्रभो-पदमो शिरनाए ॥ निज कारज करि भाप दासको नाम कराये ॥ मे वनको हैं जन्तु करें क्या नाथ सकायं ॥ ३५४७ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

सुनि रघुपति मनमो हरषायें ॥ भणे मित्रको पुन समुझाये ॥ धारमही सोधौ मम आई ॥ देहु विभीषण को ठकुराई ॥ ३५४८ ॥ हनुमान आदिक सब जाये ॥ राज तिलक शिर देहु कराये ॥ सुनत विभीषण सन्त पलावें ॥ तिलक भाल मम नाथ करावें ॥३५४९॥ भणे प्रभो तिनको समुझायं ॥ जनक सत्य नहिं टार सकायं ॥ अब्द चतुर्दश विपिन रहावें ॥ तिलक लक्ष्मण आय करावें ॥ ३५५० ॥ असभण

बलय मंडित रघुराई ॥ दीना अवरजको पठवाई ॥ गढ़ अन्दर लछमण चलि आये ॥ ध्वजा पताका कोठ उड़ाये ॥३५५१॥ नगर नगरमो खबर जनाई ॥ प्रात त्रिभ धण को ठकुराई ॥ रामचन्द्र अभिषेक करावैं ॥ असभण डङ्का ठोक जनावैं ॥ ३५५२ ॥ तीर्थ सर्व्वके कमल मगाए ॥ मन्त्र पाठ करि स्नान कराए ॥ तामा मरफा ढोल बजाई ॥ अधीवास करि मङ्गल गई ॥ ३५५३ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

प्रगैहोत रघुनाथकी करिकै नाम उचार ॥ राज तिलक लछमण करो मनमें हर्ष अपार ॥ मनमो हर्ष अपार खजाना अन्त लुटावैं ॥ प्रजा सर्व्व कर-जोड़ भूपको नजर करावैं ॥ भणै खालसासिंह गुरु नानक परतापं ॥ भवसागरसे तेरे जौन करते जन आपं ॥ ३५५४ ॥

अथ श्रीमती माया कर्त्तृक सीता देवीका अग्निमी प्रवेश एवं अकर्त्तृका सीतादेवीका अग्निसे उद्भव।

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

लङ्काको लै राजको हर्ष बिभीषण सन्त ॥ चले खजाना फेकते भेटनको भगवन्त ॥ भेटनको भगवन्त निकट राघवके आए ॥ अष्ट अङ्गते लोट दीर्घ प्रणिपात कराए ॥ हर्ष बीर रघुनाथ मिवको कण्ठ लगावैं ॥ स्वच्छ मर्कट अरु यतु राम जय गर्ज्जा मनावैं ॥ ३५५५ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

आसन यथा उचित सब पाये ॥ तिष्ठे भालु कपी सब आये ॥ भणे सन्त पदमो शिरनाई ॥ तव प्रसाद पायो ठकुराई ॥ ३५५६ ॥ अब जननी मम नाथ बुलावैं ॥ जा प्रसाद लङ्का मै पावैं ॥ शुन ईश्वर मनमे मुशकाये ॥ भणे पवन सुतको समुझाये ॥ ३५५७ ॥ जनक सुताके निकट सिधाई ॥ हाल लाव रण हाल जनाई ॥ करि प्रणाम हनुमन्त सिधाये ॥ निकट

जानकीकी दूत आये ॥ ३५५८ ॥ करि प्रणाम सब हाल जनावें ॥ सुनि माता अतिशय हरषावें ॥ कोट कोट आशीस कराई ॥ पूछें कुशल कान्तकी माई ॥ ३५५९ ॥ महावीर सब कुशल बतावें ॥ तब सीता पुन भाष सुनावें ॥ कहो पुत्र राघवको जाई ॥ भेटूं चरण कमल मैं आई ॥ ३५६० ॥ करि प्रणाम हनुमन्त सिधाये ॥ रघुपतिको सब हाल जनाये ॥ भषो विभीषणको रघुराई ॥ लाव सखा अवनीजा जाई ॥ ३५६१ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

शुन ईश्वरके वचनको लङ्केश्वर द्रुत जाय ॥ कर प्रणाम जग मातको वस्त्र आभरण लाय ॥ वस्त्र आभरण लाय भूप भाषैं शिरनाई ॥ याको पहिरो मात करो दर्शन रघुराई ॥ तब जननी कलपाय भषै नृपको समुझाये ॥ वस्त्र आभरण पश्य कन्त मम कोप कराये ॥ ३५६२ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

इन्ह भषै पुन मन थिर वाई ॥ तब शोच करी मति माई ॥ मै प्रभुकी आज्ञा ले आये ॥ पहिरो मात आप हरषाये ॥३५६३॥ पति निदेश शुन मौन रहावें ॥ तब सुरता छादन लै आवें ॥ तन्न करी

ढोल नगाई ॥ तेल अतर मलि स्नान कराई ॥३५६४ ॥
पीताम्बर भूषण पहिरायं ॥ रच रचके शृङ्गार करायं ॥
कनक पालकीमों तीष्टावैं ॥ ढोल नगाड़ा सङ्ख बजावैं
॥ ३५६५ ॥ लै शिविका प्रस्थान कराये ॥ नगर लोग
दर्शनको धाये ॥ मर्कट भालु यातुगण आवैं ॥ माता
का दर्शन नहीं पावैं ॥ ३५६६ ॥ भीड़ देखके अन्त
रिसाये ॥ मारा छड़ीं गर्ज्जके धाये ॥ करुणामय देखन
अस पाई ॥ भयों विभीषणको समुझाई ॥ ३५६७ ॥
क्या कारण भक्तनको घावैं ॥ ले पैदल भूजाको आवैं ॥
दर्शन करैं प्रजागण भाई ॥ मन वाञ्छित फलको
सब पाई ॥ ३५६८ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

शुनत बचन रघुनाथके महावीर द्रुत धाय ॥
सिविका का पट खोलिके सीताको लै आय ॥ सीता
को लै आय मर्कं भालुक गण धाई ॥ लै लै पदकी रेणु
आपने माथ लगाई ॥ पश्य आभरण वस्त्र कोप रघु-
वीर कराये ॥ थर थर करती गात मात पदमो शिर-
नाये ॥ ३५६९ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

लक्ष्मण पश्य चीप्र उठि आवैं ॥ पकड़ युग्म पद
माथ लगावैं ॥ सीता आशीर्व्वाद कराई ॥ खड़ी रही

सम्मुख पति आई ॥ ३५७० ॥ भये प्रभो तिनको धमकाये ॥ मुझको छोड़ लक्ष्मण आये ॥ मास दिशा तू वास कराई ॥ भला बुरा कछु हाल न पाई ॥३५७१॥ शुन सीता मनमो कलपाए ॥ देवरको बोलि समुझाए ॥ धर्म्म चिता द्रुत त्यार करावैं ॥ निज सतित्व प्रभुको दिखलावैं ॥ ३५७२ ॥ शुनत वचन लक्ष्मण कलपाये ॥ धर्म्म चिता द्रुत त्यार कराये ॥ तामें पावक दोन लगाई ॥ पश्च मात अतिशय हर्षाई ॥ ३५७३ ॥ राम नाम शुभ मन्त्र अलाये ॥ बैठी धर्म्म चिताभो जाये ॥ निरखि अनल मनमो हरषावैं ॥ पूर्व्व जानकीको लै आवैं ॥ ३५७४ ॥ धर्म्म चिताके मध्य रखाये ॥ माया सीता लोप कराये॥ प्रहर बाद दमुनस लै आई ॥ दीना रामचन्द्रको आई ॥ ३५७५ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

ब्रह्मा आदिक लेख सब लङ्कापुरमो आय ॥ पढ़ि पढ़ि कोटन स्तोत्रको अत्यैं प्रेम बढ़ाय ॥ अत्यैं प्रेम बढ़ाय भूप दशरथजो आये ॥ हर्ष दौड़ पश्च भ्रात जनक पदमो शिरनाये ॥ सीता देवी आय श्वशुरको माथ निवाई ॥ करि भूरी आशीष भये दशरथ हर्षाई ॥ ३५७६ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

तव प्रसाद मे स्वर्ग सिधाये ॥ कीजे राज अवधि मो जाये ॥ पुत्र केकयी दुख वहु दीना ॥ भरत सहित वर्ज्जन मै कीना ॥३५७७॥ पिगडादान सुभको जो देवैं ॥ ताको मे कबहूं नहीं लेवैं ॥ भये प्रभो पदमो शिरनाये ॥ कर्म्म लिखा अपनो मैं पाये ॥ ३५७८ ॥ काश्मीर शुनशी लघुभाई ॥ राज छोड़ तप घोर कराई ॥ निशशासर मेरो गुण गाये ॥ काहि पिता अस वाक्य अलाये ॥ ३५७९ ॥ हो प्रसन्न दशरथ वतलावैं ॥ तव वाणी नहीं टारि सकावैं ॥ अव जो मम वह श्राद्ध कराई ॥ ताको ग्रहण करौं मै जाई ॥ ३५८० ॥ असभण लक्ष्मण भूप वुलाये ॥ भये हर्ष निज कण्ठ लगाये ॥ तव सम श्रेष्ठ पुत्र नहि कोई ॥ नहि असभया नहै नहीं होई ॥ ३५८१ ॥ भल सेवा अग्रजका कीना ॥ कुल मेरो उज्जल करि दीना ॥ भये जानकीको पुन जाये ॥ तव प्रसाद निर्ज्जर पुर पाये ॥ ३५८२ ॥

॥ कुगडलिया छन्द ॥

असभण दशरथ, मातको आशीर्व्वाद कराय ॥ जो चरित्र तेरो शुनै सो कल्मष निज धाय ॥ सो कल्मष निज धाय दुन्द ईश्वरको भाए ॥ भये तेहु

वर दान प्रभो भाषे मुसकाए ॥ देवारिष्ट विनाश
कृत्य मर्कट सब कीनो ॥ अन्त समरके मध्य प्राण
बहुता तजि दीना ॥ ३५८३ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

अमृतका वर्षा करि भाई ॥ दीजे मर्कट भालु जिलाई ॥ भणे पुरन्दर मेघ बुलाए॥ सुधा वृष्टि कीजे द्रुत आए ॥ ३५८४ ॥ वारिद गण अमृत लै भाई ॥ दीना लङ्कामो बरषाई ॥ उठे भालु मर्कट गर्ज्जाए ॥ मार मार भण शोर चमाए ॥ ३५८५ ॥ यातु एक मही प्राण धराई ॥ सुरगणले पूछैं रघूराई ॥ कृत्स प्लवग जीवन पुन पाए ॥ क्यों नहि कीणप प्राण धराए ॥ ३५८६ ॥ भणें अमर प्रभुको समुझाई ॥ रट तव नाम शरीर तजाई ॥ ताते मोक्ष यातु सब पाए ॥ कीन गोलोक वास बह जाए ॥ ३५८७ ॥ प्लवग भालु रावण भण सांई ॥ प्रधन भूमिमो प्राण तजाई॥ तिह कारण मुक्ती नहि पाये ॥ लौट लौट निज गात धराये ॥ ३५८८ ॥ अमभण लिख सर्व्व समुझावैं ॥ शुनि रघुपति मनमो हरषावैं ॥ भणै मातली माथ निवाई ॥ क्या निदेश मुझको रघुराई ॥३५८९॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

दै करि आशीर्व्वादको भये प्रभो हरषाय ॥ ले करि अपने कन्तको अमर लोकमो.जायं ॥ अमर लोकमो जायं वज्रपाणी हरषाये ॥ चढ़ि स्यन्दनके मध्य आपने गेह सिधाये ॥ भये खालसासिंह अमर मङ्गल सब गाई ॥ निज निज वाहन तिष्ठ स्वर्ग प्रस्थान कराई ॥३५६०॥

अथ महाराज श्रीरामचन्द्रजीका ससैन्य अयोध्या गमन।

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

प्रात विभीषण जोड़ कर भये चरण शिरनाय ॥ वर्ष चतुर्द्दश विपिनमो नाथ कष्ट बहु पाय ॥ नाथ कष्ट बहु पाय मूल फल कीन अहारा ॥ तैल अतर तन लेप स्नान कीजे करतारा ॥ करि भोजन रघु-नाथ परिश्रम पात करावैं ॥ शुनि नारायण वचन विभीषणको बतलावैं ॥ ३५६१ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

भवरज कष्ट पश्य मम भाई ॥ राज छोड़ वन वास कराई ॥ कन्दमूल आहार करावैं ॥ तिनको

तजि कर्म्मों करि मे खावैं ॥ ३५६२ ॥ मिलूं भरतसे अब मै जाई ॥ तब प्रासन अन्नादिक भाई ॥ भालु मर्कं सबको ले आवैं ॥ अर्ज्जन करि भोजन करवावैं ॥ ३५६३ ॥ मुझसे अधिक अखा फल होई ॥ मुनिकी शक्ति चित्तमो रोई ॥ मर्कट भालु भूप लै धाये ॥ चरण धोय चरणोदक खाये ॥ ३५६४ ॥ भांति भांति पकवान बनाई ॥ मगडा गुल्ला और मिठाई ॥ लाल-लोहन लड्डू रसखोरा ॥ ठगडा पानी दे करि घोरा ॥ ३५६५ ॥ छेनाभाजा जोभागाजा ॥ काचागुल्ला ताजा खाजा ॥ पेड़ा वर्फी और मुरब्बा ॥ घोरा तोफा और गुड़म्बा ॥ ३५६६ ॥ पूड़ी व्यञ्जन लाल कचोड़ी ॥ पापड़ बड़ियां और पकौड़ी ॥ कन्दमूल मेवा फलसारे ॥ पांचक फुचका और अंचारे ॥ ३५६७ ॥

॥ कुगडलिया छन्द ॥

वहुप्रकार इस तौरसे भुक्ता त्यार कराय ॥ प्रेम सहित सब वलयको दीना खूब खिलाय ॥ दीना खूब खिलाय मर्क भालुक हरषाये ॥ दश दश रमको भूप सब्बंको दान कराये ॥ सुखसे कीना वास वलय रजनी हरषाई ॥ प्रात होत सब हाल नाथको आय जनाई ॥ ३५६८ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

शुन ईश्वर मनमो हरषाये ॥ भणे वलय सबको समुझाये ॥ जो भूभुजने दान कराई ॥ ताको ग्रहण करो सब जाई ॥३५९९॥ शुनके भालु मर्कं हरषाये ॥ ले ल्यैके रमणो निज भाये ॥ भणे राम वलको समुझाई ॥ निज निज भवन जाव सब भाई ॥३६००॥ मै निज सद्मन प्यान करावें ॥ शुनके मर्कं भालु कलपावें ॥ भणे प्रभो पदमो सिरनाई ॥ देखू राजनाथ तव जोई ॥ ३६०१ ॥ कृपासिन्धु बोलें हरषाये ॥ चलो साथ मम क्यों कलपाये ॥ भणे विभीषणको रघुराई ॥ तव प्रसाद भूजा मे पाई ॥ ३६०२ ॥ करो विदा निज सदन सिधावें ॥ करि क्रान्दन तब शम्त चलावें ॥ मै तब सङ्ग चलू रघुराई ॥ देखूं राज तिलक सुखदाई ॥ ३६०३ ॥ शुनके राम चन्द्र हरषावें ॥ चलो सखा भणा कराठ लगावें ॥ पुष्पक को रघुनाथ मगाये ॥ कटक सहित वैठे हरषाये ॥ ३६०४ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

चढ़ पुष्पक आकाशमा पवन वेगते धाय ॥ जनक पुत्रिकाको भणे रामचन्द्र दिखलाय ॥ रामचन्द्र दिखलाय जहां जो वीर खपाये ॥ एक एकका

नाम वोल रघ हाल अनाये ॥ सरित्पतीको मध्य गयो पुष्पक अब भाई ॥ भयो सिन्धु करजोड़ नाथको माथ निवाई ॥ ३६०५ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

मोच प्रभो वन्धन मम कीजे ॥ अभयदान करुणामय दीजे ॥ कहैं राम तिनको समुझाई ॥ कीर्त्ति लोप मोर होजाई ॥ ३६०६ ॥ पुनः जलधि बोलै शिरनाये ॥ चिह्न राखि प्रभु देहु खपाये ॥ तब लक्ष्मणको नाथ बतावैं ॥ लोचन खरहु सेतु करि पावैं ॥ ३६०७ ॥ पुष्पकते कूदे रघुराई ॥ शरते पुल त्रय टूक कराई ॥ दश योजन करि सेतु खपायें ॥ योजन तीश वाद होजाय ॥३६०८॥ सेतु तोड़ उछले रघुराई ॥ चढ़ि पुष्पक प्रस्थान कराई ॥ सागर पार नाथ जब आय ॥ उतरी वलय सहित रघुराये॥३६०९॥ सीताको बोलै रघुराई ॥ शम्भू स्थाप यह सेतु बनाई । शुनमाता मनमें हरषावै ॥ पुष्प गन्ध नैवेद्य मगावैं ॥ ३६१० ॥ कन्त सहित शङ्करको जाई ॥ करि पूजा पुष्पकपर आई ॥ भालु मर्कं अरुदगण धाए ॥ अर्द्ध भौम पुष्पक पर आए ॥ ३६११ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

गरुणपन्थ है करि चलि नाथ विमान उड़ाय ॥

कहैं जानकीको प्रभो इहां विभीषण आय ॥ इहां विभीषण आय भक्त मित्रता कराए ॥ पर्वत कारण तपस घोर कीना इत आए ॥ इसी तौर सब स्थान पश्य रघुपति बतलावैं ॥ जो जो कारज होय श्रुनत सीता हरषावैं ॥ ३६१२ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

पहुंचे किस्किन्ध्यामो आए ॥ भणे जानकीको समझाए ॥ इहां बालि बानरको घावैं ॥ राजमित्रको हानकरावैं ॥ ३६१३ ॥ पम्पा कुण्ड देखि रघुराई ॥ भणे भूमिजाको समुझाई ॥ इहां मतङ्ग घोर तपकीना ॥ जो अभिशाप बालिकोदीना ॥ ३६१४ ॥ पवनतुल्य पुष्पक वह धाए ॥ भणे कबन्ध नाथ इत घाए ॥ दशरथ सखा भवनको पाई ॥ विहस प्रभो बोलैं मुशकाई ॥ ३६१५ ॥ तब कारण द्विज समर कराये ॥ रावणके कर प्राण तजाये ॥ तिनसे हाल सर्व तब पाई ॥ श्रुन सीता बोलैं मुशकाई ॥ ३६१६ ॥ तब चरित्रको ताड़ सकाये ॥ जो लीलाकीना प्रभु-आये ॥ भणे राम तिनको मुशकाई ॥ बालमीक जो ग्रन्थ बनाई ॥ ३६१७ ॥ सोमैकीन मृत्युमो आए ॥ सेवक वाक न टार सकाए ॥ श्रुन कमला मुख मौन करावे ॥ सीता हरण कुटी प्रभुपावैं ॥ ३६१८ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

बिहसि जानकीको भयो दशकन्धर दूत पाय ॥ तब प्रतिबिम्ब सुगायके लङ्कामो लैजाय ॥ लङ्कामो लैजाय दुइां पावक मो जाई ॥ कीना आप निवास-मिली लङ्कामो आई ॥ और सर्व जो काज जहां कीनाजो आए ॥ सो सम्मुख तब होय कछुं तिसको कथा गाए ॥३६१९ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

पहुंचे तीर्थ राज मो आई ॥ भरद्वाज जित तपस कराई ॥ पुष्पकको उत दीन लगाए ॥ त्रयवेणी मज्जन करिधाए ॥ ३६२० ॥ पहुंचे भरद्वाज गृह जाई ॥ पद्य बिप्र उठके द्रुतआई ॥ राम लखण सीता हरषाये ॥ मुनिमाईं चरण शिरनाये ॥३६२१॥ आशीर्व्वाद तपीश्वरदीना ॥ पाणि जोड़ अस्तुति पुन कीना ॥ तुम हौ विघ्नकन्त रघुराई ॥ सेवक हित नरगात धराई ॥ ३६२२ ॥ देवाकष्ट विनाशकराये ॥ कीनामोक्ष इसनको आये ॥ असभया रामसहित मुनि राई ॥ अस्रपमर्कट भालु टिकाई ॥ ३६२३ ॥ पूछें राम विप्रको आए ॥ गृहका कुशल देहु बतलाए ॥ मुनि पञ्चानन भाष शुनाई ॥ घरमो सब मङ्गल रघुराई ॥३६२४॥ भरत तपस्या घोर कराए ॥ तिन का

सुयश त्रिभुवन गाए ॥ सुन रघुपति मनमो हरषावैं ॥ भरद्वाज पुनहर्षं चलावैं ॥ ३६२५ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

चलो हमारे भवनमो कीजे नाथ निवास ॥ करि सेवा तव भृत्यका सुफलकरौं गृहवास ॥ सुफलकरौं गृहवास प्रभो बोलैं मुसकाये ॥ पगउ नहीं तव वाक्यनाथ मञ्जूर कराये ॥ रात्रि इहां करिबास प्रात-प्रस्थान करावैं ॥ मुनि पुङ्गव सुनिवाक्य तिष्ठद्रुतध्यान लगावैं ॥ ३६२६ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

कल्पतरूको विप्र बुलाए ॥ अमरावति समवास बनाए ॥ तामें बलय सबंकोलाई ॥ इंन्द्र तुल्यप्रासन करवाई ॥ ३६२७ ॥ ताकोको करिभाष सवाए ॥ शेष शारदा अन्त न पाए ॥ देवन को दुर्लभ जो भाई ॥ सो भोजन मुनिराज कराई ॥ ३६२८ ॥ कन्दमूलमेवा-मगवाए ॥ रघुपतिको प्राशन करवाए ॥ सुखसे रजनी-बासकराई ॥ प्रात होत ईश्वर हरषाई ॥ ३६२९ ॥ महावीरको निकट बुलाये ॥ भगो नाथ तिनको समु-झाये ॥ शृङ्गवके पुरमो द्रुत जाई ॥ गुह सखाको कहो बुझाई ॥ ३६३० ॥ लङ्का जीत मित्र तव आए ॥ खबर हेतु मुझको पठवाए ॥ असमय नन्दीग्राम

सिधावैं ॥ अवरजको मम खबर जनावैं ॥ ३६३१ ॥
तबते मै भी पहुंचे आई ॥ सुनत बीर प्रस्थान कराई ॥
विप्ररूप हनुमन्त धराये ॥ गूहकको सब हाल जनाये
॥३६३२॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

सुनत आगमन रामको गूह सन्त हरषाय ॥ लै लै कोटन द्रव्यको भेटनको बहु धाय ॥ भेटनको बहु धाय प्रभो प्रस्थान कराये ॥ पश्च गगणके मध्य सन्त करजोड़ अलाये ॥ भणै खालसासिंह वेग करुणामय आई ॥ धरि गूहकको हर्ष आपने कण्ठ लगाई ॥ ३६३३ ॥

॥ कवित ॥

कुशल पूंछत नाथ गूहक भणत माथ चरण लगाय और प्रेम चित्त लायके ॥ रोग शोक भये पात पाप ताप भाग जात विप्र तव आगमन कह्यो जब आयके ॥ सुनके विहर्ष नाथ जानकी अवर साथ आगत विदाय वेग पुष्पकमो जायके ॥ श्रीगुरुगोविन्द सिंह सूरमा पूरण ब्रह्म मदनगोपाल सिंह गावत मनायके ॥ ३६३४ ॥

इति खालसा कृतरामायणे षष्ठो सोपान लङ्काकाण्डमभिसमाप्तः ॥

एक ओंकार सत्य गुरु प्रसाद ।

॥ श्रीवाहि गुरूजी की फते है ॥

अथ श्रीउत्तराकाण्डम भि लिख्यते ।

॥ श्लोक ॥

नमो नानक देवाय केशवाय नमो नमः ॥
नमस्ते ब्रह्मरूपाय गोपालाय नमो नमः ॥ ३६३५ ॥
नमस्ते रामकृष्णाय माधवाय नमो नमः ॥ जना-
र्दन स्वरूपाय देवानां गुरवे नमः ॥ ३६३६ ॥
शङ्खचक्र गदापद्म शोभिनेते नमो नमः ॥ देवदानव
गन्धर्व किन्नर प्रभवे नमः ॥ ३६३७ ॥ नमामि त्वां
गुरुवरं तारकान्त विलोचनम् ॥ मुक्तिप्रदं विघ्नहरम् ॥
वेधसं त्वां नमाम्यहम् ॥ ३६३८ ॥ नमामित्वां सुरवरं
कौशल्यानन्दवर्द्धनम् ॥ दशाननप्रशमनं रामचन्द्रं नमा-
म्यहम् ॥ ३६३९ ॥

॥ प्रमाणिका छन्द ॥

नमामि कंजलोचनं ॥ नमामि पापमोचनं ॥ नमामि
हे सुरेश्वरं ॥ नमामि हे महेश्वरं ॥३६४०॥ नमामि
दानवं अरिं ॥ नमामि केशवं हरिं ॥ नमामि माधवं

प्रभुं ॥ नमामि श्रीपतिं स्वभुं ॥ २६४१ ॥ नमामि लोक रक्षकं ॥ नमामि गर्व्व भक्षकं ॥ नमामि वेधसं प्रभूं ॥ नमामि श्रीमर्मं प्रभूं ॥२६४२॥ नमामि लोक पालकं ॥ नमामि यातु घालकं ॥ नमामि मेघवाहनं ॥ नमामि देव पाश्विनं ॥२६४३॥ नमामि हे प्रभाकरं ॥ नमामि हे तमोहरं ॥ नमामि दीन पक्षकं ॥ नमामि सिंह रक्षकं ॥ २६४४ ॥

कुण्डलिया छन्द ॥

काण्ड उत्तरा भषत हौ शुनौ भक्त मन लाय ॥ राज तख्त प्रभुको मिले प्रजा सर्व सुख पाय ॥ प्रजा सर्व्व सुख पाय अमर मङ्गल सब गावैं ॥ वय भुवनकी मध्य धर्म्मको पन्थ चलावैं ॥ भणे खालसा सिंह इष्ट गुरुदेव मनाये ॥ भव सागरते तरै ग्रन्थ जो पाठ कराये ॥ २६४५ ॥

अथ श्रीभरत मिलाप।

॥ लावनी चक्रसुदर्शन ॥

बीत गये जब वर्ष चतुर्दश भरत शोच करते भारी ॥ क्या कारण गृह नाथ आय नहि मोह छोड़ मुझको मारो ॥ अहोभाग्य लक्ष्मण जग माही यश गावत सुर विस्तारे ॥ जो करणी मम नाथ विचारें

कीट कल्प नहिं निस्तारे। कुटिल जानकै साथ न कीना मुझे प्रभो सारङ्ग धारी॥ क्या कारण गृह नाथ आय नहिं मोह छोड़ मुझको मारी ॥२६४६॥ दुखो तोपसी ग्रोभ्रको करते फड़की दक्षिण कर भाई॥ शगुन देखको भखो भरत भायें सबको अति हरखाई॥ आज अवश्य नाथ मम आवें सुनत सभासद हर्ष उठे॥ वर्ष चतुर्दशकी दुख भागे नाम आगमन सब्ब छुटे॥ भरत मगन हो प्रभो पादुका का अर्चन कीनो भारी॥ क्या कारण गृह नाथ आय नहिं मोह छोड़ मुझको मारी॥ २६४७॥ विप्ररूप धरि आय भरतको हर्ष पवन सुत बतलाए॥ जिनके कारण राज छोड़ कीना वासा कानन आए॥ जाको नाम रटो निश वासर शोक पड़ा जाका भाई॥ सो आवत प्रभु गगण पन्थ है अनुज सहित सीता माई॥ सुनत भरत आनन्द सिन्धुमें अवगाहन करि दुख टारी॥ क्या कारण गृह नाथ आव नहिं मोह छोड़ मुझको मारी॥२६४८॥ कहा भरतजी तात कहांते आयं प्राण शीतल कीना॥ मुझे परम प्रिय वचन सुना अरि कष्ट दहन सब हर लीना॥ कहा विप्र करजोड़ आपना नाम भरतको समुझाये॥ मैं राघवको दास पवन सुत हनूमान ख्याती पाये॥ हर्ष भरत

भेटे उठ सादर प्रेम हृदय धरिके भारी ॥ क्या कारण गृह नाथ आय नहिं मोह छोड़ मुझको मारी ॥ ३६४९ ॥ भणे भरत पुन पवन पुत्रको क्या देवें तुझको भाई ॥ नहीं पदारथ ऐसा तुझसे होय उरिण दे कर लाऊं ॥ कहो तात निज दास जानके नाथ कपीस्मरण कीना ॥ जोड़ भुजादल हनुमान प्रभु प्रीति बोल खुशकर दीना ॥ सुनत वचन भरत भटते लोचनते भरते वारी ॥ क्या कारण गृह नाथ आय नहिं मोह छोड़ मुझको मारी ॥३६५०॥ समाचार यह भरत भवनमो भणे प्रभु सबको जाये ॥ कौशल्यादिक मात सर्व्व सुनके मनमो अति हरषाये ॥ पुरवासी सब खबर पायके वृद्ध युवा वालक धावें ॥ नर नारी सब चले भेटने नाथ कहां पूंछत जावें ॥ चले भरत ले विप्र सभासद प्रेम वहुत मनमो धारी क्या कारण गृह नाथ आय नहिं मोह छोड़ मुझको मारी ॥ ३६५१ ॥ चले वहांसे रामचन्द्र जब औधि विषे पहुंचे आए ॥ कहैं कपीश्वरको रघुराई सुनो सखा चितमो लाए ॥ जन्मभूमि मेरी यह पावन जौन करे दर्शन पाई ॥ मम समीप सो वासको पावें स्नान करे सरयू माई ॥ दूसी तीरसे औध महा तम राम भणे मुखते भारी ॥ क्या कारण

गृहनाथ आय नहिं मोह छोड़ मुझको मारी ॥२६५२॥
पश्च भरतको रामचन्द्र पुष्पकसे उतरे फौज लिये ॥
वह पुष्पकको नावाहनकी पास रवाना नाथ किये ॥
उतसे भरत जोड़ कर आये इतसे लछमण राम चले ॥
चरण पकड़के भरतजी रोते राम उठा झट मिले
गले ॥ जोड़ भुजादल भरत जानकीके पदमो
मस्तकलागे ॥ क्या कारण गृहनाथ आय नहिं मोह
छोड़ मुझको मारी ॥ २६५३ ॥ लछमणकोन प्रणाम
भरतको हर्ष भरत झपटे गलमो ॥ जस मछली सूखेसे
भाई धरै प्राण जाकर जलमो ॥ मिलि शत्रुघ्न राम-
लछमणके पदमो मस्तकनाये ॥ हर्ष युगल भ्राता धरि
भाई मिले परस्पर गल आये ॥ मिलिमिलिके
इस्तोर भ्रात युग हर्ष बड़े दिलमो भारी ॥ क्या
कारण गृहनाथ आय नहिं मोह छोड़ मुझको मारी ॥
२६५४ ॥ गुरु वशिष्ठ आदिकद्विजको रघुनाथ हर्ष
प्रणिपात किया ॥ विप्र सबै पढ़ि वेदमन्त्र कल्याण
बोलकर पुष्पदिया ॥ प्रजा कुसुमको फेंक चतुर्दिश
नजरकरैं प्रभुको पाई ॥ यथा उचित सन्मानको कर के
चले भवन ईश्वर भाई ॥ कौशल्या आदिक सब
माता सुत कारण आईं द्वारी ॥ क्या कारण गृहनाथ
आय नहिं मोह छोड़ मुझको मारी ॥ २६५५ ॥

प्रथमत: रघुवीर शीकयीको जाकरि प्रणिपात किया ॥ निरखि रामको लज्जातुरहो मनमनमी आशीस दिया ॥ कौशल्या सौं मिलि प्रभो पदमो जाकरि मस्तक नाई ॥ गर्व्व गर्व्वके कोटकोट आशीस हुलस दीना माई ॥ हुवो तौर सब मातसे जाकर मिले प्रभो शारङ्ग-धारी ॥ क्या कारण रहनाथ आय नहिं मोह छोड़ मुझको मारी ॥ ३६५६ ॥ मिलो जानकी मात शाथ सबके पदमो मस्तक नाई ॥ कौशल्यादिक शाथ खुशी हो आशीर्व्वाद किया आई ॥ मात सर्व्वको प्रणी-पातकर मिलिऔर लक्ष्मण आये ॥ सब जननीभि धन्य-धन्य सुतबोलगोदलीनाधाये ॥ आशीर्व्वाद किया सब माता पुलक पुलक मनमो भारी ॥ क्या कारण रहनाथ आय नहिं मोह छोड़ मुझको मारी ॥ ३६५७ ॥ भेंट प्रभू सबसे पद्य भाई बाहर मन्दिरके आये ॥ हर्ष हर्षके नाथ भणे रणहाल सभासदको गाये ॥ जौन जौन जो काज किया सबकाले नाम कहा भाई ॥ कहां तकलसो लिखूं ग्रन्थ मो अन्त नहीं शारद पाई ॥ प्रेमगाल निज फौज सर्व्वको दीना भोजन दैत्यारी ॥ क्या कारण रहनाथ आय नहिं मोह छोड़ मुझको मारी ॥ ३६५८ ॥ चक्र सुदर्शन आदि गुरुका पद्य भणे सबको गाए ॥ रामनाम

विन कलिकलुषते मोक्ष नहीं होवे पाप ॥ अत पाहिक आचार दान सबसे उत्तम जानो भाई ॥ आदिगुरूका नाम जौन भवसागर सो तारै जाई ॥ सिंह मदनगोपाल छोड़ जञ्जाल भजोसारङ्गधारी ॥ क्या कारण गुडनाथ पाय नहिं माइ छोड़ मुझको मारी ॥ २६५८ ॥

अथ श्रीरामचन्द्रजी का राज्याभिषेक ।

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

वानर भालुक यातुगण नर स्वरूपको धार ॥ पश्च पश्च सब नगरको पहुंचे सभा मझार ॥ पहुंचे सभा मझार भरत करजोड़ बुलावें ॥ तब शासनको धार पादुकाको मै लावें ॥ यथा शक्ति महराज राजको काज कराई ॥ अब करि हौं तव सेव तख्त वैठो रघुराई ॥ २६६० ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

सुनि रघुपति मनमो हरषाये ॥ शिर चुम्बन करि भाष सुनाये ॥ त्रिभुवन सुयश भोज तव गावें ॥ क्या उपमा मै तोर करावें ॥२६६१॥ असमय आशीर्वाद कराये ॥ देवन्ह सर्ब्ब पहुंचे तव आये ॥ गुरु वशिष्ठ

जोतिष द्विज आई ॥ ज्योतिष शास्त्र पथ्य बतलाई ॥ ३६६२ ॥ चैत मास वासर शुभ पावैं ॥ पुनर्ब्बसु आगत काल आवैं ॥ जट बाकलको दूर कराई ॥ दीजै राज रामको भाई ॥ ३६६३ ॥ सुनत प्रजा सब हर्ष निधाये ॥ निज निज भवन रच्यो चितलाये ॥ रङ्ग रङ्गके ध्वजा उड़ाई ॥ द्वार कुम्भ बाजा बजवाई ॥ ३६६४ ॥ नाच रङ्ग बहु आरत लगाए ॥ अमरावति को दीन लजाए ॥ हर्ष भरत मनमो आये ॥ माल बाज कर भवन सजायं ॥ ३६६५ ॥ नगर नगरमो खबर जनाई ॥ प्रात तख्त बैठैं रघुराई ॥ अधीवास प्रभु आज करावैं ॥ रावरङ्क सबको बुलवावैं ॥३६६६॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

आय निमन्त्रण रामके राजा रङ्क फकीर ॥ यथा शक्ति लै नजरको आय जहां रघुवीर ॥ आय जहां रघुवीर निरख मङ्गल सब गावैं ॥ गुरु वशिष्ठ कुल पुज्य पथ्य मनमो हरषावैं ॥ अधीवास मुनि कीन वेदकै मन्त्र अलाई ॥ तोप नगाड़ा दगे झमाझम साज बजाई ॥ ३६६७ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

मर्कट भालु निरखि हरषावैं ॥ जय जय राम-चन्द्र जय गावैं ॥ ब्रह्मादिक निर्जर सब आए ॥

अग्रषा फुलौंकी बग्याग ॥ २६६८ ॥ भूसुरको दान करावैं ॥ निर्धन धनी होय गृह जावैं ॥ पञ्च पाक कौशल्या कीना ॥ खवर वेद पञ्जनको दीना ॥ २६६९ ॥ कौशलपति लहेय बुलाई ॥ सेन्य सहित आए रघुराई ॥ भोजन करें मात हरषावैं ॥ राग रङ्ग करि रात्रि कटावैं ॥ २६७० ॥ प्रात भरत नल नील बुलाए ॥ जाम्बुवान पवन सुत आए ॥ तिन सबको युग सिन्धु पठाई ॥ लीना जीवन शीघ्र मगाई ॥ २६७१ ॥ पौर पौर वानर पठवाये ॥ सब तीरथके वन मगवाये ॥ तब आनन्द होय रघुराई ॥ कपहुँ अनुजगणको हटवाई २६७२॥ पुन निज दूर कपहुँ कराये ॥ स्नान प्रवर सबको करवाये ॥ सिया सहित मज्जन रघुराई ॥ पुन कीना मङ्गल द्विज गाई ॥ २६७३ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

पीताम्बर भूषण सकल प्रवरजको पहिराय ॥ पुन रघुपति निज अङ्गको दीना खूब सजाय ॥ दीना खूबसजाय सिंहासन पर प्रभु आए ॥ वामजानकी मात तिष्ठ मनमा हरषाए ॥ लक्ष्मण धारैं छत्र प्रभो मस्तकमो आई ॥ भरत फेरते चमर व्यजन शत्रुघ्न कराई ॥ २६७४ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

जय जय शब्द सबै गण गावैं ॥ पुष्पवृष्टि सब शिव-कारावैं ॥ बाजन सब्बं बहु बजवाऊ ॥ महा कोलाहल दीन मचाई ॥ ३६७५ ॥ वेदमन्त्र सब विप्र पढ़ाए ॥ गुरु वशिष्ठ शिरतिलककराए ॥ ब्रह्मादिक निर्ज्जरगण आवैं ॥ प्रभुको प्राभृत भेंटकरावैं ॥ ३६७६ ॥ महा-वीर प्रभु निकट रहायं ॥ सर्कोश्वर लङ्केश्वर आयं ॥ प्रथमत: उपहारकराये ॥ तब उपदा सब भूपधराये ॥ ३६७७ ॥ पुष्पमालिले दीन चढ़ाई ॥ कोकनिसकी प्रेमसो गाई ॥ प्रजा सब्बे पहुंचे तब आये ॥ यथा-शक्ति उपयाह्यकराये ॥ ३६७८ ॥ दीन बभुक्षुद्वारजो आयं ॥ सबको रघुपति वित्तलुटायं ॥ कोकविको छविभाषसकावैं ॥ शारदशेष लिखतथकजावैं ॥३६७९॥ सैन्य सर्व्वकोनाथ बुलाए ॥ बाहा लेहु सरजीजो भाए ॥ जो जो सर्व्व अस्सवतलावैं ॥ सीताको प्रभु दानकरावैं ॥ ३६८० ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

सगबाञ्छितलेदासको सैन्य सर्व्वं हरषाय ॥ गन्ध-वदज प्रभु चरणका लिखें ध्यानलगाय ॥ लिखें ध्यान-लगाय पद्म भुजा हरषावैं ॥ गजमुक्ताका हार आपनी

हाम करावें ॥ महावीरलैहाररदनते कूंच बहाये ॥
भवै लछमण पश्य सभासदको खिजलाये ॥ ३६८१ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

आखिरमर्कटवीरकहावैं ॥ जातिस्वभावकहां तब
जावैं ॥ भवै प्रभो शुनकै समुझाई ॥ पूछो हेतु वीरते
भाई ॥ ३६८२ ॥ शुनत वचन हनुमन्तबतावैं ॥ श्रेष्ठ-
जानमें ग्रहन करावैं ॥ रामनाम तामें नहि पाई ॥
तिह कारनमें कूंचबहाई ॥ ३६८३ ॥ शुनवी लछमण
वीर भलाये ॥ तब तनमो नहि नाम लखाये ॥ करी
त्याग तनको निजभाई ॥ नाम शून्य क्यों गात धराई
॥ ३६८४ ॥ शुनत वीर हनुमन्तरिसाये ॥ हृदयचीर
प्रभुनाम दिखाये ॥ निरख सभासद माथ निवावैं ॥
लछमण धन्य धन्य भणिगावैं ॥ ३६८५ ॥ तुम प्रभुको
जानो हनुमाना ॥ अरु तुमको जाने भगवाना ॥ मै
लघुमति नहि ताड़मकाए ॥ ताते मर्कट बोल
हसाए ॥ ३६८६ ॥ भवै पवनसुतशीर्ष निवाई ॥
क्या जानूं भक्ती रघुराई ॥ शुनत वचन रघुपति हर-
षाये ॥ सीता सहित भवनमो आये ॥ ३६८७ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

करि प्रणाम सब प्रभुको भूपनको पठवाय ॥ अब
पाक करवायके बलय सर्व बुलवाय ॥ बलय सर्व

सुलवाय प्रभो भोजनको दोना अन्न खाय हनुमन्त अन्न सोता बहु दोना । ति को भो पुन खाय और मांगें हरषाये ॥ तब भूप घबड़ाय तिष्ठ क र ध्यान लगाये ॥ ३६८८ ॥

॥ पादाकुलक छन्द

ध्यान योगते कीन विच ॥ संहब वानर अव-तारा ॥ इनका उदर भरा नहिं अए ॥ ल तगल न सोता द्रुत आए ॥ ३६८९ ॥ नम वाय मन्त्र प ढ़ माई ॥ दोना मसकमा छड़ माई ॥ हनुमान कर जोड़ अमावें ॥ तब महिमाको भाष मनावें ॥ ३६९० ॥ उदर पूर्ण भयो मम माई ॥ तब सोता हंस याल रखाई ॥ करि प्राशन मुख धोन करावें ॥ निज निज भवन यातु कपि जावें ॥ ३६९१ ॥ पुष्पक नरवाहन पे आयं ॥ ताको यत्न राज समुझायं ॥ जो निदेश रघुनाथ करावें ॥ सो निशवासर जाय बजावें ॥ ३६९२ ॥ जब ईश्वर निज लोक सिधावें ॥ तब पुन लौट पास मम आवें ॥ शुन पुष्पक प्रस्थान करए ॥ कहा हाल रघुपतिको आए ॥ ३६९३ ॥ शुन रघुपति अतिशय हरषाई ॥ दोना पुष्पकको टिकवाई ॥ सुखसे अच्युत राज करावें ॥ सुर नर मुनि मङ्गल सब गावें ॥ ३६९४ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

प्रेमनाल जो राजकी शुने कथा चितलाय ॥ ताको सब सम्पद मिले अन्त स्वर्गसो जाय ॥ अन्त स्वर्गसो जाय राम जपतेजो भाई ॥ ताकों जो फल होयँ भाषमुखसे नहिं जाई ॥ भवै खालसा सिंह लघूमतिते क्या गावैं ॥ शारद गणपतिशेष अन्कआका नहिं पावैं ॥ ३६९५ ॥

अथ श्रीरामचन्द्रजी कर्तृक श्रीलक्ष्मणजीको वरप्राप्ति।

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

प्रातहोत श्रीरामचन्द्र राजतख्त पर जाय ॥ बैठे सभा लगायकै यतीमुनी बुलवाय ॥ यती मुनी बुलवाय अगस्त्य भवे हरषाये ॥ कहो प्रभो अब सत्य-प्रधन पख भ्रात कराये ॥ मेघनादको घातकौनकीना रघु राई ॥ भवे प्रभो मुखकाय लघूभ्राता मम घाई ॥३६९६॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

शुन कुम्भज अतिशय हरषाये ॥ धन्य धन्य लक्ष्मण बतलाये ॥ को जगमो असकाज कराई ॥ जो

तब अनुजकीन रघुराई ॥ ३६९७ ॥ शुन नारायण ताहि बतावैं ॥ कुम्भकर्ण रावण मेघावैं ॥ जो त्रिभुवनको कैद कराये ॥ जाते इन्द्रशमन भयपाये ॥ ३६९८ ॥ ताका कछु नहि कौन बड़ाई ॥ मेघनाद हन्ता सुण भाई ॥ मैत्रावरुणि विहसि बतलावैं ॥ लक्ष्मण तुल्य न काज करावैं ॥ ३६९९ ॥ वर्ष चतुर्दश जो रघुराई ॥ निद्रा प्राशन त्याग कराई ॥ देखैं नारि वदन नहीं जोई ॥ मारैं इन्द्रजीतको सोई ॥ ३७०० ॥ शुनत विहँस राघव बतलावैं ॥ नित भोजन मम अवर करावैं ॥ सीताका सेवा मुनिराई ॥ नित करते लक्ष्मण मम जाई ॥ ३७०१ ॥ जब हम लोगन शयन करावैं ॥ तब अवरज सूतन मम जावैं ॥ शुनत कुम्भ सम्भव बतलाये ॥ यह प्रतीत मुझको नहि आये ॥ ३७०२ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

पूछौं लक्ष्मणते प्रभो सभामध्य बुलवाय ॥ सत्या सत्य मम वचन यह तब प्रतीत होजाय ॥ तब प्रतीत होजाय राम लक्ष्मण बुलवाए ॥ दै करि अपनो शपथ प्रभो पूछैं मुसकाए ॥ वर्ष चतुर्दश वास तात कीना बन जाई ॥ भोजनको फल मूल कौन देता मम भाई ॥ ३७०३ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

पाणिजोड़ लक्ष्मण बतलाये ॥ देवें कन्दमूल मै जाये ॥ पुन पूछें ईश्वर सुखदाई ॥ सीताको चीन्हो तुम भाई ॥ ३७०४ ॥ जोड़ भुजाद्वय वीर भलाए ॥ दर्शन कहूं चरण मै जाए ॥ पादपद्म लखि चीन्ह सकावें ॥ ताका प्रभो प्रमाण बतावें ॥ ३७०५ ॥ जब भूषण माताके आई ॥ दीना मर्क कन्त रघुराई ॥ चीन्हनको मुझको दिखलाए ॥ चरण आभरण पश्य बताए॥३७०६॥ गल शिरको भूषण दिखलावें ॥ ताको नाथ न चीन्ह सकावें ॥ तब पूछें तिनको रघुराई ॥ मुझसे कन्दमूल जो पाई ॥ ३७०७ ॥ ताको भोजन आप करायें ॥ सत्य वचन मुझको बतलावें ॥ लक्ष्मण विहस भयो शिरनाई ॥ ताका हाल शुनो रघुराई ॥ ३७०८ ॥ जब फलको बनते मैं लावें ॥ भाग चतु करि नाथ अलावें ॥ चन्द्र भाग सीताको दीजे ॥ दूसर भाग आप रख लीजे ॥ ३७०९ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

शुनत वचन मैं आपके गुम्म भाग ले नाथ ॥ भाग मही दै मातको दूसरको ले साथ ॥ दूसरको ले साथ कुटीके मध्य रखाये ॥ इस्तोर वर्ष दिश वेद नित्य उपवास कराये ॥ प्राणनको रघुनाथ कभी नहीं

आप मलावैं ॥ रवि निदेशको पाय तूणके मध्य रखावें ॥ ३७१० ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

चक्रपाणि सुणिके घबड़ाए ॥ हनूमानते तूण मगाए ॥ पश्य प्रभो कलकी कलपावें ॥ धन्य धन्य कलशोद्भव गावैं ॥३७११॥ सुन वैंकुण्ठ भणे कलपाई ॥ निद्रा भी त्यागी क्या भाई ॥ जोड़ पाणि लक्ष्मण बतलावैं ॥ प्रथम दिवस बनमो जब आवैं ॥३७१२॥ तब समीप निद्रा मम आई ॥ खीचबाण ताको धम-काऊं ॥ मै सेवा करणे बन आये ॥ क्यों आ करि तूं मोहिं सतावे ॥ ३७१३ ॥ पुन समीप बनमो मम आवैं ॥ मार रोप यमलोक पठावें ॥ जब राजा होवें रघुराई ॥ तब हीजे मुझको दुख आई ॥ ॥ ३७१४ ॥ सुन निद्रा प्रस्थान कराए ॥ पहुची तौनगतो कल पाए ॥ बैठे तख्त आप जब आई ॥ गिरे छत्र ले करि मे भाई ॥ ३७१५ ॥ लाज पाय अति मौन रहाए ॥ क्लेश बहुत दीना वह आए ॥ पूर्व प्रतिज्ञा हेतु गुसांई ॥ कष्ट सहा तिसकामे भाई ॥ ३७१६ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

सुन लक्ष्मणके बचनको रामचन्द्र कलपाय ॥ लेकरि

अपने गोदमे करि क्रन्दन बतलाय ॥ करि क्रन्दन बतलाय और अवतार धरावैं ॥ पूर्वज होवैं आप अवरहो टहल करावैं ॥ भयो खालसा सिंह कृष्ण अवतार धराई ॥ दीना बदला नाथ अनुजको ज्येष्ठ बनाई ॥ ३७१७ ॥

अथ दैत्यवंसोपाख्यान।

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

लक्ष्मणको बरदान दे भयो विप्रको नाथ ॥ अन्तर्यामी आप हैं कहो अनुग्रह साथ ॥ कहो अनुग्रह साथ जन्म असपका गाये ॥ क्यों करि होयो यातु कहो मुझको समुझाये ॥ निधि भक्षक तब भयो शुनो ईश्वर चितलाई ॥ प्रथमतः जब रची सृष्टि ब्रह्मा हरषाई ॥ ३७१८ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

प्राणी भू उत्पत्ति कराए ॥ ताको पद्मासन बतलाए ॥ जो प्राणी मै सृजन करावैं ॥ ताको पालन आप करावैं ॥३७१९॥ शुनि प्राणीसो गर्ज्ज भलाई ॥ यह सेवा नहिं होन सकाई ॥ भयो विधाता कोप कराए ॥ हो वे दुष्ट निशाचर जाए ॥ ३७२० ॥

शाप पाय प्राणो रघुराई ॥ हेतो नाम यातु तनपाई ॥ विदुत केशरीनाम कुमारी ॥ विधि पुत्री थी अति सुकुमारी ॥ ३७२१ ॥ हेती ताहि विवाह कराए ॥ मन्दार शैल पर वास कराए ॥ निश वासर भार्य्या लै हेता ॥ केलि करैं मनमो हो जेतो ॥ ३७२२ ॥ गर्भवती पत्नी होजाए ॥ तब हेती मनमें घबड़ाए ॥ जब वनिता सुत प्रसव कराई ॥ ताको हेती दीन बहाई ॥ ३७२३ ॥ मात पिता नहि स्नेह करावैं ॥ सुधापाय अर्भकफलपावैं ॥ महादेव देखन सुतपाये ॥ अनाथ जान वरदान अलाये ॥ ३७२४ ॥

कुण्डलिया छन्द ॥

अर्भका वर पायकै युवा होय ततकाल ॥ व्याती तीन सुकेशको पायो भवते बाल ॥ पावो भवते बाल अभय देवो वर दीना ॥ सुनत हाल गन्धर्व दान कन्या निजकीना ॥ ताके लोचन पुत्र भये सुन्दर रघु राई ॥ करि करि तपस कठोर प्रजापतिसे वरपाई ॥३७२५॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

माल्यवान सुत प्रथम कहावैं ॥ मध्यम माली नाम रखावैं ॥ अकुल तृतीय नाम सुमाली ॥ सुर नर मुनि सबको हैगाली ॥ ३७२६ ॥ सुत जब युवा अवस्था पाए ॥ गन्धर्व्व सुतासे व्याह कराए ॥ माल्य-

बाम माली पञ्च भाई ॥ पुत्र रुद्र उत्पत्ति कराई ॥ ३७२७ ॥ बीरबसु सूचिक पञ्च भाई ॥ ताल भङ्ग मख्खकोपनपाई ॥ सिंहनाद माधव कहिलावैं ॥ कम्पन बीर प्रहस्त रखावैं ॥ ३७२८ ॥ पिङ्गलाक्ष सुनिताक्ष कहाई ॥ सवाजीत एकादश भाई ॥ कन्या चन्द्रशेषमो जावैं ॥ निकषातातको नाम रखावैं ॥ ३७२९ ॥ तीन भई रावणकी माई ॥ ताको कथा कहौंगा गाई ॥ पुत्र सुमाली जो जनमाये ॥ धर्मसील युग भ्रात रहाये ॥ ३७३० ॥ तिनको नाम शुनो रघुराई ॥ बीर अनल पञ्च भ्रात कहाई ॥ सम्पाती वा भीम कहावैं ॥ कौन विभीषण साथ रहावैं ॥ ३७३१ ॥ छन ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

सुन सब पुत्रनका प्रभो बढ़ा खूब परिवार ॥ विश्वकार्म्मको लायकै कीना यातु विचार ॥ कीना यातु विचार कहां मे भवन बनावैं ॥ विश्वकर्म्मा तब शोचि यातुको युक्ति बतावैं ॥ गरुड़ पवन करि युद्ध कनक पर्व्वतको धाई ॥ फेंका मेरु शृङ्ग त्रिकूट यावन पर लाई ॥ ३७३२ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

सो कञ्चन लै भवन बनावैं ॥ त्रिकुट शैल सोभा

अति पावैं ॥ सुनकै बातु सब्बं हरषाये ॥ पहुंचे त्रिकुटाद्रि पर जाये ॥३७३३ ॥ रच रचकै मन्दिर बनवाई ॥ ताका शोभा भाष न जाई ॥ गड़ सद्मन सर कूप बनाए ॥ बन उपवन बहु भांत लगाए ॥ ३७३४॥ तिसमो वास दनुंज सब कीना ॥ लङ्कापुर ख्याती रख दीना ॥ माल्यवान उत राज कराए ॥ लूटे अमर लोकासे। आए ॥ ३७३५ ॥ धन भूरी एकत्र कराई ॥ भृत्य तुल्य सुरको खटवाई ॥ कष्ट अनेक देव सब पाए॥ गिरि कैलाश पयान कराए ॥३७३६॥ शङ्करको सब हाल जनाई ॥ कहा शम्भु सुरको समुझाई ॥ जो असुरन का बुरातकावैं ॥ तीन छिन्न छणमे। हो जावैं ॥ ३७३७ ॥ विष्णूको निज कष्ट जनाई ॥ दीजै कौणपको खपवाई ॥ करि प्रणाम सब विबुध सिधाए ॥ नारागणको हाल जनाए ॥ ३७३८ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

कहैं प्रभो सब अमरको अब असुरनों आय ॥ तबदीजे मुझको खबर देवैं ताहि खपाय ॥ देवै ताहि खपाय शुनत नारदमुनि आए ॥ लङ्कामो सब हालयातको भाष सुनाए ॥ सुन कब्बुंर करि कोप

गर्ग्य मुनिधौ वतलाई ॥ नारायणको प्रात नाथ देवै मे धाई ॥ ३७३९ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

शुन नारद मनमो मुशकावैं ॥ भुसमो चिनगी छोड़ सिधावैं ॥ शुन ब्रह्मा लङ्कामो आए ॥ भांत भांत उपदेश कराए ॥३७४०॥ आसर सर्व्व एक नहिं माना ॥ नारायणा जावैं भगवाना ॥ घेर गोलोक लयो सव धाई ॥ शार्द्दूल सम शब्द कराई ॥३७४१॥ शुनके गरूड़ नाथ वुलवाए ॥ चढ़ि तापर रणमो चलि आए ॥ भयो परस्पर घोर लड़ाई ॥ कोप धार प्रभु चक्र चलाई ॥ ३७४२ ॥ मालीका शिर काटि गिराये ॥ भागि युग्म भ्रात भय पाये ॥ चक्र-पाणि वोलैं धमकाई ॥ रहो अधो भूवनमो आई ॥ ३७४३ ॥ अवनीमोदेखनजो पावैं ॥ तत्तकाल यमलोक पठावैं ॥ शुनत वचन दानव भय पाये ॥ वली भवनमो वास कराये ॥ ३७४४ ॥ सुरनर मुनि आदिक सुखपाई ॥ मख अर्चन आरम्भकराई ॥ अव ते वह सव राज कराये ॥ तव ते मख होने नहि पाये ॥ ३७४५ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

लक्ष्मा पितु भञ्जक भये प्रभुको अस समझाय ॥

पुन अंगस्त्यको हरि कहैं कहो मुनी हरषाय ॥ कहो मुनी हरषाय गरुड़ वायूरण गाई ॥ कहैं तपी वर हर्ष प्रात भाषे सोघाई ॥ भयो खालसा सिंह विप्र प्रस्थान कराए ॥ सभा सहित रघु नाथ आपने भवन सिधाए ॥ ३७४६ ॥

अथ गरुड़ एवं पवनका युद्ध वर्णनम् ।

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

स्नान दान करि रामचन्द्र राज तख्त पर जाय ॥ बैठे सभा लगायके मुनि अगस्त्य तव आय ॥ मुनि अगस्त्य तव आय प्रभोको विहस अलावैं ॥ सभा सहित चितलाय कथाको श्रवण करावैं ॥ सन्तापन थे विप्र युग्म आत्मज जन्माये ॥ सम्पद भूरी छोड़ स्वर्ग प्रस्थान कराये ॥ ३७४७ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

सुप्रताप सुत प्रथम कहावैं ।। नाम विभाष कनिष्ठ रहावैं ।। ज्येष्ठ सर्ब्ब धन हरण कराई ॥ अनुज भाग मागें जव जाई ॥३७४८॥ तव ताको पूर्व्वज वतलाये ॥ जनक अर्थ नहिं भाग कराये ॥ क्योंकरि मै धन भाग करावैं ॥ शुनि अवरज मनमो कलपावैं ॥ ३७४९ ॥ मुनि वसिष्ठको हाल जनाई ॥ कहा मुनी

सुतको समुझाई ॥ भाग राग धनका सबकीजे ॥ तामे पञ्च ज्येष्ठको दीजे ॥ ३७५० ॥ युग्म आप लिवें सुत जाई ॥ यह तुझको मै नीत बताई ॥ शुभ विभाग प्रस्थान कराए ॥ अग्रजको सब हाल जनाए ॥ ३७५१ ॥ शुनि पुर्ब्बज पति कोप कराई ॥ दीना शाप अनुजको जाई ॥ हो कुञ्जर बनवास-करावैं ॥ शुनि अवरज भी शाप अलावैं ॥ ३७५२ ॥ कच्छप हो सरवरमो जाये ॥ करी निवास काष्टको पाये ॥ आपुसमो असशाप अलाई ॥ गजकच्छप होवैं पख भाई ॥ ३७५३ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

सरवरमो कच्छपगयो बनमो कुञ्जरजाय ॥ कछुक दिवसके बाद गज जलपीने सर आय ॥ जलपीने सर आय धरा कच्छप पद आई ॥ तड़फे मदकल गर्ज्ज कूर्म्म छोड़े नहिं भाई ॥ पूर्ब्बजन्मका पाप चेतगज-राज अलाए ॥ नारायण अघगातपात मुक्तीदो आए ॥ ३७५४ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

हरि प्रेरित कश्यप सुत आएं ॥ गजकच्छपको लीन उठाये ॥ गिरिसुमेरु [illegible] [illegible] ॥ भाजन

भ्रात सिधाए ॥ पूछैं पवन गरुड़ते याते ॥ पल प्राश-नको स्थान न पाई ॥ कीना भ्रष्ट सुरालय पाई ॥ ३७५६ ॥ स्थानान्तर द्रुतगमन करावैं ॥ कष्ट बहुत यावन परपावैं ॥ शुनत वचन खगराज चलाए ॥ क्या करिसको मोर तूं आए ॥ ३७५७ ॥ तव मारुत बोलैं गर्जाई ॥ तोड़ौं शैलजहां पलखाई ॥ भणै गरुड़ नहिं तोड़सकावे ॥ मै रचा यह शैल करावैं ॥ ३७५८ ॥ शुम पृषदश्व अति कोप कराई ॥ शिला-वृष्टि कीना गर्जाई ॥ डैनाको अति गरूड़ वड़ाये ॥ ढाका शैल चतुर्दिंश जोये ॥ ३७५९ ॥ जगत्प्राण झड़खूवमचायो ॥ हेमाद्री नहि तोड़ सकायो ॥ भणै विरिञ्चि गरुड़का आये ॥ सृष्टि नष्ट मेरो होजाये ॥ ३७६० ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

कृपादृष्टि करिके सखा डैना लेहु उठाय ॥ गन्धवाहके कोपते सृष्टि मोर वचिजाय ॥ सृष्टि मोर वचि जाय गरुड़ मनमो कलपाए ॥ एक तरफूसे फांक कीन डैना खसकाए ॥ भणै खालसा सिंह सिन्धुभचक समुझावैं ॥ एक शृङ्गको तोड़ त्रिकुट पर वात गिरावैं ॥ ३७६१ ॥

अथ कुवेरका जन्म।

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

गरुड़ पवनका युद्ध शुन रामचन्द्र हरषाय ॥ पूछन लगे अगस्त्यसे द्विजवर देहु वताय ॥ द्विजवर देहु वताय यातु पाताल सिधाये ॥ तव लङ्कामो राज कौन कीना मुनि भाये ॥ नदि पति भूलुक भयो शुनौ ईश्वर चितलाई ॥ माल्यवानके बाद कुवेर काथोठकुराई ॥ ३७६२ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

रावणके सो ज्येष्ठ रहावैं ॥ तिनका हाल नाथ वतलावैं ॥ ब्रह्मापुत्र पुलस्त्य रहाये ॥ गिरि सुमेरु पर तपस कराये ॥३७६३॥ तृणवृन्द नामक रघुराई ॥ करते विप्र तपस उतजाई ॥ तृणवृन्द कन्या उपजाये ॥ खयस्वराख्याती रखवाये ॥ ३७६४ ॥ जब वह युवा अवस्था पाई ॥ मुनि पुलस्त्यके निकट सिधाई। नृत्य रागकरि रङ्ग मचाए ॥ मुनिवरका तप भङ्ग कराए ॥ ३७६५ ॥ क्रोध होय द्विजश्राप चलाई ॥ गर्भवती होवो तुम जाई ॥ तदापी युवती नहिं मानी ॥ पुन पुलस्त्य दे श्राप वखानी ॥ ३७६६ ॥ योवनके मद नाहिं डराई ॥ दुग्ध युग्मस्तनते तव जाई ॥ गर्भवती कन्या हो भाये ॥ दुग्धभरे

कुचले रघुराये ॥ ३७६७ ॥ लाजपाय युवती घब-
ड़ाई ॥ जनक निकट निजशापजनाई ॥ शुनकै
तृणवृन्द घबड़ाए ॥ भणै तपीश्वरको वह जाये
॥ ३७६८ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

धर्म्म नष्ट मेरो कस्यो दैकन्याको शाप ॥ यव-
ताका पाणीग्रहण कीजैमुनिवर श्राप ॥ कीजैमुनि-
वर श्राप पुलस्त्य विवाह कराये ॥ विश्वश्रवामुनि
नाम पुत्र तिनसी कहिलाये ॥ कीना तपस कठोर
तीन बालक रघुराई ॥ भरद्वाजमुनि सुतालतासि व्याह
कराई ॥ ३७६९ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

लता नाम कन्या वह श्राई ॥ व्रतपतिका प्रार-
म्भ कराई ॥ कान्तसहित तप घोर करायो ॥ धर्म्मवन्त
गर्भक वह आयो ॥ ३७७० ॥ चन्द्रवदन सुरूप
धराई ॥ नाम कुवेर धस्यो वह माई ॥ तप कठोर
कीना सुतजाये ॥ वर देने कमलासन श्राये ॥३७७१॥
इन्द्र वरुण यम पावक श्रावैं ॥ पवन आदि सब लेख
चलावैं ॥ क्या कारण तप घोरकराये ॥ वर लीजै
मरजी जो श्राये ॥ ३७७२ ॥ भणै कुविर प्रणाम
कराई ॥ वरदीजै मरजी जो श्राई ॥ शानकी करनी

लिख हरसाये ॥ करिके अमर धनेश बनायो ॥३७७३॥ पुष्पक ब्रह्मादान करावैं ॥ चढ़ि तापर निज भवन सिधावैं ॥ जनक प्रसूको माथ निवायो ॥ निज तपको वर विहस शुनायो ॥ ३७७४ ॥ शुनवो मात पिता हरषावैं ॥ वासस्थान सुतको बतलावैं ॥ सुनते सुत सम्पत्त बहुपाईं ॥ राजकरो लङ्कामो जाईं ॥ ३७७५ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

शुन कुवेर पितु वचनको करिप्रणाम द्रुतधाय ॥ लङ्कापुरके वीचमो सुखसे राजकराय ॥ सुखसे राजकराय प्रात रघुपति मै आई ॥ रावणका मै जन्म कथा वोलौं समुभाई ॥ भणै खालसा सिंह विप्र प्रस्थान कराये ॥ शभा भयो बरखाश प्रभो मन्दिरमो आये ॥ ३७७६ ॥

अथ रावण तद्भ्रातादिका जन्म एवं तपस्या और लंकामो राज्य।

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

प्रातक्रिया करि रामचन्द्र राजतख्त पर जाय ॥ बैठे सभा लगायके पात्रमित्र बुलवाय ॥ पात्रमित्र बुलवाय अगस्त्यमुनी वर आए ॥ रावण आदिक जन्म मथा बोलैं सब गाए ॥ लङ्कापुरमो धनद राज करते रघराई ॥ अधोभूमिके वीच खबर असुरगण पाई ॥ ३७७७॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

दनुज सर्व्वमिल युक्ति कराये ॥ लङ्का विश्रव-श्रवा सुतपाये ॥ अब अङ्गजमुनिको जो होई ॥ लेवैं राजवांठमो सोई ॥ ३७७८ ॥ अस विचार कन्या बुलवाई ॥ माल्यवान् बोलैं समुझाई ॥ विश्रवश्रवा मुनिको रिझवाए ॥ लीजैपुत्र दानद्रुतजाए ॥ ३७७९॥ तब कौसप रनको दुख जाई ॥ सुनत वचन पुत्री अरमाई ॥ रचिराचके शृङ्गार करायो ॥ मुनि पञ्चानन निकट सिधायो ॥ ३७८० ॥ विश्रवश्रवा

कखि रूप चलावैं ॥ क्या कारण रमणी सुत चावैं ॥
निकषा विहस भणे गिरनाई ॥ पुत्रदानलेने मै
चाई ॥ ३७८१॥ शुनिमुनिवर अतिशय हरषाये ॥
भला भला भणताहि टिकाये ॥ जपतप छोड़ हर्षं
मुनिराई ॥ चरिताको द्रुत रमण कराई ॥३७८२॥
करिमज्जन पुन तपस करावैं ॥ कामातुर रमणी हो
चावैं ॥ पश्य विप्र करि कोप चलाए ॥ क्यों दुष्टा
सन्मुख पुन चाए ॥३७८३॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

विहस नारि द्विजको भणै पुत्र हेतु मै चाव ॥
जब तक सुतपाऊ नही रमण तजा नहिं जाय ॥
रमण तजा नहि जाय केलि दिनराति करावैं ॥
शुनत वचन करि कोप तपी बरशाप चलावैं ॥ सुत
होवे तव यातु युग्म कन्या भूहोई ॥ नाश करे तव
वंस सर्व विधवा हो सोई ॥३७८४॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

निकषा शाप शुनत भय पाई ॥ करि क्रन्दन मुनिको
रिझवाई ॥ मुनि मृगेन्द्रवरदान चलावैं ॥ पुत्रचन्द्र
उत्तम जनमावैं ॥३७८५॥ ताते कुल उज्जल तव
होई ॥ विष्णु उपासकहोवै सोई ॥ राज्य करे सुख
को बहु पावैं ॥ सुरनर मुनि ताको यश गावैं ॥३७८६॥

सुनत वचन निकषा हरषाई ॥ मुनि कुटियामो वास कराई ॥ कालपाय सुत प्रसव कराए ॥ वीश भुजा दशमाथ रहाए ॥३७८७॥ पश्य विप्रमनमो हरषायं ॥ रावण ताका नाम रखायं ॥ सुतको मुनि प्रतिपाल कराई ॥ रमण कीन रमणी पुन आई ॥ ३७८८ ॥ काल पाय सुत प्रसव करायो ॥ विश्वश्रवा सुत लखि भय पायो ॥ दासी जो सेवाको पाई ॥ ताको धरि सुत उदर भराई ॥३७८९॥ पश्य विप्र मनमो घबड़ाए ॥ कुम्भकर्ण ख्याती रखवाए ॥ प्रतिपालन सुतका करवाई ॥ रमणी रमण कीन पुन जाई ॥३७९०॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

कालपाय कन्या भई क्या तनका शुभठाम ॥ सूप तुल्य नख निरखके सुपनखा धरि नाम ॥ सुपनखा धरि नाम मुनी पाले रघुराई ॥ लग्न सोधके श्रेष्ठ विप्र पुन रमण कराई ॥ ताते होयो पुत्र बुद्धि निर्म्मल सो पाए ॥ भक्त विभीषण बोल विप्र ख्याती रखवाए ॥३७९१॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

पुत्र चतु कन्या भुजाई ॥ समाचार कौशपगण पाई ॥ माल्यवान धनको वहुलाए ॥ दै मुनिको

प्रणिपात कराए ॥३७९२॥ नाती निरख यातु हर खावैं ॥ करि चुम्बन आशीस करावैं ॥ नारायण ते भय बहु पाये ॥ माल्यवान निज गेह सिधाये ॥३७९३॥ धनद जनक दर्शनको आवैं ॥ यातु सुतासुतको समुझावैं ॥ वीमातृज अग्रज तव आए ॥ तपबल ते धन कन्त कहाए ॥३७९४॥ तव मातामह के पुरजाई ॥ करि ते राज बहुत धनपाई ॥ तव नाना निर्म्मित है लङ्का ॥ भोग करै मनमो नहि शङ्का ॥३७९५॥ ताको मार करो ठकुराई ॥ तव मेरे मन का दुखजाई ॥ सुन दशगर्द्दन विहस बताए ॥ करौं प्रसू मै भी तपजाए ॥३७९६॥ ब्रह्मासे वरको लै मार्इ ॥ राज करौं लङ्कामो जाई ॥ सुनके यातु सुता हरषावैं ॥ तप करणे भय भ्रात सिधावैं ॥३७९७॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

तप कठोर हीमाद्रि पर वन गोकर्ण मोकीन ॥ पश्य तपस सुरपति भयो लेवै सुरपुर छीन ॥ लेवै सुरपुर छीन वरुण बोले भय पाये ॥ वरुणत्व हेतु तप घोर यातु करते यह आये ॥ शमन भयो यम-राज हेतु तप घोर करावैं ॥ निज निज सम्पद निरख लेख दुश तीर अलायैं ॥ ३७९८ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

निर्भर वास सर्व्व असपाई ॥ ब्रह्माको भाषे कलपाई ॥ वाण सहस्र वर्ष तप कीना ॥ वरदानव को कोय न दीना ॥ ३७९९ ॥ ताको सम्पद लीवे आए ॥ हम लोगन तप देख डराए ॥ सुन वेधस प्रस्थान कराई ॥ कहा हर्ष रावणको भाई ॥ ३८०० ॥ तुष्ट होय दैनेवर आये ॥ लेहु निशाचर वर हरषाये ॥ भयो दशानन मुण्ड निवाई ॥ करो अमर प्रभु कृपा कराई ॥ ३८०१ ॥ सुन पद्मासन विहस चलाये ॥ सृष्टि नष्ट मेरो हो जाये ॥ और लेहु दूसर वर भाई ॥ कहा दशानन कोपकराई ॥ ३८०२ ॥ निज वर खे निज भवन सिधावैं ॥ असभण पुन तप घोर करावैं ॥ वर्ष सहस्र वीत जब जाये ॥ मुण्ड चन्द्र निज काट चढ़ाये ॥ ३८०३ ॥ इसी तौर दश मुण्ड चढ़ाई ॥ अयुत वर्ष तप घोर कराई ॥ पश्य तपस ब्रह्मा पुन आये ॥ लेहु पुत्र वर विहस चलाये ॥ ३८०४ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

सुन स्वभृकि वचनको दश कन्धर बतलाय ॥ अमर करो मुझको प्रभो तब वेधस समुझाय ॥ तब वेधस समुझाय अमर करि सृष्टि नशावैं ॥ और चाहि सो लेहु अमर नहिं करण सकावैं ॥ सुनत वचन दश

शीर्ष भये पदमो थिर आये ॥ देव योनि की बीच कोय नहिं मार सकाये ॥ ३८०५ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

पशु लोक जीती मैं आई ॥ जूठे बखड चक्र पुन पाई ॥ शुन ब्रह्मा बोलें मुसकाये ॥ वर दीना मागा जो धाये ॥ ३८०६ ॥ मृत्यु वाचा कीजे निज भाई ॥ राखी ग्रह मो यत्न कराई ॥ यह शरते मृत्यू तव होई ॥ और अस्त्र घाते नहिं कोई ॥ ३८०७ ॥ नर वानरकों वर नहिं पाये ॥ सुनत दशा नन हर्ष चलाये ॥ कहत मनं नर भक्ष हमारा ॥ ताका क्या वरदान तुम्हारा ॥ ३८०८ ॥ शुन चतुरा नन मन मुशकाये ॥ कहा विभीषण निकट सिधाये॥ कीजे वर मरजी जो चाई ॥ भषे विभीषण माथ निवाई ॥ ३८०९ ॥ सदा धर्म्म मो चित्त रहावे ॥ नारायण बिन और न भावे ॥ शुन धाता अतिशय हरषाई ॥ अन्त अन्त भया अमर कराई ॥ ३८१० ॥ कुम्भकर्णकी निकट सिधाए ॥ निरख सर्व्वं निर्ज्जर घबड़ाए ॥ सरस्वतीको दीन पठाई ॥ बैठी मात कण्ठमो चाई ॥ ३८११ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

कमलासन ताको भषे लेहु क्षिप्र वरतात ॥

कुम्भकर्णको कराठसे भयो शारदा मात ॥ भये शारदा मात शयन दिनरात्रि करावैं ॥ भये विधाता हर्ष दिया जो पाप घलावैं ॥ वर पावत तत काल यातु को निद्रा आई ॥ किया अचेतन खूब पश्च रावण भव पाई ॥३८१२॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

चरण पकड़ बिनती बहु कीना ॥ क्या वर बोल आप प्रभु दीना ॥ भये प्रजापति ताहि बुझाई ॥ दै निद्रा वर विश्व बचाई ॥३८१३॥ मास रागतक शयन करावैं ॥ वासर भू जागनको पावैं ॥ जो अकालमो देहु जगाई ॥ ता दिन मृत्यु होय तव भाई ॥३८१४॥ अस स्रष्ट ब्रह्दान चलाए ॥ निज सद्मन प्रस्थान कराए ॥ रावण और बिभीषण भाई ॥ कुम्भकर्णको कांध उठाई ॥३८१५॥ जनक प्रसूके मन्दिर आये ॥ करि प्रणाम वर दान सुनाये ॥ यातु सुता सुनके हरषावैं ॥ विश्वश्रवा मुनि मौन रहावैं ॥३८१६॥ मातामह मातुल सुन आए ॥ भांत भांत कुबुद्धि बताए ॥ चरौ राज लङ्कामो जाई ॥ मार धनदको देहु भगाई ॥३८१७॥ तब रावण तिनको समुझाए ॥ ज्येष्ठ जनक सम वेद बताए ॥ क्यों करि

तिनको मार हठावैं ॥ सुनत दुष्ट दृष्टान्त बतावैं ॥ ३८१८।

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

गरुड़ ज्येष्ठको पकड़की कीना तात प्रहार ॥ वासव पुर्व्वज मारके तिष्टे स्वर्गमझार ॥ तिष्टे स्वर्ग-मझार सुनत रावण ववराये ॥ लङ्का छोड़ी शीघ्र धनदको बोल पठाये ॥ नरवाहन सुन हाल जनकके निकट जनाई ॥ भणे विप्रकलपाय यातु समुझै नहि भाई ॥३८१९॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

तजि लङ्का कैलाश सिधाये ॥ सुखसे अलक वास कराये ॥ धनुज आन निज मोह कराई ॥ दीजै लङ्का होय सहाई ॥३८२०॥ जनक वचन सुन वच्छ डराए ॥ गिरि कैलाश विषे चलि आए ॥ सुर नदिके तट भवन बनाई ॥ माल्य वान आदिक हरषाई ॥ ३८२१ ॥ रावणको ले लङ्का आए ॥ राज तिलक अभिषेक कराए ॥ सुखसे रावण राज करावैं ॥ साधु सन्तको त्रास दिखावैं ॥ ३८२२ ॥ मृगया हेतु विपिन मो आये ॥ मयदानव अति लखि हरषाये ॥ निज पुत्री मन्दोदरि लाई ॥ रावणको वह दान कराई ॥ ३८२३ ॥ गतो शैल समन

को भम्नो ॥ कौतुक मो दीना हो मम्नो ॥ जो मारा लक्ष्मणको पाए ॥ प्राण दान हनुमन्त कराए ॥ ३८२४ ॥ नाम विमोचन राज कुमारी ॥ कुम्भ कर्ण पाई देवारी ॥ गन्धर्व सुता सरमा कहिवावैं ॥ ताहि विभिषण व्याह करावैं ॥ ३८२५ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

इमी तौर त्रय भ्रातने करि विवाह रघुनाथ ॥ लङ्कामो आये सवे ले ले भार्य्या साथ ॥ ले ले भार्य्या साथ खूव शृङ्गार कराए ॥ रसका प्यासी पौरु दुष्ट रावण ववराए ॥ भये खालसासिंह वोलि मुनि ध्यान कराई ॥ पौर कथा पुन प्राननाथ वोलों मे पाई ॥ ३८२६ ॥

अथ कुबेर रावणका युद्ध वर्णनम् ।

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

प्रमे होत पाये मुनी मन मोहर्ष अपार ॥ स्नान दान करि रामचन्द्र पहुंचे सभा मझार ॥ पहुंचे सभा मझार मुनीको सुण्ड निवाये ॥ दे करि आशीर्वाद अगस्त्य भये हरषाये ॥ रसका पौंणा पौरु प्रभो रावण ववराई ॥ कीना वहुत विवाह पुत्र वहुता जनमाई ॥ ३८२७ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

लक्ष पुत्र योधा वड़ जाये ॥ सवा लक्ष नाती पुन पाए ॥ तिन सबको रघुनाथ खपाई ॥ कौना राज अवधि मो आई ॥३८२८॥ वासवको नन्दन वन लाये ॥ सुर नर मुनि वहुता दुख पाये ॥ जप तप अर्चन वन्द कराई ॥ कहा कुवेर दूत पठवाई ॥ ३८२९ ॥ उत्तम कुलमो जन्म धराए ॥ भ्रष्टाचार क्यो करण लगाए ॥ लेख शन्तसे वैर कराई ॥ क्या सुखको पावोगे भाई ॥ ३८३० ॥ पाप बुद्धि को दूर कराये ॥ साधूका सेवा कर जाये ॥ शुभ उपदेश यातु वतलावैं ॥ हाशकर्म्म मुझको सिखलावैं ॥ ३८३१ ॥ मैभूभुज ब्राह्मण सुत होवैं ॥ शन्तनका क्यो करि पद धोवैं ॥ शूद्र धर्म्म मुझको वतलाए ॥ कछुक त्रास चित मो नहि लाए ॥३८३२॥ अद्य ताहि यमलोक पठाऊं ॥ देवैंताका धर्म्म दिखाऊं ॥ असभग गर्ज्ज खड्‌ग लै धाये ॥ पकड़ दूतका मुण्ड खपाये ॥३८३३॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

चला दुन्दुभा ठोकके यातु वलय लै साथ ॥ कैलाश शैल पर जायके भिड़ा अस्त्र लै हाथ ॥ भिड़ा अस्त्र लै हाथ यक्ष निज कटक पठाई ॥ योग वृद्धथा नाम लड़ा सन्मुख सो धाई ॥ कौना युद्ध अपार

यातु बहुता बह घाए ॥ तब रावण ले बाण आप सन्मुख चलि आए ॥३८३४॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

कौन परस्पर खूब लड़ाई ॥ योग ब्रह्म बलपति भय पाई ॥ गढ़ भीतर प्रस्थान कराए ॥ धरणीको रावण चलि आए ॥ ३८३५ ॥ द्वारपालका रूप धराई ॥ मारा अस्त्र प्रभाकर आई ॥ रक्तपात रावण को कीना ॥ तबते यक्ष भेज बल दीना ॥ ३८३६ ॥ सुनी भद्र सैन्यापति आये ॥ यातु कन्त शरमार गिराए ॥ जब चेतन लङ्कापति पाई ॥ मुनी भद्र का मुण्ड खपाई ॥ ३८३७ ॥ तब कुबेर मनमो भय पाये ॥ रावणको बोलैं समुझाये ॥ क्यो मुझसे लड़नेको आयं ॥ अमर विधाता मोहि दृढायं ॥३८३८॥ कोय तरे नहिं मार सकाओ ॥ क्यो अवरज अपमान कराओ ॥ शुनत विनय रावण सरमाये ॥ पश्च यातु गणको पकराये ॥ ३८३९ ॥ एक पिङ्ग शिर मूसल मारा ॥ तब कुबेर मनकोप अपारा ॥ मार बाण ताको दूत थाई ॥ पश्च दशानन कोप कराई ॥३८४०॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

लै लै शरपख भालने कीना। युद्ध अपार ॥ नर-वाहनकी बाणते यातु न पावैं पार ॥ यातु न पावैं पार

निरख लङ्केश डराए ॥ कीना माया युद्ध यातु तन और धराए ॥ शूकर होवैं कोय कोय कूकर बनि धावैं ॥ सिंह सर्प हो कोय कोय कुञ्जरहो धावैं ॥ ३८४१ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

यह प्रकार पशु गात धराई ॥ कीना समर यातु गण धाई ॥ यक्ष राज भागे भय पाये ॥ विजय नगाड़ा यातु बजाये ॥ ३८४२ ॥ धनभूरी लूटा गृह जाई ॥ रथ पुष्पक लीना हरषाई ॥ चढ़ि पुष्पक लङ्केश सिधावैं ॥ शम्भू के दर्शनको जावैं ॥ ३८४३ ॥ जन्म भूमि कार्तिकको पाए ॥ शरवनमो अटका रथ जाए ॥ उतर दशानन गिरिको टारै ॥ खींच खांच स्यन्दनको धारै ॥ ३८४४ ॥ कम्पवान कैलाश कराई ॥ रावणको नन्दी समुझाई ॥ क्यों नाहक कैलाश हिलावैं ॥ तब रावण करिकोप अलावैं ॥ ३८४५ ॥ क्या बोलै वानर मुख आई ॥ शुन नन्दी अति कोप कराई ॥ रावणको अभिशाप अलाए ॥ वंस नाश तब मर्क कराए ॥ ३८४६ ॥ शाप यातु नहिं ग्राह्य कराई ॥ लीना गिरिको माथ उठाई ॥ पश्य कोप शङ्कर तब कीना ॥ नखसे शैल दबा द्रुत दीना ॥ ३८४७ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

मरे मरे चिल्कार करि शिरसे शैल उतार ॥
चढ़ि पुष्पकके बीचमो बैठा कटक मझार ॥ बैठा
कटक मझार दुष्ट प्रस्थान कराये ॥ वेदवतीका प्राण
नाथ लीना वह जाये ॥ भणै खालसा सिंह प्रभो पूछे
मुशकाई ॥ वेद वतीका कथा कहो मुनिवर समुझाई
॥ ३८४८ ॥

अथ वेदवती उपाख्यान ।

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

शुन राघवके वचनको मुनि अगस्त्य हरषाय ॥
वेद वतीके जन्मकी भणै कथा समुझाय ॥ भणै कथा
समुझाय मुनी कुश ध्वज कहावैं ॥ बृहस्पतके पुत्र
वेदका पाठ करावैं ॥ वेद पाठको करत तुण्डसे
कन्या निकसी ॥ वेदवती धरि नाम विप्र पुत्री
लखि विगसी ॥ ३८४९ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

सम्भवा अयोनी कन्या पाये ॥ कुश ध्वज मनमो
गौर कराये ॥ नारायणको दान कराई ॥ लेवैं अ-
क्षय पुण्य मै जाई ॥ ३८५० ॥ अस विचारि प्रतिपाल

करायो॥ शुम्भ यातु कछु दिन पर आये॥ कुश ध्वजको मारा रघु राई॥ सती भई कन्याकी माई॥ ३८५१॥ मात पिता सुर लोक सिधावैं॥ ताते वेद्वती कलपावैं॥ तजि गृहको कन्या वन आई॥ विष्णु कारण तपस कराई॥ ३८५२॥ ताको देख दशानन पाए॥ पूछैं कन्याते वह आए॥ क्या कारण तप घोर करावैं॥ वेद्वती तिनको बतलावैं॥ ३८५३॥ नारायण होवैं पति आई॥ तिहं कारण तप घोर कराई॥ शुनत दशानन कोप कराये॥ नारायणको गालि चलाये॥ ३८५४॥ वेद्वती करि कोप कहाई॥ दुष्ट दूर होवो पशु जाई॥ जाको तू कटुवाक चलाए॥ मारैं गोत्र सहित सो आए॥ ३८५५॥

॥ कुण्डलिया छन्द॥

असताको दे शापको योग अग्नि प्रगटाय॥ नारायणका नाम लै तामो गई समाय॥ तामो गई समाय गातको भस्म कराई॥ कमलाकी घट जाय योति मे योति मिलाई॥ भयो खालसासिंह कुम्भ उद्भव समुझावैं॥ सो सीता हो नाथ आपसे ब्याह करावैं॥३८५६॥

॥ अथ मरुत्त राजा उपाख्यान ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

वेद वतोकी कथा शुन नारायण हरषाय ॥ पुन पुछे मुनि सिंहसे यातु कहां पुन जाय ॥ यातु कहां पुन जाय अगस्त्य भणै हरषाई ॥ त्रैभुवनकी मध्य सर्व्वको जीता जाई ॥ सो सबका मै नाम कहांतक जाथ चलावैं ॥ मुख्य मुख्य जो भूप कथा तिनकी मे गावैं ॥ ३८५७ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

मरुत्त भूप बोले सब कोई ॥ उज्वल चन्द्र वंसमो सोई ॥ तिनका प्रभो सुयश क्या गावैं ॥ नित ब्राह्मण भोजन करवावैं ॥ ३८५८ ॥ स्वर्ण पात्रमो विप्र खिलाई ॥ नित वर्ण्णन करते रघुराई ॥ मरुत्त भूप सो मेध करावैं ॥ यज्ञ भाग लेने सुर आवैं ॥ ३८५९ ॥ दश गई न पहुंचा तव आई ॥ पश्य अमर गण अति भय पाई ॥ अण्डजका सब गात धराये ॥ उड़ उड़ लेख गगणमो धाये ॥ ३८६० ॥ रावण भणै मरुतको आई ॥ देहु समर नर याग तजाई ॥ शुन भूभृत कर शस्त्र उठाए ॥ वारण कोन विप्र गण आए ॥ ३८६१ ॥ क्रोध वसात नष्ट मख

आवैं ॥ मांग पराजय धर्म्म बचावैं ॥ ब्राह्मण वचन मान रघुराई ॥ मरुत पराजय मागां जाई ॥३८६२॥ तब रावण मनमो हरषाये ॥ प्रधन छोड़ प्रस्थान कराये ॥ पहुंचे देव सर्व्व पुन धाई ॥ निज निज तनको भाष सुनाई ॥ ३८६३ ॥ मयूर गात सुर राज धराए ॥ ताते कछा शिखिनको पाए ॥ पच्छ पच्छ चच्छू तब होई ॥ सुन बरदान भये तन सोई ॥ ३८६४ ॥ वायस तन यमराज धरावैं ॥ ताते सोवर लाहि मलावैं ॥ जो अहार देवै तक पाई ॥ ताको जन मुझसे सो पाई ॥ ३८६५ ॥ यह प्रकार सब लेख भलाए ॥ निज निज तनको श्रेष्ट बनाए ॥ निर्ज्जरको हैगी यह रीती ॥ करते दीन हीन पर प्रीती ॥ ३८६६ ॥ यातु दुष्ट खल जौन कहावैं ॥ दीन हीन लखि और सतावैं ॥ मेध भाग लीना सुर आईं ॥ मख पूरण वह भूप कराई ॥ ३८६७ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

दै दच्छिणा सब विप्रको भुनता विदा कराय ॥ लै ले मखकी भागको स्वर्ग लेख गण धाय ॥ स्वर्ग लेख गण धाय अगस्त्य भणै रघुराई ॥ और कथा सो प्रात प्रभो भ.षें मे पाई ॥ भणै खालसा सिंह

विप्र प्रस्थान कराये ॥ सभा सहित रघुनाथ हर्ष आगार सिधाये ॥ ३८६८ ॥

॥ अथ अनरण्य राजा उपाख्यान ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

स्नान दान करि रामचन्द्र बैठे सभा लगाय ॥ मुनि अगस्त्य आकरि भणै शुनौ कथा चित लाय ॥ शुनौ कथा चित्त लाय भूप अनरण्य कहावैं ॥ पूर्वपुरुष तव प्रभो अवधिमो राज करावैं ॥ तिनसे रावण आय प्रधन मागा रघुराई ॥ वृद्ध भूप द्रुत धाय समर कीना गर्व्वाई ॥ ३८६९ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

मार मार शर कटक खपाये ॥ त्रास पाय रावण घबराये ॥ वलय सर्व निज दूर रखाई ॥ भिड़ा आप सन्मुख चलिआई ॥३८७०॥ पूर्व पुरुष तव वाण चलाए ॥ जर्जर ताका गात कराए ॥ भागा यातु त्रास अति पाई ॥ भिड़ा लौट ससन्मुख पुन आई ॥ ३८७१॥ मार शेष सव फौज. हठाये ॥ मारा बाण भूपको आये । अनरण्य भूपलोटैं तड़फाई ॥ भयो दशानन गर्व कराई ॥३८७२॥ नाहक रण करि प्राण

तजाये ॥ क्यों नहिं कहा पराजय आये ॥ भणै भूप तिनको समुझाई ॥ मै छत्रीकौना रण आई ॥३८७३॥ जो चत्री रण देख डरावैं ॥ घोर नर्क सो वास करावैं ॥ वृद्ध समय लड़ने तूं आये ॥ ताते प्राणदान तूं पाये ॥३८७४॥ युवा समय लड़ने जो भाई ॥ तौ जाते रणका फलपाई ॥ मोर गोत्र लङ्कामो जावैं ॥ वंस सहित तुझको धरि घावैं ॥३८७५॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

असरावणको शाप दे भुनता प्राण तजाय ॥ सन्मुख रणके कारणे स्वर्गवास वह पाय ॥ स्वर्गवास वह पाय अगस्त्य भणै समुझाई ॥ तिह कारण रघुनाथ आप लङ्कापति घाई ॥ भणै खालसासिंह प्रभो पूछैं मुशकाये ॥ अनरण्य भूपको मार कहां रावण पुन जाये ॥ ३८७६ ॥

अथ कार्त्तवीर्य्यार्ज्जुनोपाख्यान ।

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

शुन राघवके वचनको मुनि अगस्त्य वतलाय ॥ कार्त्तवीर्य्यार्ज्जुन नगर माहिस्पतिमे राय ॥ माहि-

स्पतिके राय चन्द्र वंसी रघुराई ॥ विष्णु अंशसे जन्म सहस्र भुजावह पाई ॥ नर्म्मदा नदीमो करैं केलि नारीगण लाये ॥ तीन समय दशशीर्ष भणै दीजै रण आये ॥ ३८७७ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

शुन भूभुज अति कोप कराई ॥ खड्ग खीच पहुचे द्रुत आई ॥ धरि धरिके भट मुण्ड खपाये ॥ भागे यातु सर्व्व भय पाये ॥ ३८७८ ॥ धरा दौड़ रावणको धाई ॥ बांध भुजा निज कक्ष दबाई ॥ कारागार मध्य लै आये ॥ वेडी तवक कड़ी पहिराये ॥ ३८७९ ॥ पश्यअमर मनमो हरषावैं ॥ कार्त्त-वीर्य्यार्ज्जुनको गावैं ॥ तव प्रसाद निर्ज्जर सुख पाई ॥ छोड़ी मख द्रोही मत भाई ॥ ३८८० ॥ शुनत सहस्र भुजा हर षाये ॥ रावणको धरि कैद रखाये ॥ कछु वासरबीत्यो रघुराई ॥ खबर पुलस्त्य मुनी वर पाई ॥ ३८८१ ॥ सहस्रबाहुके निकट सिधाये ॥ पौत्र दान मागारिझवाये ॥ ब्राह्मण वचन मान रघुराई ॥ रावण को दीना वह लाई ॥ ३८८२ ॥ तिनको प्रभु द्विज राम खपाये ॥ तिन्है पराजय आप कराये ॥ भुनता रावणसे रघुराई ॥ अग्नि जला करि प्रीति कराई ॥ ३८८३ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

कार्त्तवीर्य्यार्ज्जुन तवै सखा वोल रघुनाथ ॥ बिदा कीन लङ्केशको मुनि पुलस्त्यके साथ ॥ मुनि पुलस्त्यके साथ यातु किष्किन्ध्या आए ॥ दै करि आशीर्व्वाद स्वर्ग मुनि पुङ्गव धाये ॥ भयो खालसा सिंह प्रभो पूछैं मुशकाई ॥ किष्किन्ध्यामो लङ्क कन्त कीना क्या जाई ॥ ३८८४ ॥

अथ बालि रावणका युद्ध वर्णनम् ।

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

रामचन्द्रके वचन शुन मुनि अगस्त्य वतलाय ॥ किष्किन्ध्यामो जायके केहरि नाद कराय ॥ केहरि नाद कराय दौड़ मर्कटगण आये ॥ भयो दशानन गर्व्व छिपा बालो कित जाये ॥ कहै कपी समुझाय सिंधु दक्षिणमो जाई ॥ करते सन्ध्या भूप मिलैं अवही वह आई ॥ ३८८५ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

शुन दश गर्द्दन गर्व्व कराये ॥ पहुचे सरित्कन्त तट जाये ॥ सन्ध्या बालि करैं रघुराई ॥ इर्य्येच्च नाद कीना गर्ज्जाई ॥ ३८८६ ॥ सन्ध्या त्याग न बालि

कराये ॥ लेज घुमा बन्धन करि लाये ॥ जोर बहुत दशमुगड कराई ॥ फेंका वालि सिन्धुमो लाई ॥३८८७॥ बारबार निज लेज घुमाए ॥ दीना गोंता वालि रिसाए ॥ करि सन्ध्या प्रस्थान करावैं ॥ पुच्छ मध्य दश तुगड सिधावै ॥३८८८॥ त्राहि त्राहि दश ग्रीव अलायं ॥ तब वाली धरि कांख दबायं ॥ यात कटक सब विनय करावैं ॥ चढ़ि पुष्पक कपि साथ सिधावैं ॥३८८९॥ सन्ध्या पूर्वं सिन्धुमो कीना ॥ गोता चार यातु को दीना ॥ उत्तर सागरमो चलि आए ॥ करि सन्ध्या प्रस्थान कराए ॥३८९०॥ पश्चिम जलधि तीर मो जाई ॥ दै गोंता सन्ध्या करि धाई ॥ किस्किन्ध्यामो पहुचे आये ॥ तब रावणको वालि अलाये ॥३८९१॥

॥ कुगडलिया छन्द ॥

अब मुझसे कीजे प्रधन फुरशतको मै पाय ॥ जोड़ि भुजादल वालिको दशकन्धर बतलाय ॥ दश-कन्धर बतलाय बीर देखन को आवैं ॥ भये पराजय भूप माफ कीजै गृह जावैं ॥ भयो खालसासिंह अगम्य भयो रघुराई ॥ शुनत वाक कपिराज रीझ मिवता कराई ॥३८९२॥

——

अथ श्रीयमराजरावणका युद्ध।

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

बालिमर्का से हारके चढ़ि पुष्पक मो जाय॥ मुनि नारदका मार्गमो दर्शन रावण पाय॥ दर्शन रावण पाय विप्रको माथ निवाये॥ दै करि आशीर्वाद मुनी पूछें मुसकाये॥ चढ़ि पुष्पक लै फौज कहां लङ्कापति जावैं॥ विजय विश्वको करूं हर्ष-रावण बतलावैं॥३८६३॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

तब नारद तिनको बतलावैं॥ यमते कष्ट विश्व सब पावैं॥ कोजै शमन दमन जो जाई॥ त्रिभुवन सुयश तोर नृप गाई॥३८६४॥ शुन लङ्कापति हर्ष सिधाये॥ अन्तक पुर पहुंचे द्रुत धाये॥ प्रेतराज निज फौज पठाई॥ ताको रावण मार भगाई॥३८६५॥ श्राद्धदेव रणभूमि सिधावे॥ समर परस्पर घोर कराये॥ कोय न काको मार सकाई॥ धर्म्म-राज निज दण्ड उठाई॥३८६६॥ भयो विरिञ्चि काल को धाये॥ कयो रावणसि प्रधन कराये॥ मै ताको वरदान अलावैं॥ सिख योनि नहि मार सकावैं॥ ३८६७॥ दण्ड व्यर्थ तेरो होजाई॥ समर तजो यमुना

की भाई ॥ तव सम्वर्त्तिन कलह तजाये ॥ वैठे राज तख्त पर आये ॥३८९८॥ दुष्ट निशाचर शोरमचाई ॥ है कृतान्तको जीता भाई ॥ वैवस्वत पुर भ्रमण कराये ॥ देखायातु द्वार युग जाये ॥३८९९॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

उत्तरपश्चिम पूर्वमो धर्म्मात्मा सव आय ॥ निज निज धर्म्म प्रतापसे सुख सम्पद सो पाय ॥ सुखसम्पद सो पाय द्वार दक्षिण मे आये ॥ पापीगण का क्लेश देख लङ्केश डराये ॥ परदारा जो रमण करै ताको रघुराई ॥ लोहेकी लै त्रिया गरम करि रमण कराई ॥३९००॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

जो नारी पर पुरुष करावें ॥ सो इनसे चौगुण दुख पावैं ॥ कुम्भीपाक नर्क मो लाई ॥ दें गोंता ताको शिर घाई ॥ ३९०१ ॥ तन सत्र नोच कीटगण खाये ॥ ताहि ताहि पापी वतलाये ॥ यम किङ्कर शुनि कोप कराई ॥ मारि गदा ताको धमकाई ॥ ३९०२ ॥ शरणागत को जोन सताये ॥ आरीसे ताको चिरवाये ॥ अग्रज को जो पवरं सतावैं ॥ रौरव नर्क वास सो पावैं ॥ ३९०३ ॥ जोपर धनको हरण कराये ॥ ताको शिर भालासे घाये ॥ देव स्थापना जोन कराई ॥

पर्चे नहिं ताको जो भाई ॥ ३८०४ ॥ ताको कुम्भ अग्निते जाए ॥ कुम्भोपाक नर्कमो पाए ॥ पर हिंसा पर द्वेष करावैं ॥ सोजन रौरव नर्क सिधावैं ॥३८०५॥ शाप गालि देवै जो कोई ॥ रसना काटि नर्कमो सोई ॥ देवल विप्र देवस्व चुरावैं ॥ सबसे कष्ट बहुत सो पावैं ॥ ३८०६ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

यह प्रकार यम लोक मैं जो जस पाप कराय ॥ चित्तगुप्तसे पूंछके ताको नर्क पठाय ॥ ताको नर्क पठाय नीत लखि दण्ड करावैं ॥ कीट पतङ्गम योनि नीच ताको भरमावैं ॥ भणै खालसासिंह कुम्भयोनी बतलाये ॥ और कथा रघुनाथ प्रात बोलो मे आये ॥ ३८०७ ॥

अथ श्रीशेषनाग रावणका युद्ध वर्णनम् ।

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

स्नान दान रघुनाथ करि बैठे सभा लगाय ॥ मुनि अगस्त्य बुलवायके पूछैं प्रभो हंसाय ॥ पूछैं प्रभो

हंसाय कष्ट पापी सब पावैं ॥ क्यों करि तिनका त्राण मुनी मुझको बतलावैं ॥ भणे अगस्त्य बुझाय सुनो रघुपति चितलाई ॥ राम नाम विन मोक्ष नहीं होवै रघुराई ॥ ३९०८ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

रामायण जो पाठ कराये ॥ अथवा सुनै प्रेम चित लाये ॥ कोट जन्मका पाप नशाई ॥ स्वर्गवास पावै रघुराई ॥ ३९०९ ॥ रत्नाकर अघ कोट कराये ॥ मरा मरा तब नाम जपाये ॥ ताते अपनो पाप नशाई ॥ ख्याती वालमीक मुनि पाई ॥ ३९१० ॥ जो रघुवीर नाम तब गावैं ॥ ताको क्या यमराज करावैं ॥ सुन रघुनन्दन अति हरषाये ॥ मुनि अगस्त्य पुन बिहस चलाये ॥ ३९११ ॥ यमपुर ते प्रस्थान करावैं ॥ रावण अधो भूमिमो जावैं ॥ शेष नागकी भवन सिधाई ॥ शार्दूल सम शब्द कराई ॥ ३९१२ ॥ सुन भुजङ्ग पति कोप कराये ॥ कोट तिराशी नारि पठाये ॥ यातु फौज भागी भय पाई ॥ रावण गदा प्रहार कराई ॥ ३९१३ ॥ ताते सर्पिन प्रधान तजाये ॥ गरल वाण तब शेष चलाये ॥ ब्रह्मजाल शर यातु चलाई ॥ ताते गरल वाणकी घाई ॥ ३९१४ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

महाजाल शर मारकै शेषनागको नाथ ॥ करि बन्धन लूटै पुरी दुष्ट वलय लै साथ ॥ दुष्ट वलय लै साथ पराजय शेष चलाये ॥ तब बन्धन करि मुक्त यातु प्रस्थान कराये ॥ भणै खलसासिंह कुम्भनन्दन बतलावैं ॥ पुन निपातसे जाय यातु पति समर करावैं ॥ ३९१५ ॥

अथ निपात रावणका युद्ध वर्णनम् ।

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

ब्रह्माको वर पायकै अधो भूमिमो जाय ॥ राज करै सुखसे प्रभो नाम निपात रहाय ॥ नाम निपात रहाय जाय लङ्केश चलाये ॥ लङ्काकै हैं कान्त समर दौजे द्रुत आये ॥ शुनि निपात करि कोप शरासन चीप्र उठाई ॥ कीना युद्ध कठोर नायको भाष सकाई ॥ ३९१६ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

मास निशाकर समर कराई ॥ कीय न काको मारसकाई ॥ तुल्य प्रभञ्जन पख वीर कराये ॥ धावो भणै युग्मपो आये ॥३९१७। युद्ध छोड़ गलमो लप-

टाई ॥ प्रीत करौ भट पखजस भाई । मै वरदोनोको समदीना ॥ ताते समर तुल्य सवकीना ॥३८१८॥ शुनके युगल वीर हरषाये ॥ मिले गले गल प्रीत वढ़ाये ॥ कलह मिटा सष्ट गृहजावैं ॥ लङ्का कन्त-निपात टिकावें ॥३८१९॥ ऋतु ऋतुके मेवा मंगवाई ॥ रावणको प्राशन करवाई ॥ मास प्रभाकर वास कराये ॥ लङ्कासे ज्यादे सुखपाये ॥३८२०॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

रावण भयौ निपातको तव प्रसाद मै भ्रात ॥ सुख सम्पद भोग्यो सवै विदाकरौ अव तात ॥ विदा करौ अव तात वरुण ते समर करावें ॥ दै वहुता धन नाथ सखाको भूप पठावैं ॥ भयौ खालसासिंह कुम्भात्मज वतलाए ॥ सिंहनाद करि यातु वरुण सद्मनमो आए ॥ ३८२१ ॥

अथ श्रीवरुण रावणका युद्ध वर्णन

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

शुनके मेघनादको वरुण पुत्र वय धाय ॥ पुष्कर द्रोण हिडम्ब सुत धनु टङ्कार कराय ॥ धनु टङ्कार कराय दुष्ट रावण गर्ज्जाये ॥ वाण शरासन तान

समर धरणीमो आये ॥ वरुण पुत्र करि कोप रोप मारा अस पाई ॥ गिरे भूमि लङ्केश वलय भागी भय पाई ॥ ३८२२ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

जब चेतन लङ्कापति पाये ॥ कोगा रण सभंक से आये ॥ मार वाण वालक तन पाई ॥ भागे नयन भ्रात भय पाई ॥ ३८२३ ॥ घेरा पुर ससपगण आये ॥ कहां वरुण भण शोर मचाये ॥ नाम प्रभास भयौं चर आई ॥ स्वर्ग वरुण प्रस्थान कराई ॥ ३८२४ ॥ हरि वासर ब्रह्माजी कीना ॥ दैनिमन्त्र बुलवा वहलीना ॥ शुन लङ्केश भयौ हरषाई ॥ भागा पश्य मुझे भय पाई ॥ ३८२५ ॥ विजय नगाड़ा यातु वजाये ॥ लूट पाट लीना गड़ आये ॥ जौन जौन वस्तू सो पाई ॥ काह लौ तौन भयौ रघुराई ॥ ३८२६ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

वरुण भवनके मध्यमो नाग पाशको पाय ॥ लै रावण खुश होयके वली गेहमो जाय ॥ वली गेहमो जाय कुम्भ सम्भव वतलाये ॥ तौन कथा कल प्रात नाथ वोली मैं आये ॥ भयौ खालसासिंह विप्र प्रस्थान करावैं ॥ सभा सहित रघुनाथ हर्ष आगार सिधावैं ॥ ३८२७ ॥

अथ राजा वलि रावणका युद्ध वर्णनम्

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

स्नान दान रघुवीर करि राज तखत पर जाय ॥ बैठे सभा लगायके पात्र मित्र बुलवाय ॥ पात्र मित्र बुलवाय मुनी कुम्भज तब आये ॥ नारायणको भणै नाथ शुनिये चितलाये ॥ वली द्वारके मध्य यातु ईश्वरको पाई ॥ सिंहनाद करि भणै समर दीजै द्रुत आई ॥ ३९२८ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

शुन ईश्वर बोलैं मुशकाये ॥ लड़ौ वली भूमुज से जाये ॥ द्वार छोड़ दीना रघुराई ॥ रावण भणै वलीको आई ॥ ३९२९ ॥ तुझको विष्णूकैद कराये ॥ ताते मे लडनेको आये ॥ देहु शीघ्र अच्युत दिखलाई ॥ लेवैं तव वदला मे जाई ॥ ३९३० ॥ शुनत वचन वलिराज अलाये ॥ क्या भाषै पामर तू आये ॥ प्रलय सृष्टि छिनमो जो करते ॥ तिनसे तू चितमोरण धरते ॥३९३१॥ शुनत दशानन कोप कराई ॥ खड्ग खींच वलिको धमकाई ॥ शर बन्धन वलि भूप चलाये ॥ ताते बन्धन यातु कराये ॥ ३९३२ ॥ शन्त वली नहिं कीन लड़ाई ॥ तव प्रसाद द्रुत बांध

गिराई ।। कैद कीन कारा गृहलाये ।। चेरिणका उच्छिष्ट खिलाये ।। ३८३३ ।। कछुक घस्र बीते रघुराई।। मागा यातु पराजय पाई ।। बन्धन मुक्त बली तब कीना ।। मृत्यु लोक मारग वहलीना ।।३८३४ ।।

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

मृत्यु लोककी बीचमो लङ्केश्वर तब आय ।। अब किनसे जाकरि लड़ूं शोच फिरे बबराय ।। शोच फिरे बबराय मिले मान्धाता आये ।। सिंहनाद कर दुष्ट दैत नृपको धमकाये ॥ भखो खालसासिंह कुम्भ सम्भव बतलाई ॥ देहु वेग रण भूप यातु बोलें रघु राई ॥ ३८३५ ॥

अथ राजा मान्धाता रावणका युद्ध वर्णनम् ।

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

शुन रावण के वचन को मान्धाता गर्जाय ॥ भिड़े शरासन तानके अतिशय कोपकराय ॥ अतिशय कोपकराय भूप रावणको धाई ॥ मारा-वाण चलाय गिरे लङ्केश धराई ॥ सम्हल यातु ले

बाण भूपको मार धाये ॥ अवधि कान्त शर छोड़ यातुको रोप खपाये ॥ ३९३६

॥ पदाकुलक छन्द ॥

पुन रावण शर और चलाई ॥ ताको अवधि कान्त धरि घाई ॥ अवधेश्वर जो बाण चलावैं ॥ ताको रावण मार हटावैं ॥ ३९३७ यह प्रकार बहु युद्ध कराये ॥ कोयनकाको मार सकाये ॥ मास दिसा तक भयो लड़ाई ॥ जर्ज्जर भट पख गात कराई ॥ ३९३८ ॥ ब्रह्मा मुनि भार्गव पठवाये ॥ अवधि कान्तको दीन बुझाये ॥ तवकुलमो ईश्वर तन धारैं ॥ गोत सहित रावणको मारें ॥ ३९३९ ॥ समर छोड़ अब प्रीति कराई ॥ राज करो सुखसे गृह जाई ॥ अस भण भूभुजको समुझाये ॥ कहा सुनो रावणको पाये ॥ ३९४० ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

समर देख लोकेशजो सुभको दीन पठाय ॥ वीर युग्मको जायके दीजै प्रीति कराय ॥ दीजै प्रीति कराय वचन रावण शुन लीजै ॥ समर छोड़ विश्राम वीर गृह जा करि कीजै ॥ भणे खालसा सिंह अगस्त्य मुनी वत लावैं ॥ शुनत वचन पख वीर समर तजि प्रीति करावैं ॥ ३४१ ॥

अथ श्रीनारायणजी रावणका युद्धवर्णनं

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

अवधि पतीसे प्रीत करि चढ़ि पुष्पक रघुनाथ ॥ कुश द्वीपके मध्य मो चला वलय लै साथ ॥ चला वलय लै साथ दुष्ट देखन क्या पाए ॥ आवत हैं नर एक विश्व तन मध्य धराए ॥ अष्टवसु दशदिशा पवन उन्चास नक्षत्रं ॥ करण योग तिथि वार शेष धरते फण छत्रं ॥ ३९४२ ॥

॥ पाद्राकुलक छन्द ॥

देख दशानन कोपकराए ॥ कहा कौन परिचय द्यो आए ॥ भयो पुरुष तिनको धमकाई ॥ क्यों देवैं परिचय मै आई ॥ ३८४३ ॥ कहा यातु पुन कोप कराये ॥ देहु समर मुझको द्रुत आये ॥ शुनत पुरुष वर कोप कराई ॥ धरि रावणको भूमि गिराई ॥ ३९४४ ॥ त्रास पाय सब यातु सिधावैं ॥ तब पाताल पुरुष वर आवैं ॥ जब चेतन लङ्केश्वर पाई ॥ पूछैं वलय सर्व्व बुलवाई ॥ ३९४५ ॥ कहां छिपा नरवर वह जाये ॥ शुक सारण भाषैं समुझाये ॥ ताका जिन पीछा कर भाई ॥ अधो भूमि भागा भय पाई ॥ ३९४६ ॥ शुन रावण पाताल सिधाये ॥

वैसा कोट पुरुष वय पाये ॥ तव रावण मनमो भय पाई ॥ लीना शरण पुरुषका आई ॥ ३९४७ ॥ निज परिचय तव पुरुष बताये ॥ तव रावण मागा वर जाये ॥ निज करते मेरो तन घाई ॥ कीजै मोक्ष प्रभो द्रुत आई ॥ ३९४८ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

शुन रावणकी वचनको भणे पुरुष समुझाय ॥ वैर यातु मुझसे करो करैं पतन तव काय ॥ करैं पतन तव काय राम पूछैं मुशकाई ॥ कौन पुरुष सो रहे विप्र दीजै बतलाई ॥ भणे खालसा सिंह कुम्भ गातज बतलावैं ॥ तीन पुरुष थे आप नाथ क्या भाष शुनावैं ॥ ३९४९ ॥

॥ अथ रम्भावती हरण ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

शुन कुम्भजके वचनको नारायण हरषाय ॥ पुन पूछैं मुनि राजसे मुझको देहु बताय ॥ मुझको देहु बताय कहां पुनि यातु सिधाये ॥ भणे अगस्त्य बुझाय गगण मारगते जाये ॥ अर्द्ध रात्रिके समय दुष्ट रम्भाको पाई ॥ धरिताको रघुनाथ यातु प्रस्थान कराई ॥ ३९५० ।

॥ पादाकुलक छन्द ॥

गिरि कैलाश विषै चलि आये ॥ जोड़ि पाणि रम्भा समुझाये ॥ मै तव पुत्र वधू कहिलावैं ॥ क्यों मुझको अपमान करावैं ॥ ३९५१ ॥ तव रावण पूछैं मुशकाई ॥ क्योंकरि पुत्र वधू वतलाई ॥ तव रम्भा तिनको समुझावैं ॥ नल कुवेर तव कौन कहावैं ॥ ३९५२ ॥ रावण भ्रातुस पुत्र वताई ॥ तव रम्भा तिन को वतलाई ॥ तिनकी है भार्य्या होजावैं ॥ छोड़ मुझे निज धर्म्म वचावैं ॥ ३९५३ ॥ भणै यातु तिनको समुझाई ॥ कलतेवनो वहू मम आई ॥ अद्यरतीदै तुष्ट करावैं ॥ तव रम्भा पुनताहि वतावैं ॥ ३९५४ ॥ आप मुझे परसन्द कराये ॥ देहुं रती आगत काल आये ॥ तव रावण वोलैं मुशकाई ॥ काल्हनाता क्यों कर छूट जाई ३९५५ ॥ तव रम्भा अप्सरा अलावैं ॥ मै वेश्या निज धर्म्म वतावैं ॥ जाको जो दिन वरण कराये ॥ तादिन सो मम कान्त कहाये ॥ ३९५६ ॥ ताको तजि नहि और भजावैं ॥ ताते पती-व्रता कहलावैं ॥ वर्णन अद्य करै दशशीसं ॥ मिलौं प्रात उठते जगदीशं ॥ ३९५७ ॥ शुन रावण वोलैं मुशकाई ॥ विन शृङ्गार तजा नहि जाई ॥ तव रम्भा मनमोहन पावैं ॥ धरि रावण शृङ्गार करावैं ॥ ३९५८ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

सप्त दिवस तक यातुमेकीना रम्भाभोग ॥ अष्टम दिनमो जायके करिके रम्भाभोग ॥ करिके रम्भा भोग कन्तको हाल जनाई ॥ नल कुवेर करि कोप यातु को श्राप चलाई ॥ भये खालसा सिंह अगस्त्य मुनी बतलावें ॥ बिनराजीके रमण यातु यमलोक सिधावें ॥ ३९५९ ॥

अथ रावणकी भग्नी हरण ।

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

कुवेर पुत्रका श्रापशुन दश कन्धर कलपाय ॥ चढ़ि पुष्पकके बीचमो लङ्कापुर तब जाय ॥ लङ्का पुर तब जाय मिले गोतीगण भाई ॥ नाना मातुल कुटुम सर्व भग्नी घर माई ॥ मिलि मिलिके लङ्केश सबनको भाष शुनाये ॥ वीर सर्वको जीत वित्त नारी वहुलाये ॥ ३९६० ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

शुनत विभीषण शब्द चलावें ॥ तव कारण कुल भर दुख पावें ॥ परदारा धनको हरलाये ॥ ताते तव भगनी हर जाये ॥ ३९६१ ॥ मधूदैत मथुरा सि

आवैं ॥ मातुल पुत्रोंको ले आवैं ॥ सुन प्रहस्त बोलें गर्रायें ॥ जौन हरी तनया मम आये ॥ ३९६२ ॥ ताको मैं यमलोक पठाई ॥ कमर कशाखोलूं मैं आई ॥ अस भण चले प्रहस्त रिसाए ॥ धरि रावण तिनको समुझाए ॥ ३९६३ ॥ मथुरापुर मामा मैं जावैं ॥ मारि दैत्य भग्नीको लावैं ॥ असभण कटक तयार कराये ॥ सुपंनखा बोली तब आये ॥ ३९६४ ॥ मुझको विधवा आप कराई ॥ पेट भरा अबहौ नहि भाई ॥ तब रावण पूछें घबराए ॥ को विवाह कीना तव आए ॥ ३९६५ ॥ सुपंनखा बोले शरमाई ॥ जोपाणी मम ग्रहण कराई ॥ ताको तूं यमलोक पठाये ॥ ननद लूटमेंरोयहलाये ॥ ३९६६ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

शन्त विभीषण जौन दिन कीना मुझको दान ॥ तीन दिवस ममकन्तको मारा तुमने बाण ॥ मारा तुमने बाण शुनत रावण घबड़ाये ॥ कहा तिसे समुझाय खबर मैंने नहि पाये ॥ ताते ताको मार ननद लुटा तव जाई ॥ करी खसा अवमाफलाज बहुता मैं पाई ॥ ३९६७ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

क्षमा माग परबोध कराये ॥ चढ़ि पुष्पक मथुरा पुर

धाये ॥ पहुंचे जब मथुरा नो आई ॥ कुम्भनशी राखी शुन पाई ॥ ३९६८ ॥ लै अङ्गज पहुची वह आए ॥ रावण को करजोड़ अलाए ॥ भर्त्तादान देहु मम भाई ॥ तब रावण तिनको समुझाई ॥ ३९६९ ॥ तुझको दुष्ट दनुज हर लावें ॥ उप भर्त्ता भग्नी तव धावें ॥ कुम्भनशी कर कोप अलाई ॥ तव पती जितनी हैं भाई ॥ ३९७० ॥ काको तुमने व्याह कराए ॥ उप भर्त्ता क्यों नहिं कहिलाए ॥ मुझको हरो दनुज जब जाई ॥ मालाबट्लकौन तब भाई ॥ ३९७१ ॥ उप स्वामी क्यों करि बतलावें ॥ शुनत वचन रावण शर मावें ॥ भयो प्रहस्त वीरको आई ॥ चलो भवन अब समरतजाई ॥ ३९७२ ॥ कुम्भनशी बोलैं हरषाये ॥ लवन नाम नाती तव आये ॥ लखि प्रहस्त द्रुत गोद उठाई ॥ शेखी शान तज्यो रघुराई ॥ ३९७३ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

लै भग्नीपतिको प्रभो रावण यान चढ़ाय ॥ लङ्कापुर मो लायके सिष्टाचार कराय ॥ सिष्टाचार कराय अगस्त्य मुनी बतलावें ॥ जो पराजनको हरै हरै ताको जन जावें ॥ भयो खालसासिंह विप्र प्रस्थान कराई ॥ और कथा कल प्रात नाथ बोलौ मै आई ॥ ३९७४ ॥

अथ मेघनाद यज्ञोपाख्यान।

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

स्नान दान करि राम प्रभु सिंहासन पर जाय ॥ बैठे सभा लगायकै मुनि अगस्त्य तब आय ॥ मुनि अगस्त्य तब आय प्रभो प्रणिपात कराये ॥ देकरि आशीर्वाद कथा कलसोद्भव गाये ॥ स्वसाकन्त को लङ्ककन्त लङ्का दिखलाई ॥ मेघनादकै मेध शाल पहुंचे तब आई ॥ ३९७५ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

मेघनाद तप घोर करावैं ॥ अनाहार बहुता दुख पावैं ॥ छाग महिष कोटन कट वाई ॥ मख निकुम्भिल करत रहाई ॥ ३९७६ ॥ पावक शिखा दीर्घ नभ जाये ॥ वायु सखा भणै हरषाये ॥ वर मागो मनको जो भाई ॥ मेघनाद बोलैं शिरनाई ॥ ३९७७ ॥ जब तुमको प्रभु याद करावैं ॥ तत्त काल दर्शन तब पावैं ॥ मेघ आड़सी समर कराये ॥ मारै नाथ सुरा सुर जाये ॥ ३९७८ ॥ सुनत दहन भाषे मुशकाई ॥ जीतीलोक चहु सुत जाई ॥ जब मुझको सुत याद करावैं ॥ तत्तकाल दर्शन मम पावै ॥ ३९७९ ॥ जीन यज्ञ तब नष्ट कराये ॥ ताके हाथ प्राण तब जाये ॥

मेघनाद रोवैं घबड़ाई ॥ वर्ण नाम आचार्य्य बूझाई ॥ ३९८० ॥ तब दमुनस पुन विहस अलाये ॥ वर्ष चतुर्द्दश तपस कराये ॥ निद्रा नारि अहार तजाई ॥ ताते मुझको प्रगट कराई ॥ ३९८१ ॥ जोजन यतनो भैम धरावैं ॥ सोजन तव मख नाश करावैं ॥ अस भण वैश्वानर समुझाई ॥ अन्तर्द्धान भये रघुराई ॥ ३९८२ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

शुन रावण वर दानको मनमो अति हरषाय ॥ लै भग्नीपतिको प्रभो निजागारमो आय ॥ निजागार मो आय नाथ अवरज तब जाई ॥ निद्रा भोजन त्यागयती हो ताहिखपाई ॥ भणै खालसासिंह सिंधु भवक वतलावैं ॥ अञ्जजका वर शुनत दुष्ट रावण घबरावैं ॥ ३९८३ ॥

अथ देवता रावणका युद्ध वर्णनम् ।

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

मधू दनुजको हर्षके दश. कन्धर वतलाय ॥ कुम्भकर्ण आगे अभी मेघनाद वर पाय ॥ मेघनाद वर पाय आप लङ्कामो आए ॥ ऐसा योगन मिले

फेर जीते सुरजाये ॥ शशुर गिग्र शुनि वचन मधु वोलैं हरषाई ॥ स्वर्गलोकमो चलौ करौ मै भी रण आई ॥ ३९८४ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

शुन रावण मनमो हरषाये ॥ वलय सर्व निज त्यार कराये ॥ कुम्भकर्ण भाता वुलवाई ॥ मेघनाद पहुचे सुत धाई ॥ ३९८५ ॥ मधूदैत्य निज वलय मगाए ॥ डङ्का डम्फ मृदङ्ग वजाए ॥ करताल शङ्ख कांसर शहनाई ॥ प्रलयकाल समशोर मचाई ॥ ३९८६ ॥ चढ़ि पुष्पक प्रस्थान कराये ॥ घेरा अमर लोकको जाये ॥ खवर पाय वासव भय पायो ॥ विष्णू को सब हाल जनायो ॥ ३९८७ ॥ नारायण वोलैं मुशकाई ॥ यह तनते मारा नहिं जाई ॥ ब्रह्माजीवर दान चलाए ॥ नर वानर ते मारा जाये ॥ ३९८८ ॥ अद्य समर सत्र लेख वुलाई ॥ कोजै भूप आप द्रुत जाई ॥ काल पाय नर गाल धराए ॥ देवैं इन्द्र झटपू तव धाए ॥ ३९८९ ॥ शुन वज्री अतिशय भयपाई ॥ तेतिस कोट लेख वुलवाई ॥ चन्द्र सूर्य्य यम आदिक आए ॥ सिंहनाद करि शोर मचाए ॥ ३९९० ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

दूत लङ्केश्वर गर्ज्जके भिड़े निशान उड़ाय ॥

उतसी गिर्व्वांर धावकी निज निज कला दिखाय ॥ निज निज कला दिखाय शिशिर शशि वृष्टि कराये ॥ थर थर करिके गात यातु कांपैं घवड़ाये ॥ अग्नि बाण को छोड़ ओष लङ्केश हटाई ॥ सूर्य्य तपे करि कोप यातु लौटैं तड़फाई ॥ ३९९१ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

मेघ बाण लङ्केश चलाए ॥ भानु तेजको नष्ट कराए ॥ पश्चय पवन उघ्राच रिसाई ॥ यातु सर्व्वको दीन उड़ाई ॥ ३९९२ ॥ ब्रह्माकि वर रावण पाये ॥ तांते बात नताहि हटाये ॥ शनी देव पहुंचे तब आई ॥ कोप दृष्टि करि तुरड तकाई ॥ ३९९३ ॥ भस्म शीर्ष ताके होजाये ॥ ब्रह्माके वर ते पुन पाये ॥ देख शनी भागी भय पाई ॥ प्रेतराज पहुंचे तब आई ॥ ३९९४ ॥ तनमो रोग प्रवेश कराये ॥ ब्रह्म अग्नि तब यातु जलाये ॥ भागी रोग सर्व्व भय पाई ॥ वरुण देव पहुंचे तब आई ॥ ३९९५ ॥ जलमय सब रणभूमि कराये ॥ अग्नि बाण लंकेश चलाये ॥ ताते आपको नष्ट कराई ॥ महादेव गिरिजा तब आई ॥ ३९९६ ॥ जोड़ि पाणि रावण बतलावै ॥ आप काहि रणमो प्रभु आवैं ॥ तव प्रसाद जीतूं मै आई। सेवक पर क्यों कोप कराई ॥ ३९९७ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

सुन रावणकी विनयको गौरीशंकर नाथ ॥ गिरि कैलाशंको गये भूत प्रेत ले साथ ॥ भूत प्रेत ले साथ देव पहुंचे सब पाई ॥ निज निज कला दिखाय यातु से समर तजाई ॥ भिड़े इन्द्र तब आय वज्र करि कोप चलाये ॥ कुम्भकर्ण लखि क्रूर अस्त्र निगला सो धाये ॥ ३९९८ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

देख इन्द्र मनमो भय पाये ॥ झपटा कुम्भकर्ण गर्जाये ॥ निगले दुष्ट अमरको जाई ॥ जस कपोत दाना चुग खाई ॥ ३९९९ ॥ कर्ण नासिका दैसुर खावैं ॥ पुन धरि कुम्भकर्ण मुख पावैं ॥ यह प्रकार खखकार डराये ॥ भागे लेख यातु पुन खाये ॥४०००॥ दिन अवसान भयो रघुराई ॥ कुम्भकर्णको निद्रा आई ॥ प्राणदान निर्झर गण पाए ॥ इन्द्र पुन लड़ने तब आए ॥ ४००१ ॥ नाम जयन्त कहैं सब कोई ॥ कीना कठिन समर सुत सोई ॥ मेघनाद माया शर धाये ॥ रणसे सुत भागे भय पाये ॥ ४००२ ॥ पौलव मातामह गृह धाई ॥ प्राणदान बालक वह पाई ॥ नारायण पूछैं मुसकाये ॥ कहां रहे पौलव मुनि राये ॥ ४००३ ॥ सरित्कान्त भगवन बतलाई ॥ अधो

भूमिकी मध्य रहाई ॥ पौलव यातु महा बलवन्ता ॥ तहां अयन्त छिपे भगवन्ता ॥ ४००४ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

पुन वासव रथ भूमिमो पहुंचे शङ्ख बजाय ॥ बाजा सर्व्व बजायकी लङ्केश्वर तब आय ॥ लङ्केश्वर तब आय परस्पर समर करावैं ॥ पद्मापण शर छोड़ इन्द्र रावण कोघावैं ॥ गिरा अचेतन होय यातु सुरपति तब आई ॥ हातीके पद्बांध चले ताको रघुराई ॥ ४००५ ॥

॥ पदाकुलक छन्द ॥

मेघनाद पहुचे गर्ज्जाये ॥ कहा पुरन्दरको धमकाये ॥ कहां जनक मेरो लै जावैं ॥ पद्य तोहियम लोक पठावैं ॥ ४००६ ॥ दो जै रण सन्मुख मम आई ॥ शुन मघवत भाषैं मुशकाई ॥ तोर प्रसूभर्त्ता मै घाए ॥ अर्भक हो लड़ने तुम आए ॥ ४००७ ॥ मेघनाद शुन गर्ज्जै भलावैं ॥ दै रण को पुन बात बनावैं ॥ अन भव सुरपतिको धमकाये ॥ छिपा गगण जलधरमो जाये ॥ ४००८ ॥ मार बाण वज्रिणको घाई ॥ तिन्हे न मध्य विड़ोजस पाई ॥ ताते सुत्रामन भय पाए ॥ नाग फांस शर यातु चलाए ॥ ४००९ ॥ ताते हरिहय बांधि गिराई ॥ रावणको खोला पुन आई ॥

इन्द्रालयको लूट कराये ॥ लै सुर कन्या लङ्कमो आये ॥ ४०१० ॥ ब्रह्माजी लङ्कामो आई ॥ मेघनादको भाष सुनाई ॥ दीजे बन्धारातिको लाए ॥ इन्द्रजीत तब नाम रखाए ॥ ४०११ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

सुन ब्रह्माके वचनको मेघनाद हरषाय ॥ शची कन्याको लायके तिनको दान कराय ॥ तिनको दान कराय भवै स्पष्ट समुझाई ॥ गौतम काया शाप कष्ट ताते नृप पाई ॥ भनैं खालसा सिंह अगस्त्य मुनी बतलावैं ॥ लै सुरपति सुर ज्येष्ठ स्वर्ग प्रस्थान करावैं ॥ ४०१२ ॥

अथ श्रीशिवाशिवका विवाह वर्णनम्

॥ कवित्त ॥

बोलैं ऋषिराज ज्ञानी चित्त मध्य ग्लानि ठानी दैत्य कुलकी कहानी गायो मन लायके ॥ ताते तुण्ड शुद्ध हेतु शिवाशिव ब्याह केतु भयात हौ श्रीनिकेत सुनौ मन लायके ॥ देवनमो देव भारी रोग शोक दोष हारी श्रेष्ठ गुण गङ्गधारी तिनको मनायके ॥

करैंगे तपस घोर जप राम नाम तोर काननमो जाय भोर उहाइ शुनायशी ॥ ४०१३ ॥

॥ शङ्कनारी छन्द ॥

सबै वेद गाई ॥ जिन्है लोक माई ॥ करो जीव सृष्ठि ॥ सबै जीव वृष्ठि ॥ ४०१४ ॥ विधाता हरिंको ॥ भणै चौमृड़ंको ॥ तपं घोर कीजै ॥ वलं मोर लीजै ॥ ४०१५॥ महामोद लाये ॥ तपंको कराये ॥ अपं तौर जाई ॥ तवै लोक माई ॥ ४०१६ ॥ शवं रूप धारी ॥ कुगंधं करारी ॥ हरो पास आई ॥ घृणा घोर पाई ॥ ४०१७ ॥ प्रभो भाग जावैं ॥ तवै मात धावैं ॥ विधोपास आयं ॥ कुगंधं सुघांयं ॥ ४०१८ ॥ महा त्रास पाई ॥ निजंको फिराई ॥ चतुर्दीक तुण्डं ॥ धरे चार मुण्डं ॥ ४०१९ ॥ पुनः मात धाई ॥ सर्व्व पास आई ॥ शम्भू देख पाये ॥ महामोद लाये ॥ ४०२० ॥ शवं घोंच लीना ॥ तिष्ठजाप कीना ॥ खुशी मात होई ॥ दक्षगेह सोई ॥ ४०२१ ॥ धर्यो गात जाई ॥ सती नाम पाई ॥ मुनी नारदाये ॥ दक्षको अनाये ॥ ४०२२ ॥ महादेव लाई ॥ सुता देहु भाई ॥ खुशी भूप धारी ॥ वुला कंद्रपारी ॥ ४०२३ ॥ कर्यो दान देवो ॥ नही पाद सेवो ॥ सती भोम लीना ॥ वस्त्य प्यान कीना ॥ ४०२४ ॥ दक्ष वाम धाता ॥ नही

प्रीति लाता॥ सदा स्याम निन्दा॥ करैं ज्ञान मन्दा॥ ५०२५॥ कह्यो देव यागं॥ नहीं दैन भागं॥ भवंको विचारा॥ महा पाप धारा॥ ४०२६॥ सवै लेख पाए॥ नही शंभु लाए॥ सती हाल पाई॥ पतीको बताई॥ ४०२७॥ पिता वाम जावैं॥ सबं देख आवैं॥ भयो भीम देवी॥ मुझे नाहिं सेवी॥ ४०२८॥

॥ दोहा॥

सुरगणाके गृह जायके नीमन्त्रण करि लाय॥ तव मम कारण भृत्य भौ दीना नाहिं पठाय॥ ॥ ४०२९॥ शुन स्वामीके वचनको देवी भणे वुझाय॥ जनक भवनके गमनको आमन्त्रण वतलाय॥ ४०३०॥ तव शम्भु तिनको कहैं सम्बोधन विन मान॥ मिले कभी देवी नहीं सत्य वचन मम आन॥४०३१॥ शुन भर्त्ताके वचनको कोप चण्डिका कीन॥ त्रास दिखावन कारणे कालो तन धरि लीन॥ ४०३२॥ मेघ वर्ण कच मुक्त हैं शवारूढ़ जग मात॥ मुण्ड माल धरि कण्ठमो वाम मुण्ड असि हात॥ ४०३३॥ अरु दक्षिण पख पाणिसे करत अभय वर दान॥ लोला लोल कराल धरि अर्द्ध चन्द्र शिर आन॥ ४०३४॥ वय अम्बक धरि

को शिरा शिव सम्मुखमो आय ॥ दर्शन दीना कोप करि त्रास भीम अति पाय ॥ ४०३५ ॥ रूप भयङ्कर पञ्चको तुरत फेर भव लीन ॥ धरि तारा निज नामको रूप दूसरो कीन ॥ ४०३६ ॥ चञ्चल रसना नीलवर्ण वदन कराल अपार ॥ जटा उर्द्ध अहि शीर्षमे शशि शर भाल मझार ॥ ४०३७ ॥ लम्बोदर त्रय चक्षु धरि बाघम्बर धरि गात ॥ नील पद्म असि मुण्ड कर अरु खर्पर युग हात ॥४०३८॥ शव आरोहण होय करि पहुंची सम्मुख आय ॥ वदन भयङ्कर देखके भीम भाग द्रुत जांय ॥ ४०३९ ॥ तब तृतीय तन और भी दुर्गा धारण कीन ॥ नाम राज राजेश्वरी निज चण्डी धरि दीन ॥ ४०४० ॥ रक्त वर्ण त्रय चक्षु अरु शीर्ष सुधाकर धार ॥ अङ्कुश शर अरु पाश धनु युग करमो धरि चार ॥ ४०४१॥ ईश्वर ब्रह्मा विष्णु अरु महेश रुद्र ले पञ्च ॥ पंच प्रेतकी शीर्ष पर तिष्ठी करिकै मञ्च ॥ ४०४२ ॥ पञ्च भयानक रूपको गङ्गाधर भय पाय ॥ चक्षु आपनी बन्द करि लीना तुरत फिराय ॥ ४०४३ ॥ तब चतुर्थ पुन रूपको उद्भव देवी कीन ॥ ख्याती निज भुवनेश्वरी सर्व्वाभीरणि दीन ॥ ४०४४ ॥ रक्त वर्ण तन आभरण आसन अम्बुज धार ॥

पाशाङ्कुश वर अभय शुभ धरि पाणी निरूचार ॥ ४०४५ ॥ अर्द्ध चन्द्र धार भालमो दुत्रण कीना तीन ॥ गर्व्व कल्पको कामको दर्शन अपनो दीन ॥ ४०४६ ॥ भयदायक लखि रूपको घोर भीम भय पाय ॥ अस्तुमतन पुन मातजो कीना धारण धाय ॥ ४०४७ ॥ ख्याती सुन्दर चण्डिका धार भैरवी खीन ॥ रक्त वर्ण अरु पाणि युग कमलासन निज कीन ॥ ४०४८ ॥ मुण्ड हार शुभ कण्ठमो नाना भूषण धार ॥ रुद्राक्ष हार वर अभय अन्य पाणि यह धार ॥ ४०४९ ॥ नयन तीन शशि भाल मे। धारण देवी कीन ॥ सन्मुख पतिके जायके दर्शन अपनो दीन ॥ ४०५० ॥ विश्वनाथ लखि रूप को हाते कम्पित गात ॥ अष्ठ भयङ्कर वेश तब कीना धारण मात ॥ ४०५१ । ख्याति छिन्नमस्ता प्रसू प्रगट आपनो कीन ॥ कर्ण युग्मके मध्यमे शुक्लोत्पल धरि लीन ॥ ४०५२ ॥ अर्द्ध चन्द्र शिर चक्षु त्रय और युग्म धरि हात ॥ रतो कामके शिश्न पर रतो शीर्ष पर मात । ३०५३ ॥ रक्त पद्म सम वर्ण वर यज्ञ सूत्र फणिधार ॥ वस्त्र हीन अरु कण्ठमो पहिर मुण्डकी हार ॥ ४०५४ ॥ काट खड्गसे मौलि गल करतल धारण कीन ॥ उद्भव

कीना। काठसे रुधिर धार निज तीन ॥ ४०५५ ॥ एक धार निज तुण्डसे करती मात अहार ॥ आस पास दोयोगिनी शवारूढ़ दोधार॥ ४०५६॥ करती भक्षण वर्णनौ नाम डाकिनी घोर ॥ मुन्द वाम धरि चक्रु को करती शङ्कर गोर ॥ ४०५७॥ तबते सप्तम रूप को देवी धारण कीन ॥ नाम श्रेष्ठ धूमावती धारि चण्डकालीन॥ ४०५८ ॥ अति वृद्धा करि रूपको धूमवर्ण धरि गात ॥ काक ध्वज रथकी विषे आरूढ़ा जगमात ॥ ४०५९ ॥ युग्म पाणि अतिशय कृशा कीन क्षुधासे रूप ॥ कम्पवान कर एक करि धार द्वितीयमो सूप॥ ४०६० ॥ पतिके सम्मुख जाय के दीना दर्शन मात ॥ पश्य भीम अति त्रास धरि होवैं कम्पित गात ॥ ४०६१ ॥ अष्टम तन पुन हर्ष के देवो उद्भव कीन ॥ ध्याती शुभ वगला मुखी निज दुर्गा धरि दीन ॥ ४०६२ ॥ पीताम्बर अरु आभरण भूषित करिके यत्न ॥ रत्नभवनके मध्यमो तिष्ठ सिंहा-सन रत्न ॥ ४०६३ ॥ एक असुरकी जीभको एक हात से खीच ॥ धम क्षाती भूपाणिसे मुद्गर ऊपर खीच ॥ ४०६४ ॥ चन्द्र खण्ड धरि भालमो लोचन कीना तीन ॥ देख भयानक रूपको स्थान त्याग भव दीन ॥ ४०६५ ॥ ज्यों मन्दिरको छोड़के भागे भोलानाथ ॥

नवम रूप त्यों मात धरि घेर लीन सम पाय ॥४०६६॥ पद्मासन कीना मणी रक्त वस्त्र तलवार ॥ चतुर्भुजा त्रय लोचना पाशाङ्कुश करधार ॥ ४०६७ ॥ खण्ड सुधाकर भाल पर मातङ्गी धरि नाम ॥ कोप धारि अति चित्तमो पहुंचो होकरि वाम ॥ ४०६८ ॥ देखि भयङ्कर रूपको तुरत फेर भव लीन ॥ दशम रूप तबै धारकी देवी दर्शन दीन ॥ ४०६९ ॥ स्वर्ण वर्ण आसन कमल चतुर्भुजा करि मात ॥ पद्म युग्म वर अभय युग कीना धारण हात ॥ ४०७० ॥ चतुर्दन्त वेष्टित रहि वेद प्रवेत शुभ दृष्टि ॥ रत्न कुम्भ अभिषेक करि कीना अमृत दृष्टि ॥ ४०७१ ॥ महा लक्ष्मी नामको धारण देवी कीन ॥ पतिकी सम्मुख आयकी दर्शन अपनो दीन ॥ ४०७२ ॥ पश्च भयङ्कर रूप दश भय आतुर भव होय ॥ पूछैं कम्पित गात करि अतिशय तिनसि रोय ॥ ४०७३ ॥ कोहौ तुम लोगन कहौ क्यो दीना भय आय ॥ कहां गई मेरी सती दीजे वेग बताय ॥ ४०७४ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

काली मूरति धारिकी पतिकी सम्मुख आय ॥ पूर्व्व कथा सब मात जो दीना तिन्हे जनाय ॥ दीना तिन्हे जनाय प्रसव त्रय देव कराये ॥ ब्रह्मा विष्णु

और आजको कहा बुझाये ॥ कीजै तपस कठोर वेग जलकि तट आई ॥ शुनत वचन तुम लोग तपस प्रारम्भ कराई ॥ ४०७५ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

मे धारया शव गात कराई ॥ पहुंची विष्णु निकट मे आई ॥ पचा कुगन्ध पशु बह भागे ॥ तब विरिश्चि सन्मुख हम लागे ॥ ४०७६ ॥ चतुर्हिंशा विधि तुराड फिराई ॥ ब्रह्म वेद सो लिख धराई ॥ तब समीप तब गमन करावैं ॥ धरि आसन निज आप बनावैं ॥ ४०७७ ॥ पति चित धर तब भजन कराये ॥ ताते मे तुमको पति पाये ॥ शुन शम्भु अतिशय हरषाई ॥ तन्त्र मन्त्र द्रुत त्यार कराई ॥ ४०७८ ॥

॥ अमला छन्द ॥

दश मूरतिको तब पूजन भीम करैं अतिशै मन मो हरषाई ॥ जग मात तवै वह मूरत लोप कह्यो ततकाल महासुख दाई ॥ निज वेश महा पुन धार सती पतिके निकटे पहुंची तब आई ॥ हर देख भये निज गौर शरीर लुका करि क्यों तन श्याम धराई ॥ ४०७९ ॥ तब मात भये कछु कारज हेतु प्रभो निज सेवक रंग करावैं ॥ अब शासन देहु पितालय जा करिके मख देख महादुख पावैं ॥ शुन

भीम भयो तिनको ततकाल यथा मन होय तथा तब आवैं ॥ तब ध्यान कह्यो रथमो जग मात पिता गृह भीतरमो जब पावैं ॥ ४०८० ॥ लखि मेचक रंग भयो तिनको तिनकी जननी मनमी कलपाई ॥ कालका स्वपना परतीत मुझे लखि मेचक रूप सती तब पाई ॥ भवको तब तात कुवाक भये लखिवी तब मेचक रंग दिखाई ॥ सुनके पतिको अपमान महा तनको निज नाश करी दुख पाई ॥ ४०८१ ॥ तिह कारण भीम करैं पितुको तब नाश महा मख साथ रिसाये ॥ अब मात अहार करी हमगो कुछ जान प्रसू निज मोह कराये ॥ सुनकी जग मात प्रसू कर से कछु कीन अहार महा हरषाये ॥ तब देखनको मख शाल गई लखि श्याम सुता नृप रंग रिसाये ॥ ४०८२ ॥ मुनि आदिक भूप रहे सुर जौन भये तिन को अति कोप कराई ॥ दुहिता मम गौर शरीर रही वह भंगड़ नाहिं अहार जुगाई ॥ तिह कारण हो करिकी अति मेचक पोषण गात पितालय आई ॥ वह भंगड़ं जीवत क्यो करि मे हमको अब देहुं अहार रखाई ॥ ४०८३ ॥ सुनकी मुनिदेव महीप सबै करि कोप भये तिनको गरजाये ॥ दुरवाक भये शठ शंकरको मुख जौन लखै तुमरो अब आये ॥ नर

कौन निवास करें अति रौरव भानु शशी अवतांहि रहाये ॥ तब कौन दशा यमराज करैं हमलोगनसे नहिं जात मथाये ॥४०८४॥ अस बोल सुनी सुरभूप तबै निज गेह गये अति क्रोध कराई ॥ तब आवत है शठ कोप महा तन धार सती निज पास बुलाई ॥ अब मंगल वास करैं यमलोक करौ तब वास पिता भय पाई ॥ शुनके अति क्रोध सती करिके तब बोलत हैं पितुको समुझाई ॥ ४०८५ ॥

॥ दोहरा ॥

गारी जो प्रभुको दिये वे मृत्युञ्जय भूप ॥ उनको कछु नहीं होयगा अब समझो तव रूप ॥ ४०८६ ॥

॥ अमला छन्द ॥

तब जात शरीर तजौं जब तात मिटै तब पाप समूह हमारी ॥ सब विप्र महा सुर जाहि भयो तिम का अपमान शुने अघमारो ॥ अस बोल सुनो मख भीतरमो द्रुत आ करिके अपनो तन जारो ॥ लखि सिख सबे अपने मनमो अति खेद करैं तब रोय अपारो ॥ ४०८७ ॥ तन त्याग सती द्रुत जाय हिमाचल गेह तबै अवतार धराई ॥ शिवको शिव दूत भये

सब हाल महा धरि कोप शिवालय आई ॥ सुनके तब नाथ सती अपमानन कारोतन त्याग महा दुख पाई ॥ मख कुण्ड विषै द्रुत कूद गई लखि लेख सबै अति रोय पलाई ॥ ४०८८ ॥ नरनाय कहो सब हाल महा सुरको तुम जा करिके समुझाये ॥ जिसमो भव दण्ड करैं अबही अघ कौन अघी यह घोर कराये ॥ सुनके अति क्रोध करो कर शूल लिये गण भूत पिशाच सिधाये ॥ अति मारहि मार अला करिके मख औौर पुरीजन नाश कराये ॥४०८९॥ तब भीम भयो नृपको करि कोप सती मम देहु मुझे शठ लाई ॥ सुनके मुख मौन करो दुखमे तब भूत पिशाच हनै सब आई ॥ तन चूर करैं पद घात महा करि योगिनिके गण दंत खवाई ॥ तब भैरव जा करिके शिरको असि मार भयं कर काट गिराई ॥ ४०९० ॥ शिवको तब शाशुभये शिवको तिनका शुभ नाम प्रसूति रहावैं ॥ पतिने अपराध करो अस नाथ कराल शजातिसका तस पावैं ॥ मम भाग भगा तब नाथ रही जग मात सुता जब मोर रहावैं ॥ मुझको तजिके मम नाश सती करि पाप कहां पर मौज करावैं ॥ ४०९१ ॥ लखिके तव शाशु नहीं यम-राज मुझे निजलोक विषे बुलवाये ॥ अब देहु मुझे

किनको जगनाथ करै मम को प्रतिपालन भाये ॥ शुनके नुतिको अति लाज महासुर धार पुरीजन हीन जिलाये ॥ अजके सम तुण्ड धरैं दक्षराज करै नुति पाद महेश मनाये ॥ ४०९२ ॥

॥ दोहरा ॥

शिव पद बन्दन पुण्यते पूर्व्ववस्तु निज पाय ॥ अरु निन्दाके पापसें अज मुख चिन्ह रहाय ॥ ४०९३ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

कलिके शठ जो कौट ममाना ॥ शिव निन्दा करतै मनमाना ॥ तिनकी क्या गति भीम करावैं ॥ सो कवि नहिं कछु भाष शकावैं ॥ ४०९४ ॥ साधुगणको विनय हमारी ॥ परहित कारण जो तन धारी ॥ शिव निन्दक शठको जब पावैं ॥ अति करि प्रीति तिन्है समुझावैं ॥ ४०९५ ॥ जाते निन्दा त्याग कराई ॥ लिवैं पूर्ब्ब पाप बकशाई ॥ क्षमारूप योगीश्वर भारी ॥ माफ करैं तिनको त्रिपुरारी ॥ ४०९६ ॥

॥ दोहरा ॥

ब्रह्माविष्णू आदिलै सुरगण अति हरषाय ॥ अघ भाग दे भीमको मेधपूर्ब करवाय ॥ ४०९७ ॥

॥ पादाकुलकछन्द ॥

कखिशिव शिवागात कलपावैं ॥ धरिमस्तक प्रस्थाग

करावैं ॥ जगदम्बा गुणको भवगाई ॥ भ्रमण करैं अतिशय कलपाई ॥ ४०९८ ॥ पश्यक्लेश भगवान डराये ॥ विधिको निकट भयो बुलवाये ॥ जबतक देवीगात रहावैं ॥ तबतक त्याग न भोम करावैं ॥४०९९॥ छिप करयो ताते मेंजाई ॥ गात काट सब देहु गिराई ॥ पस भया प्रभो प्रयाग कराये ॥ काट चक्रते दीन गिराये ॥ ४१०० ॥

॥ दोहरा ॥

जो जो तन जो स्थानमो दीना विष्णु गिराय ॥
महापीठ सो स्थानमो होत भई जगमाय ॥ ४१०१ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

करि एक्यावन खण्ड गिराई ॥ ताते पीठ एक्यावन माई ॥ जहां जहां देवीतन डारा ॥ हो भैरव भव तहां पधारा ॥ ४१०२ ॥ ब्रह्मरन्ध्र हिङ्कुलमो जाई ॥ दीना शीशत्र काटि गिराई ॥ ताते नामकोट्टवी पावैं ॥ भैरव लोचन भीम कहावैं ॥ ४१०३ ॥ शर्करारमो माधव जाई ॥ फेकैं तीन चक्षुको घाई ॥ महिष मर्हिनी नाम रखावैं ॥ अरु भैरव क्रोधीश कहावैं ॥ ॥ ४१०४ ॥

॥ दोहरा ॥

सुगन्धा मोजायके फेंक नासिका दीन ॥ पश्यक

भैरव मात निज नाम सुनन्दा कीन ॥ ४२०५ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

ज्वाला मुखमो अच्युत जाई ॥ दीना जिह्वा काट गिराई ॥ ताते नाम अम्बिका पावैं ॥ अरु भैरव उन्मत्त कहावैं ॥ ४१०६ ॥ पुन भैरव गिरिमो प्रभु जाये ॥ ओष्ठ चक्रते काट गिराये ॥ ताते नाम अवन्ती माई ॥ लम्ब कर्ण भैरव कहि लाई ॥ ४१०७ ॥ तबसे भीम प्रभास सिधाये ॥ अधर काट उत विष्णु गिराये ॥ नाम चन्द्र भागा धरि माई ॥ चक्र तुण्ड भैरव रखवाई ॥ ४१०८ ॥

॥ दोहरा ॥

दण्डक वनकी निकट मो जनस्थानमो जाय ॥
चिबुक काटके चक्रसे फेकैं त्रिभुवन राय
॥ ४१०९ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

देवी नाम भ्रामरी ताते ॥ विकृताक्ष भैरव हो जाते ॥ गोदावरी नदी तट जावैं ॥ वाम गण्डको काट गिरावैं ॥ ४११० ॥ विश्व मातृका नाम धराई ॥ अरु भैरव विश्वेश कहाई ॥ दक्षिण गाल मुकुन्द खपाये ॥ जाय गण्डको मध्य गिराये ॥ ४१११ ॥ नाम गण्डकी चण्डी ताते ॥ चक्र पाणि भैरव हो

जाते ॥ उह रदन गण भनन गिरावैं ॥ तातैं नारा-
यणी कहावैं ॥ ४११२ ॥

॥ दोहरा ॥

भैरवजी संकूर उत धारण ख्याती कीन ॥ पश्च
सिन्धुके मार्गको गङ्गा धर तवलीन ॥ ४११३ ॥

॥ पद्दाकुल छन्द ॥

अधो दन्त उत नाथ गिरावैं ॥ ताते नाम वराही
पावैं ॥ भैरव महा रुद्र कहिलाये ॥ करतोया नदि
तट भव आये ॥ ४११४॥ वामकर्ण उत विष्णु गिरावैं ॥
ताते नाम अपर्णय धरावैं ॥ अरु भैरव वामेश कहाये ॥
श्री पर्व्वत पर भीम सिधाये ॥ ४११५ ॥ वहां कर्ण
दक्षिणको धाई ॥ दोना लक्ष्मी कान्त गिराई ॥ ताते
नाम सुन्दरी पावैं ॥ भैरव सुन्दरानन्द कहावैं ॥
४११६ ॥

॥ दोहरा ॥

शीश जानकी बीचमो पहुंचे शङ्कर आय ॥ तहां
शीश फेकैं प्रभो अतिशय प्रीति कराय ॥ ४११७ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

उमा नाम देवी उत पाई ॥ भैरव नाम भुतेश
धराई ॥ किरीट कोणमो अच्युत जाये ॥ दोना वहां
किरीट गिराये ॥ ४११८॥ ताते भुवनेशी जग माई ॥

भैरव सिद्ध रूप कहि लाई ॥ महा देव श्रीहट्टसिधायी ॥ ग्रीवा केशव काट गिराये ॥ ४११९ ॥ महा लक्ष्मी नाम धरावैं ॥ भैरव सर्व्वा नन्द कहावैं ॥ पहुंचे काश्मीर मो पाई ॥ काट कराठ उत विष्णु गिराई ॥ ४१२० ॥

॥ दोहरा ॥

मात महा माया वहां कीना धारण नाम ॥
बीसन्ध्या ईश्वर उते भैरव कीना धाम ॥ ४१२१ ॥

॥ पद्दाकुलक छन्द ॥

रत्नावली स्थान मो जाई ॥ दीना दक्षिण स्कन्ध गिराई ॥ ताते मात शिवा कहि लावैं ॥ भैरव नाम कुमार धरावैं ॥ ४१२२ ॥ वाम स्कन्ध मिथिला मो आई ॥ दीना केशव काट गिराई ॥ ताते देवी महा कहावैं ॥ भैरव नाम महोदर पावैं ॥ ४१२३ ॥ दक्षिण अर्द्ध हस्तको धाई ॥ चट्टग्राम मो दीन गिराई ॥ ताते नाम भवानी पावैं ॥ भैरव शेखर चन्द्र कहावैं ॥ ४१२४ ॥

॥ दोहरा ॥

और अर्द्ध कर जायके मान सरोवर बीच ॥ काट
चक्रसे विष्णुजी फेकैं करसे घीच ॥ ४१२५ ॥

॥ पद्धाकुल छन्द ॥

ताते दाक्षायणी कहावैं ॥ विहर नाम भैरवको पावैं ॥ कफोणि उजानी जाय गिराई ॥ मङ्गल चण्डी मात कहाई ॥ ४१२६ ॥ भैरव कपिलाम्बर कहि लावैं ॥ तवसे मणी वेद मो पावैं ॥ काट तहां मणि-बन्ध गिराई ॥ ताते सावित्री कहि लाई ॥ ४१२७ ॥ स्थाणू भैरव नाम धराये ॥ तवसे भौम प्रयाग सिधाये ॥ युग्म पाणि को अंगुली धाई ॥ दोना भीशव तहां गिराई ॥ ४१२८ ॥

॥ दोहरा ॥

ताते भैरव दश भये और विष्णुकी माय ॥
महा विद्या दश होयके रही विवेणी छाय ॥ ४१२९ ॥

॥ पद्धाकुलक छन्द ॥

बाहूला मो पहुंचे आये ॥ वाम बाहु उत काट गिराये ॥ चण्डी नाम बाहुला ताते ॥ होवैं भीरुक भैरव जाते ॥ ४१३० ॥ पहुंचे मणीबन्धमो जाये ॥ मणीबन्ध उत वाम गिराये ॥ ताते नाम गायत्री माई ॥ भैरव सर्व्वानन्द कहाई ॥ ४१३१ ॥ जाल-न्धरमो पहुंचे जाये ॥ वहां पयोधर एक गिराये ॥ नाम त्रिपूर मालिनी माई ॥ भैरव भीषण नाम धराई ॥ ४१३२ ॥

॥ दोहरा ॥

रामगिरिमो जायके चक्री चक्र चलाय ॥
और पयोधर काटके दोना तहां गिराय ॥ ४१३३ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

ताते नाम शिवानी पाई ॥ भैरव ख्याती चगड धराई ॥ वैद्यनाथमो पहुंचे आये ॥ काटि हृदय उत विष्णु गिराये ॥ ४१३४ ॥ ताते जयदुर्गा जग माई ॥ वैद्यनाथ भैरव कहिलाई ॥ पहुंचे उत्कल मो जब आये ॥ दोना नाभी काट गिराये ॥ ४१३५ ॥ देवी विजया नाम धरावैं ॥ जय ख्याती भैरव जीपावैं ॥ पहुंचे काञ्ची देश मझारा ॥ काटि कटी केशव उत डारा ॥ ४१३६ ॥

॥ दोहरा ॥

ख्याती गर्भा वेद निज धारण देवी कीन ॥
रुरू नाम भैरव वहां धार आपनो लीन ॥ ४१३७ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

माधवपुरमो माधव आये ॥ फेकैं अर्द्ध नितम्ब खपाये ॥ ताते काली मात कहावैं ॥ भैरव असीताङ्ग कहिलावैं ॥ ४१३८ ॥ हरि नर्मदा तीर जब आये ॥ दोना अर्द्ध नितम्ब गिराये ॥ ताते नाम शोनाची माई ॥ भैरव भद्रसेन कहिलाई ॥ १४३९ ॥ पहुंचे

कामरूपमो आये ॥ काट चक्र स्त्रोचिन्ह गिराये ॥ कामाख्या ख्याती उतपावैं ॥ भैरव रावानन्द कहावैं ॥ ४१४० ॥

॥ दोहरा ॥

तबसे भव नेपालमो पहुंचे अति कलपाय ॥ जहां दक्षिण काटके प्रभु उत दीन गिराय ॥४१४१॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

मात महामाया कहिलावैं ॥ भैरव नाम कपाली पावैं ॥ पहुंचे भौम जयन्ता आये ॥ जहां दीना बाम गिराये ॥ ४१४२ ॥ नाम जयन्ती देवी पावैं ॥ भैरव क्रम देश्वर कहिलावैं ॥ त्रिपुरामो पहुंचे जब आये ॥ दीना दक्षिण चरण गिराये ॥ ४१४३ ॥ देवी त्रिपुरा नाम धरावैं ॥ नल भैरव ख्याती उतपावैं ॥ पहुंचे क्षीर ग्राममो आये ॥ दक्षिण पद अङ्गुष्ठ गिराये ॥ ४१४४ ॥

॥ दोहरा ॥

योगाध्या ताते धरी देवी अपनो नाम ॥ नाम क्षीर खण्डक तहां भैरव कीना धाम ॥ ४१४५ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

पहुंचे कलकत्ते त्रिपुरारी ॥ अंगुली पद दक्षिण की डारी ॥ ताते भई कालिका माई ॥ नकुलेश्वर

भैरव कहिलाई ॥ ४१४६॥ पहुंचे कुरुक्षेत्रमो जाये ॥ दक्षिण पदका गुल्फ गिराये ॥ ताते विमला मात कहावैं ॥ सम्वर्त्त ख्याति भैरव जोपावैं ॥ ४१४७ ॥ उतसे भीम विभास सिधाये ॥ वहां वामपद गुल्फ गिराये ॥ नाम भीमरूपा जग माई ॥ ख्याति कपाली भैरव पाई ॥ ४१४८ ॥

॥ दोहरा ॥

जाय तिरोता देशमो फेंक वामपद दीन ॥ भ्रमर नाम भैरव वहां देवी भ्रमरा कीन ॥ ४१४६ ॥

॥ कवित ॥

शुन्य शीर्ष लख करि चित्त मध्य शोक धरि हिमालय शैल पर तिष्टे ध्यान लायकै ॥ उदासीन हर पेख चिन्तावान सब लेख देवीके उद्देश तप प्रारम्भ करायकै ॥ तत्त्व सर्व्व सुर पाय ईश्वर समीप जाय जोड़कै प्रवेष्ट सब भगत बुझायकै ॥ सती गात त्याग कर हिमालय जाय घर अवतार लीन प्रीति तिनकी लखायकै ॥ ४१५० ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

तनया अग्र्य मेनका राणी ॥ ख्याती उमा धरैं तप खाणी ॥ शुन केशव अतिशय हरषाये ॥ मुनि नारदको त्वरित बुझाये ॥ ४१५१ ॥ दीन हिमालय

सदन पठाई ॥ देवोकी गुण गाय कराई ॥ पहुंचे विप्र हिमालय पाये ॥ पश्च महा आश्चर्य्य डराये ॥४१५२॥

॥ शोरठा ॥

वेश कुमारीधार चौषट्टी योगिनी तहां ॥ तिनकी उमा मझार शिवा शीव प्रतिबिम्ब गढ़ि ॥ ४१५३ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

विधि पूर्व्वक उहाह करावैं ॥ पश्च मुनीपदमो शिरनावैं ॥ मनमो आशीर्व्वाद कराई ॥ छल करिकी बोलैं जगमाई ॥४१५४॥ विप्रहोय पदमो शिरनाये ॥ अल्पायू मम काहि कराये ॥ शुन नारद भाषैं शिर-नाई ॥ जगदम्बा क्यों नाम धराई ॥ ४१५५ ॥

॥ शोरठा ॥

जगत पिता भव नाम जग जननी तुमको भयो ॥ तव विवाहकी काम मे आये जग मात कृत ॥ ४१५६ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

शुन देवी मनमो शरमावैं ॥ प्रभू समीप प्रयान करावैं ॥ पश्च मेनका गोद उठाई ॥ तवसे मुनिवर पहुंचे आई ॥ ४१५७ ॥ हर्ष हिमालय माथ निवाये ॥ और मेनका राणी आये ॥ मुनिवर आशीर्व्वाद कराई ॥ बोलें दम्पतिको समुझाई ॥ ४१५८ ॥

॥ शोरठा ॥

भाग्योदय तव देख तुष्ट त्रिभुवन होत हैं ॥
नाग मुनी अरु लेख कहां तलक वर्णन करूं ॥४१५९॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

जगत प्रसू अवतार धराई ॥ जिनको भयो उमा गिरि राई ॥ नारायण मुझको पठवाये ॥ शिव विवाहके हेतु बुझाये ॥ ४१६० ॥ क्या मरजी तव है गिरि राई ॥ शुनत शैलपति हर्ष अताई ॥ अस मै भाग्य कहां मुनि पावैं ॥ भीम जमाता मोर कहावैं ॥ ४१६१ ॥

॥ शोरठा ॥

मुनिवर भये हसाय भाग्योदय तवही भयो ॥
जव जगदम्बा आय भई आत्मजा भूप तव ॥४१६२॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

शुन भृगी भूधर हरषाये ॥ जोड़ प्रवेष्ट भये शिरनाये ॥ त्वरित लाय भवको मुनिराई ॥ देहु उमा का व्याह कराई ॥ ४१६३ ॥ शुनि मुनिवर अतिशय हरषाये ॥ नारायणको जाय जनाये ॥ तब केशव सव लेख बुलाई ॥ दै करि युक्ति भये समुझाई ॥ ४१६४ ॥

॥ सोरठा ॥

ध्यानारूढ़ शिव होय लिख रहे हैं शैल पर ॥
करी युक्ति द्रुत सोय अति खण्डन ध्यान को ॥४१६५॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

शुभ सुरगण भव निकट निधाये ॥ ध्यान भङ्गका कीन उपाये ॥ कोय तरे सुर नाहिं शकावें ॥ तब कुसुमेषूको बतलावें ॥ ४१६६ ॥ वाण आपनो वेग चलाई ॥ भञ्जन ध्यान करो भव जाई ॥ सुनिके वास मदन चलि पाये ॥ सुरगणको बोलैं अलपावे ॥४१६७॥

॥ सोरठा ॥

अवश्य मृत्यु सम होय भीम ध्यानकी भङ्गसे ॥
करौं तथापी सोय परहित कारण देव मे ॥ ४१६८ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

अनभवै दर्पक दर्प कराये ॥ बाण आपसे घोर चलाये ॥ छेदन रोप अनङ्ग करावैं ॥ ताके ध्यान भङ्ग होजावैं ॥४१६९॥ कोप धार भव मार तकाये ॥ भस्म-राशि मनसिज को जाये ॥ पश्च रती अति शोक कराई ॥ अग्नि मध्य कूदनको धाई ॥ ४१७० ॥

॥ सोरठ ॥

नभ वाणी तब होय क्यों नाहक शुचिसो जरें ॥
द्वापरमो तव सोय कन्तभरै प्रवताइको ॥ ४१७१ ॥

॥ पद्धाकुलक छन्द ॥

विष्णु कृष्ण अवतार धरावैं ॥ रुक्मिणिसे प्रभु व्याह करावैं ॥ तिनके गर्भ मध्यमो आई ॥ मकरध्वज अवतार धराई ॥ ४१७२ ॥ होवे शम्बर दनुज कठोरा ॥ तिसको हते कन्त रति तोरा ॥ हो दासी शम्बर घर आई ॥ पोषण उदर लगी कलपाई ॥ ४१७३ ॥

॥ सोरठा ॥

नारद मुनि वर आय शम्बरको भाषें तबें ॥ कृष्ण भवनमो आय तोन रिपु अवतार तब ॥ ४१७४ ॥

॥ पाद्धाकुलक छन्द ॥

तब शम्बर यादूकरि जावें ॥ कन्त अनङ्ग चुरा तब लावें ॥ फेकें सिन्धु मध्यमो जाई ॥ निगले मीन तिन्हे तब पाई॥४१७५॥ धोमर धरे मच्छ सो जाये ॥ शम्बर की वह नगर बगाये ॥ लखि पाठीन दनुज हरषाई ॥ कूटनकी तव निकट पठाई ॥ ४१७६ ॥

॥ सोरठा ॥

तामे अपनी कन्त पाकरिकी पालन लगी ॥ मुर्च्छ सीक करि अन्त हो प्रसन्न पति ले रहो ॥ ४१७७ ॥

॥ पाद्धाकुलक छन्द ॥

शुन अस नभवाणी हरषाई ॥ कन्त शोक सो त्याग कराई ॥ हत सुरगण मव निकट सिधारी ॥

पश्च भौम पूछैं मुसकाये ॥ ४१७८ ॥ कथा कारण दर्शन तब पावैं ॥ तब गोलोक कन्त बतलावैं ॥ देखो भवन हिमालय जाई ॥ उमा नाम अवतार धराई ॥ ४१७९ ॥

॥ सोरठा ॥

नारदको पठवाय कीना ठीक विवाह तब ॥ दूत तिनकी गृह जाय कीजे पाणी ग्रहणको ॥ ४१८० ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

सुन शम्भू भाखैं मुसकाई ॥ जोनिदेश प्रभु मोहि बताई ॥ सो करि हौं अबही मे जाये ॥ तब अच्युत नारद बुलवाये ॥ ४१८१ ॥ भये प्रभो मुनिको समुझाई ॥ दुलहा त्वरित सजावहु जाई ॥ सुनि नारद अतिशय हरषाये ॥ होना शिवको खूब सजाये ॥ ४१८२ ॥

॥ सोरठा ॥

अङ्ग विभूति लगाय घोर आभरण सर्पकी ॥ बाघाम्बर पहिराय बलद पृष्ट तिष्ठायके ॥ ४१८३ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

चली सर्व निर्झर हरषाई ॥ पहुंचे भवन हिमालय जाई ॥ परछन कीन मेनका धाये ॥ भय भूषण

लखिके भये पाये ॥ ४१८४ ॥ करैं बहुत निन्दा अव-राई ॥ तब देवी अतिशय बड़ाई ॥ मनै मनमो धर्म कीन विचारा ॥ आ कारण तनको मे जारा ॥ ४१८५ ॥

॥ सोरठा ॥

सो विपत्ति पुनि आय बाल रूपको धारकि ॥ अस विचार जग माय प्रभु शीर्ष निज पाणि दे ॥ ४१८६ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

दीना पाप दृष्टिको चाई ॥ दिव्य नयन रानी तब पाई ॥ अति सुन्दर शिवरूप लखाये ॥ हो प्रसन्न मुख मौन कराये ॥४१८७॥ अब शुभ लग्न समयको पाई ॥ विधि पूर्ब्बक कारमट करवाई ॥ भवको कन्या दीन करावें ॥ पश्य सर्ब्ब दिविषद हरखावें ॥४१८८॥

॥ सोरठ ॥

सब कुल रीति कराय हर्ष मेनका शैलपति ॥ भवके जमाती लाये यथा शक्ति सन्मान करि ॥४१८९॥

॥ कवित ॥

वर यावो लायें करि मनमें आनन्द धरि प्राशन कराय शैल राज हरषायके ॥ विदाय पुत्रिका कीन कौतुक बहुत दीन कैलाश शिखर सुरसब पहुंचायके ॥

अमरसदन धायँ शङ्कर अभिडका पाय सुखसि रहत मन अति हुलसायकै ॥ मदनगोराल सिंह उदार पूरण बीन श्रीकुरु पुरष ब्रह्म नानका मनायकै ॥ ४१९० ॥

अथ श्रीअगस्त्य मुनिका स्वदेशमो गमन और विश्वकर्म्मा कर्तक पुरी निर्म्माण एवं सीतादेवी का गर्भ तथा बनवास ।

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

इतनी कथा सुनायकै मुनि अगस्त्य हरषाय ॥ नारायणको भषत हैं मुझको करो बिदाय ॥ मुझको करो बिदाय बिनै बहु प्रभो मनाये ॥ करि अर्चन रघुनाथ बिप्रको बिदा कराये ॥ अवरज अनु बुलाय प्रभो भाषैं मुषदाई ॥ करिके समर कठोर कष्ट भूरी मैं पाई ॥ ४१९१ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

आप लोग अब राज करावैं ॥ कछू दिन मैं बिश्राम करावैं ॥ सुनत अवर वय भाष सुनाई ॥ करो

विश्राम आप रघुराई ॥ ४१९२ ॥ तब प्रसाद तब
राज सम्हालैं ॥ दुष्टनको यमपुर धरि घालैं ॥ पुन
रघुपति मनमो हरषाये ॥ मन्दर महल प्रयान कराये
॥ ४१९३ ॥ सीताको रघुनाथ चलावैं ॥ बन प्रमोद
निर्म्माण करावैं ॥ मुनि धरणी जा पति हरषाई ॥
कर्म्मविश्व विरंचि पठाई ॥ ४१९४ ॥ त्वष्टा प्रभृति
पुरीमो आये ॥ ईश्वरको करजोड़ मनाये ॥ ब्रह्माजो
सुभको पठवावैं ॥ कहा रचौं यह नाथ बतावैं
॥४१९५॥ नारायण मनमो मुसकाई ॥ देव शिल्पिको
ध्यान दिखाई ॥ कनक सुमेरु गिरीसि लाये ॥ बन
उपवन एक बाग बनाये ॥ ४१९६ ॥ स्वर्ण तरु फल
फूल धरावैं ॥ हेमताल बन कनक लगावैं ॥ हीरक
मौक्तिककी करि मार्ग ॥ रचो कोटक चबूतर बार्ग
॥ ४१९७ ॥

॥ कुमारिका खण्ड ॥

जम्बू द्वीपकी कोट गुण उत्तम होत प्रकाश ॥
तामे सीता रामको कीनो वासा जाय ॥ कीना वासा
आय पश्च निर्व्वैर करावैं ॥ कहिहु पति कहीं सकल
प्रभो भूगो सुख पाई ॥ राजसिंहासन तिष्ठ धर्म्मका
पन्थ चलाये ॥ स्वर्ग मृत्यु पाताल भाव सकल दुख
जाने ॥ ४१९८ ॥

॥ पाद्दाकुलक छन्द ॥

धर्मराज सम राज करावैं ॥ प्रजा सर्व्व सुखी सुख पावैं ॥ ऐसा कोय न राज कराई ॥ जैसा राज कीन रघुराई ॥ ४१९८ ॥ अरु अकाल मृत्यु नहिं होवै ॥ तस्कर चोर याहु सब खोवै ॥ पुत्र शोक पावै नहिं कोई ॥ धर्मकर्म परजा सब होई ॥ ४२०० ॥ सतयुग सम मेदनी देवैं ॥ गोसि दुग्ध चतुर गुण देवैं ॥ षट ऋतू निज सब फल धरते ॥ सुरनर मुनि दर्शन चित धरती ॥ ४२०१ ॥ सम सहस्र वर्ष चस बीता ॥ गर्भवती होवैं तब सीता ॥ पञ्चमास बीता जब पावे ॥ तब ईश्वर पूछें मुसकाये ॥ ४२०२ ॥ जो भावो सो देहु बताई ॥ हम देवें सो तुम्हें मगाई ॥ घूमत भूमि आ सर्व चलावैं ॥ मुनि भार्य्या से मन भावैं ॥ ४२०३ ॥ जब राघो होवैं मैमाई ॥ तब दर्शन करिहौं पुन जाई ॥ सो मुभको बन कन्त पठाये ॥ होगी मेरी वर्षा बनाये ॥ ४२०४ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

सुन सीता के वचनको भये प्रभो सुखपाय ॥ अब प्यारो सुभको कहो देवैं प्रात पठाय ॥ देवैं प्रात पठाय मन्त जो यन्य बनाये ॥ तामें तव बनवास लिखा पितनी दरशाये ॥ धर्ममीच ओ बाला सर्व

कौना मे पाई ॥ पथ वाको औरहा पाप कीजेवन जाई ॥ ४२०५ ॥

॥ पद्ाकुलक छन्द ॥

शुन सीता मनमो हरषाई ॥ प्रभु सिवामें दिवस बठाई ॥ पुनि पवरको साथ बतावें ॥ सीताको बनमो रथ पावें ॥ ४२०६ ॥ शुन लक्ष्मण बोलें करा पाई ॥ क्या कारण बनवास लगाई ॥ नारायण करि क्रोध बचाये ॥ कहा जीव कीजे सो आये ॥ ४२०७ ॥ शुनि पवरज मनमो भय पाई ॥ सीताको रथ पर बैठाई ॥ करि क्रन्दन प्रस्थान कराये ॥ बाल्मीक तपवनमो पाये ॥ ४२०८ ॥ सीताको वनमो बैठाई ॥ गये भवन लक्ष्मण कलपाई ॥ कमला हाहाकार करावें ॥ बालमीक मुनिवर शुनि पावें ॥ ४२०९ ॥ पहुचे निकट सुनी हरषाई ॥ भूषमाता तिनको टिकवाई ॥ लक्ष्मण कुब मुनिके गृह पावें ॥ सम्पद सबं विप्र तब पावें ॥ ४२१० ॥ तपवनमो तपसाल कराये ॥ रामानुज तबते गृह पाये ॥ समाचार सबगोय जनाये ॥ शुन रघुपति व्याकुल हो आये ॥ ४२११ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

करि क्रन्दन रघुपति भुरे लक्ष्मण खेद कढाय ॥ सोतेको गहि जानको प्रभुको दीन दिखाय ॥

प्रभुको दीन दिखाय विप्रगण नाथ बुलाये ॥ कञ्चन की वह मूर्ति वात किहुं भांत कराये ॥ गने खाजमा सिंह सुनो सज्जन सब कोई ॥ जाको जलको तृषा शिशिर चाटे क्या होई ॥ ४२१२ ॥

॥ अथ राजा मृगोपाख्यान ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

सीताको वनवास दे रामचन्द्र कलपाय ॥ राज काजको छोड़के बैठे सद्मन जाय ॥ बैठे सद्मन जाय कष्ट परजा गण पावैं ॥ चोरी डाका होय एकको एक सतावैं ॥ तब लछमण कर जोड़ प्रभोको नीति सुनाई ॥ राजामृग तजिराज योनि गोमायू पाई ॥ ४२१३ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

सुन रघुवीर भये मुसकाई ॥ तिनका हाल कहो सब भाई ॥ कवन देशके भूप रहाये ॥ योनि शृगाल हेतु क्या पाये ॥ ४२१४ ॥ तब लछमण कर. जोड़ बतावैं ॥ पुष्करजी सो भूप रहावैं ॥ नित गाभो नृप दान कराये ॥ तिनके पंडित नाथ जब आये ॥ ४२१५ ॥ जवन धेनु मृग दान कराई ॥ तवन गवी तिनकी दर पाई ॥ गोशाला मो बैठो जाये ॥ भूप सर्व्व

गोरू मगवाये ॥ ४२१६ ॥ तिनमे वह गाभी चलि आई ॥ भूप विप्रको दान कराई ॥ जब ब्राह्मण गाभी लै जाई ॥ पूर्व्व विप्र पहुंचे तब आये ॥ ४२१७ ॥ निज गाभीको पथ्य अलावैं ॥ वह धेनू मम काहि चुरावैं ॥ सुन ब्राह्मण वह ताहि बताये ॥ मुझको भुनता दान कराये ॥ ४२१८ ॥ कहा विप्र पुन ताहि बुझाई ॥ देहु भूपको मोहि पुछाई ॥ राजद्वार ब्राह्मण पख आये ॥ द्वारपालको हाल जनाये ॥ ४२१९ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

द्वारपाल द्रुत हाल सब भणे भूपको जाय ॥ काज पाय नृप गुप रहे विप्र युगल तड़फाय ॥ विप्र युगल तड़फाय शाप दै भवन सिधाये ॥ ताते जम्बुक योनि प्रभो भूपति मृग पाये ॥ भणे खालसा सिंह त्रिशुव कर्ता मुशकाई ॥ राज सिंहासन शिष्ट राजका काज कराई ॥ ४२२० ॥

अथ ज्ञान सन्यासी उपाख्यान ।

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

पुत्र तुल्य सब प्रजाको करते पालन नाथ ॥ कहां तलक सो ग्रन्थमो लिखौं अपाने हाथ ॥

लिखौं अपानि हाथ शारदा शेष थकावैं ॥ गणपति भव सुरशन्त अन्त जिनका नहिं पावैं ॥ कलिकी मेरौं कीट भणै क्यों करि सो भाई ॥ वाहिगुरुजी कण्ठतिष्ट निज ग्रन्थ बनाई ॥ ४२११ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

कुक्कुर एक सभामो आये ॥ नारायणको शीर्ष निवारे ॥ भणेश्वान क्रन्दन करि भारो ॥ मुझको प्रभु सन्यासो मारो ॥ ४२२२ ॥ मुण्ड चरण मम भञ्ज करायो ॥ नय दिनमो पहुंचे दूत आये ॥ दूसरा नाथ विचार करावैं ॥ क्या कारण मुझको वह घावैं ॥ ४२२३ ॥ सुनि राघव अति कोप कराये ॥ सार-मेयको भाष सुनाये ॥ चरण भङ्ग नहिं जाय शकावैं ॥ चढि स्यन्दन ताको धरि लावैं॥४२२४॥ अस भणश्वा अरु दूत पठाई ॥ सन्यासीको पकड़ मगाई ॥ पूछैं नाथ तिन्है धमकाये ॥ क्यों वर्ज्जन निज धर्म्म कराये ॥ ४२२५ ॥ काम क्रोध नहि तजन सकायो ॥ काहि व्यर्थ अस वेश धरायो ॥ परहिंसा परद्वेष करावैं ॥ क्यो करिमुक्ति पदारथ पावैं ॥४२२६ ॥ जबन अहिंसक हैं जग भाई ॥ तबन शन्त ख्याती कोपाई ॥ वेश धार हिंसा जो करते ॥ सो क्यौं करि भव सागर तरते ॥ ४२२७ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

असताको उपदेश दे पुन पूछें रघुनाथ ॥ क्या कारण यह श्वानका भम्न कौन परमाथ ॥ भम्न कौन परमाथ वेशधारी बतलाये ॥ नित मारग मम रोक श्वान यह शयन कराये ॥ ताते ताको दण्ड नाथ दीना मै जाई ॥ सुन रावन करि कोप भये तिनको समुझाई ॥ ४२२८ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

यदी कोय अपराध धरावें ॥ ताको दण्ड नरेश करावें ॥ आपदण्ड दीना क्यों जाई ॥ तब सन्यासी भाष सुनाई ॥ ४२२९ ॥ मानव जो अपराध करावें ॥ तौ नरेन्द्रको न्याय जनावें ॥ पशु पक्षी अपराध कराये ॥ सो क्या भये भूपको आये ॥ ४२३० ॥ सुन रघुपति बोलें मुसकाई ॥ जीव जन्तु जगमो जो भाई ॥ सब का रक्षा भूप करावें ॥ तब यह अन्त स्वर्गको जावें ॥ ४२३१ ॥ आत्मरूप घटघट भगवाना ॥ क्यों करि भिन्न पशू नर जाना ॥ सुनत वेश धारी भय पाये ॥ तब कुक्कुरको नाथ बुलाये ॥ ४२३२ ॥ क्या तुनको मै दण्ड करावें ॥ एपं श्वान प्रभुको बतलावें ॥ कालिंजरको देश पठाई ॥ राज तख्त दीजे रघु राई ॥ ४२३३ ॥ सुनत विहर्ष सभासद गाये ॥ क्या

पामर यह दण्ड कराये ॥ तब कुक्कुर बोले मुखकाई ॥ भीमसिंह उत्तम उतभाई ॥ ४२३४ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

तिनको पर्खें भूपनित यही चूक कछु होय ॥ ताते कुक्कुर योनिको पावे भुगता सोय ॥ पावे भुगता सोय भूप मैभीथे भाई ॥ पर्खन खण्डन कौन योनि ताते यह पाई ॥ भये खालसा सिंह सभा जन भ्रान्ति तजाये ॥ कालिञ्जरके तख्त प्रभो ताको बैठाये ॥ ४२३५ ॥

अथ लवण वध ।

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

कालिञ्जरके देशमो सन्यासी पठवाय ॥ परजाको पालन करैं जस गातजको माय ॥ जस गातजको माय सुनो भार्गव तब आये ॥ कीना प्रभो प्रणाम विप्र आशीस कराये ॥ दे आसन रघुबीर तपोश्वरको बैठावें ॥ पुन पूछें कर जोड़ नाथ कारण क्या आवें ॥ ४२३६ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

सुन भार्गव प्रभुको बतलावैं ॥ हिरण्यकशिपु को

यातु रखावैं ॥ उसमें सुत धरणी जन्मायो ॥ त्यःतो मधू यातु रखवायो ॥ ४२३७ ॥ तप कठोर बालक वह कीना ॥ काठा रीझ भीम है दीना ॥ ताते त्रिभुवन जीत कराये ॥ मथुरा नामक नगर बसाये ॥ ४२३८ ॥ रावणको भगनी हर लाई ॥ सुखसे ताको भोग कराई ॥ कुम्भनशी सुत प्रगव करायो ॥ लवण नाम ताका रखवायो ॥ ४२३९ ॥ मधू दैत जब प्राण तजावैं ॥ मथुरा राज लवण तब पावैं ॥ जनक अस्त्र बलसि रघुराई ॥ जीते तीन लोक वह जाई ॥ ४२४० ॥ नित अहार नर मांस करावैं ॥ सुर नर मुनि ताते दुख पावैं ॥ लङ्केश्वर यम लोक पठाये ॥ त्रिभुवनका प्रभु कष्ट कटाये ॥ ४२४१ ॥ अब ताको भगनी सुत आई ॥ लीजे अपनी सृष्टि बचाई ॥ शुनत वचन रघुनाथ चलाये ॥ देवैं मुनिवर लवण खपाये ॥ ४२४२ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

शुनत वचन रघुवीरसे भणै रिपूहन आय ॥ नाथ समर कीना वहुत मुझको देहु पठाय ॥ मुझको देहु पठाय प्रभो बोलैं मुसकाई ॥ लवण मारके वीरो राज भ्राता तुम जाई ॥ शुनत शत्रुहन

भये राम पदमो शिर नाये ॥ सेवक हो करि राज करौं क्यों करि मैं आये ॥ ४२४३ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

तब रघुपति बोले मुसकाई ॥ मम तब एक गात है भाई ॥ सुर द्रोही यम लोक पठाये ॥ राज करौ मथुरामो जाये ॥ ४२४४ ॥ असभण प्रभो विष्णु शर दोना ॥ ले प्रणाम शत्रुहन कौना ॥ कटक सहित प्रस्थान कराये ॥ वालमीक आश्रममो आये ॥ ४२४५ ॥ शिष्टाचार धरामर कौना ॥ भोजन सर्व फौजको दोना ॥ अर्द्धरात्रि पहुंचौ जब आई ॥ तब सीता सुत प्रसव कराई ॥ ४२४६ ॥ जमक पुत्र मुनिवर सुन पाये ॥ लव कुश सुन्दर नाम रखाये ॥ शिषगणको मुनिवर बतलावैं ॥ शत्रुहन यह हाल न पावैं ॥ ४२४७ ॥ मौन होय सब शिष्य रहाये ॥ प्रात बीर प्रस्थान कराये ॥ मुनि भार्गवकी आश्रम आई ॥ कमर कसा खोलैं रघुराई ॥ ४२४८ ॥ यथा शक्ति प्राशन करवाये ॥ मुनिवर प्रभुको युक्ति बताये ॥ जनक शस्त्र शिव गेह रखाई ॥ प्रात दुष्ट कानन मो जाई ॥ ४२४९ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

लघ लघ लघु जीवको धारके करे पहार ॥

सन्ध्या कारण पलकका शिर पर लावे भार ॥ शिर पर लावे भार प्रहर द्वितिय़ामो भाई ॥ प्रथम प्रहरकी मध्य अस्त्र छोनोगे जाई ॥ शुनत विप्रके वचन प्रभो प्रस्थान करायें ॥ हंस उदय जब होय नगर मथुरामो पायें ॥ ४२५० ॥

॥ पादाकुल छन्द ॥

जबते लवण निकट प्रभु आर्दे ॥ तबते लवण विपिन गो जायें ॥ भौम भवन तब नाथ सिधाये ॥ द्वारपालको मार भगाये ॥ ४२५१ ॥ शम्भूकी मन्दिर प्रभु जाई ॥ लीना जाठा अस्त्र उठाई ॥ खबर दूत भुभुजको दीना ॥ शुनकी लवण कोप बहु कीना ॥ ४२५२ ॥ पहुंचा सिंह नाद करि आये ॥ रामानुजको गर्जं बुलाये ॥ तव पुरखा मान्धाता रायं ॥ तिनको मे यम लोक पठायं ॥ ४२५३ ॥ रामानुज करि कोप चलाये ॥ तव मातुल मम ज्येष्ट खपाये ॥ मे तुझको यमलोक पठावें ॥ वदला पूर्व पुरुषका पावें ॥ ४२५४ ॥ यह प्रकार पख वोर चलाये ॥ समर पर-स्पर घोर कराये ॥ विष्णुवाण रघुनाथ चलाई ॥ लवण मुण्ड द्रुत काट गिराई ॥ ४२५५ ॥ गिरा दनुज धरणी तड़फाये ॥ सुर नर मुनि मङ्गल सव

गाये ॥ ब्रह्मा भयो नाथको भाई ॥ वर लौजे मरको को भाई ॥ ४२५६ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

वर मागें कर जोड़के रामभक्त हरषाय ॥ सुर नर मुनि यह देशमो बसैं दुहिणा सब आय ॥ बसैं दुहिणा सब आय विधाता हर्ष बढ़ाये ॥ तव दर्शन जो करैं तवन निर्झर हो जाये ॥ वसे नगर यह नाथ सदा वासा तव होई ॥ जो जन दर्शन करैं स्वर्ग पावैं नर सोई ॥ ४२५७ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

असभण विधि प्रस्थान कराये ॥ नगर खूब शत्रुघ्न बसाये ॥ वर्ष प्रभाकर वास कराई ॥ चले अवधि भेटनको भाई ॥ ४२५८ ॥ नदि नाला डाकत चलि जावैं ॥ वालमीक आश्रममो आवैं ॥ मुनि वर शिष्टा-चार कराई ॥ वलय सहित प्राशन करवाई ॥ ४२५९ ॥ पुत्र युगल सीताके आये ॥ रामायणको गाण कराये ॥ वीणा यन्त्र बजा पख भाई ॥ तान मार अस ग्रन्थ चलाई ॥ ४२६० ॥ शुनत मोहि शत्रुघ्न रहाये ॥ वालमीक मुनिसे बतलाये ॥ किनके पुत्र कहांसे आवैं ॥ ग्रन्थ परम यह कवन बनावैं ॥ ४२६१ ॥ वालमीक बोलैं मुशकाई ॥ मम कृत ग्रन्थ शुनो

रघुराई ॥ परम पुरुष सुत युगल पठाये ॥ रामायण शिक्षणको पाये ॥ ४२६२ ॥ सुनत रिपुहन हर्ष बढ़ाई ॥ प्रात अवधि प्रस्थान कराई ॥ सन्ध्या होत भवनमो आये ॥ रघुपतिको प्रणिपात कराये ॥ ४२६३ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

दै करि आशीर्व्वादको नाथ गले लपटाय ॥ भरत लक्ष्मण हर्षके लीना कण्ठ लगाय ॥ लीना कण्ठ लगाय माथ शत्रुघ्न निवाये ॥ जननी गणको भेट समरका हाल जनाये ॥ भये खालसा सिंह सुनत पुरजन हरषावैं ॥ करि प्रागम युग भात रात भरवार करावैं ॥ ४२६४ ॥

अथ दैत्यराजा उपाख्यान ।

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

ले अवरज गणको प्रभो सुखसे करते राज ॥ मुनि अगस्त्यके भवनमो चले नाथ सुर काज ॥ चले नाथ सुरकाज राम कानन मो आये ॥ ब्रह्मादिक सब लिख पश्य दर्शनको धाये ॥ लख लख करि नुती अमर प्रस्थान कराई ॥ मुनि अगस्त्यके सदन नाथ पहुंचे तब आई ॥ ४२६५ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

शिष्टाचार मुनीश्वर कीना ॥ पाम भन्न भोजन-को दीना ॥ रत्न जड़े भूषण लै आये ॥ रघुपतिको मुनि दान कराये ॥ ४२६६ ॥ नारायण बोले सुग-काई ॥ क्यों करि ग्रहण करौं मुनि राई ॥ वेदशास्त्र सुरमुनि बतलावैं ॥ द्विजको छत्री दान करावैं ॥ ४२६७ ॥ अस नहि भयो कबी मुनि राई ॥ छत्रीको द्विज दान कराई ॥ भणै अगस्त्य मुनी हरषाये ॥ ईश्वर हो छत्री बतलाये ॥ ४२६८ ॥ लोचन हीन जगत मो जोई ॥ छत्री भणै नाथको सोई ॥ जाको तप बल है रघुराई ॥ सो नारायण रूप लखाई ॥ ४२६९ ॥ शुनत बचन प्रभु मौन रहाये ॥ विप्र सर्व्वं भूषण पहिराये ॥ हर्ष प्रभो पूछैं मुषकाई ॥ भूषण दिव्य कहांसे पाई ॥ ४२७० ॥ भणै विप्र प्रभुको समु-झाये ॥ भूषण स्वर्ग पुवसे पाये ॥ तिनकी प्रभु मै कथा शुनावै ॥ वासर चन्द्र विपिन मो जावैं ॥ ४२७१ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

तहां सरोवर दिव्य है ताके तट रघुनाथ ॥ मुर्दा सुन्दर सोम है ताके कोय न साथ ॥ ताके कोय न साथ पुरुष सुन्दर भू धाये ॥ करि भोजन

अब तीन स्वर्ग प्रस्थान कराये ॥ तिनको मै कर जोड़ कहा मुझको बतलावैं ॥ अमर होय अब काहि आप आहार करावैं ॥ ४२७२ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

शुन समीप पहुंचे मम आये । पाणि जोड़ मुझको बतलाये ॥ स्वर्ग भूप मम जनक रहाई ॥ दैत्य नाम जानो मम भाई ॥ ४२७३ ॥ कछुक दिवस मे राज कराये ॥ तप कारण बन मो यह आये ॥ उग्र तपस करि गात तजाई ॥ ताते स्वर्गबास मे पाई ॥ ४२७४ ॥ रत्न कनक मे दान कराये ॥ ताते यह भूषण मे पाये ॥ अन्न कमल नहि दान कराई ॥ तिहं कारण भोजन नहिं पाई ॥ ४२७५ ॥ कष्ट क्षुधातुर हो अतिपाये ॥ ब्रह्माको निज कष्ट जनाये ॥ भणे विरिञ्चि मुझे समुझाई ॥ पूर्व दान पावैं पर पाई ॥ ४२७६ ॥ अन्न तोर नहिं दान कराये ॥ ताते अन्न कमल नहिं पाये ॥ जवन गात तजि सुर तन पाई ॥ ताको नित भोजन करु जाई ॥ ४२७७ ॥ तबते निज तनमे यह खावैं ॥ शुनत प्रभो मे युक्ति करावैं ॥ अक्षतका तण्डुल दै दीना ॥ मुल्य बोल भूषण यह लीना ॥ ४२७८ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

सो तण्डुल वह पुरुषसे लीना दान कराय ॥
ताते तिनको स्वर्गमे नित पदार मिलि आय ॥
नित पदार मिलि आय सुयश मेरो वह गावै ॥ सो
भूषण यह नाथ पापको दान करावैं ॥ भये खालसा
सिंह प्रभो सुनकै हरषाये ॥ ले आत्मनका दान
भवन प्रस्थान कराये ॥ ४२७९ ॥

अथ वेतासुरोपाख्यान।

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

मुनि अगस्त्यके सदनसे आ करिकै रघुनाथ ॥
प्रजा सर्व्व पालन करैं ले अवरज निज साथ ॥
ले अवरज निज साथ नाथ बोलैं सुखकाई ॥ रावण
ब्राह्मण पुत्र मार भूरी दुख पाई ॥ राजसूय करि
मेध पापको देहु नशाये ॥ सुनत भरत कर जोड़
भयें पदमो शिरनाये ॥ ४२८० ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

एकवार तव नाम अलाये ॥ कोट ब्रह्महत्या
कटि जाये ॥ रावण दुष्ट यातुको घावैं ॥ हत्या लगी

नाथ बतलावें ॥ ४२८१ ॥ सुन रघुनाथ भये समु-
झाये ॥ विप्र पुत्र रावण कहिलाये ॥ मै नहि करौं
मेघ जो भाई ॥ द्विज गणका महिमा घट जाई
॥ ४२८३ ॥ विप्र यही अपराध करावें ॥ यातु बोल
ताको खल घावें ॥ ताते यज्ञ करौं मै भाई ॥ जाते
कष्ट विप्र नहिं माई ॥ ४२८४ ॥ सुनत भरत ह्वो
मौन रहाये ॥ तब लक्ष्मण करजोड़ चलाये ॥ ब्रह्म-
हत्या सुर कान्त करावें ॥ अश्वमेध करि ताहि हटावें
॥ ४२८५ ॥ तब रघुवीर भये मुशकाई ॥ तिनको
कथा कही.सब भाई ॥ तब लक्ष्मण करजोड़ चलावें ॥
वैत्रासुर भू असुर रहावें ॥ ४२८६ ॥ धर्मवन्त द्विज
पुत्र रहाये ॥ पुत्र तुल्य निज प्रजा रखाये ॥ सुतको
राज तखत बैठावें ॥ तप करणे काननमो जावें
॥ ४२८७ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

तहां घोर तप नृप करैं पश्य इन्द्र भय पाय ॥
नारायणको जायके करि क्रन्दन वतलाय ॥ करि
क्रन्दन वतलाय असुर तप घोर करावें ॥ क्या
जानै क्या नाथ तिन्है वर आप चलावें ॥
ताका मस्तक काट अभय मुझको कर दीजे ॥ तब
कमलापति भये भूप क्यों करि वध कीजे ॥ ४२८८ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

मम सेवक वेत्रासुर भाई ॥ क्यों करि तिनको देहुं खपाई ॥ सुन वासव अति कोप कराये ॥ वेत्रा-सुरपर वज्र चलाये ॥ ४२८९ ॥ मुण्डकाटि पञ्च टूक कराई ॥ विष्णुलोक पहुंचा वह जाई ॥ ब्रह्महत्या सुर पति पे आये ॥ तन प्रवेश करि चेत हराये ॥४२९०॥ मृत्यु तुल्य सुर कान्त रहावें ॥ विष्णुलोक सब लेख सिधावें ॥ पाणि जोड़ करिके नुति भारी ॥ विष्णुको सब हाल गुजारी ॥४२९१॥ नारायण बोलें समुझाये ॥ सुरपतिसे सङ्कल्प कराये ॥ अश्वमेध कीजे सुर जाई ॥ ब्रह्मपाप तब जाय नशाई ॥ ४२९२ ॥ तब निर्ज्जर पहुंचे सब आये ॥ इन्द्र हेतु मख बाह कराये ॥ वेद भाग हत्या हो जावें ॥ स्थान चार प्रस्थान करावे ॥ ४२९३ ॥ एक अंश जलमो चलि जाये ॥ दूसर भाग तरू पर आये ॥ तीसर रजस्वला जो नारी ॥ अन्तभाग पाताल सिधारी ॥ ४२९४ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

यह प्रकार युगभाग हो बैठी हत्या जाय ॥ तब चेतनको पायके सुरपति राज कराय ॥ सुरपति राज कराय प्रभो बोले हरषाई ॥ सत्यवचन तब भ्रात इला भी शाप नशाई ॥ भणे खालसा सिंह अवर

पूछें मुशकाये ॥ अश्वमेध करि आप कुलाकिनका प्रभु पाये ॥ ४२९५ ॥

अथ इला राजा उपाख्यान ।

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

सुन अवरजके वचनको भये नाथ मुशकाय ॥ पुत्र प्रजापति भूपके ख्याती ईला पाय ॥ ख्याती ईला पाय भूप हो राज करावैं ॥ कछुक दिवसके बाद अहिन तिनका अब आवैं ॥ शङ्करके बन जाय हरिण मारनको भाई ॥ जलक्रीड़ा जित करैं शिवाशिवजी हरषाई ॥ ४२९६ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

पश्य रुद्र अति कोप करारे ॥दुष्ट त्रिया हो गर्ज्ज चलाये ॥ सुन भुनता नारी तन पाई ॥ गौरीके पदमो शिर नाई ॥ ४२९७ ॥ करि क्रन्दन तिनको रिझगावैं ॥ तुष्ट अम्बिका होय चलावैं ॥ मास चन्द्र तक नारि रहायो ॥ दूसरमास पुरुष तन पायो ॥४२९८॥ मानव हो निज राज करावैं ॥ मास बाद नारी हो जावैं ॥ नारि होय सब बात भुलाई ॥ करो वास कानन मो भाई ॥ ४२९९ ॥ अस दुर्गा वर दान अलावैं ॥

म स बाद निज रूप धरावैं ॥ गयो गेह भूभुज हर षाये ॥ मास निशाकर राज कराये ॥ ४३०० ॥ मास द्वितीय लग्यो जब आई ॥ तिया होय बनको नृप धाई ॥ यह प्रकार आवैं पुन जावैं ॥ चन्द्रात्मज देखनको पावैं ॥ ४३०१ ॥ सुन्दर वेश पश्य बबराई ॥ जप तप संयम सर्व्व तजाई ॥ धरि ताको शृङ्गार करावैं ॥ गर्भवती ईला हो जावैं ॥ ४३०२ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

काल पाय करि पुत्र सो ईला प्रसव कराय ॥ पुरूरवा ख्याती धरैं पुरुष भूप हो जाय ॥ पुरुष भूप हो जाय हाल चन्द्राङ्गज पाई ॥ अश्वमेध करवाय शाप ताका कटवाई ॥ भणै खालसासिंह शुनत लछमण हरषाये ॥ अश्वमेध प्रभु करो अवर गण हर्ष चलाये ॥ ४३०३ ॥

अथ महाराज श्रीरामचन्द्रजीका अश्वमेध ।

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

शुन अवरजके बचनको भये प्रभो हरषाय ॥ अश्वमेधका द्रव्यसब दीजे त्यार कराय ॥ दीजे त्यार

शराय भात लोचन हरषाये ॥ बीसरै सागर मध्य वस्तु एकत्र कराये ॥ कर्म्मा विश्व बुलाय विधाती अवध पठाई ॥ मास भूमिकी बीच मेंध शाला बनवाई ॥ ४३०४ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

आमन्त्रण सब देश कराये ॥ ताते सर्व्व मुनी-वर आये ॥ जमदग्नी भार्गव मुनिराई ॥ सुवर्ण पराशर और रहाई ॥ ४३०५ ॥ भरद्वाज गौतम दुर्व्वासा ॥ दस्तदीर्घ आस्तिक दुख नाशा ॥ मत्स्यकार्ण सङ्कोपन नामं ॥ ऐषिक दत्त मुनी सुख धामं ॥ ४३०६ ॥ विष्णुपद कुशध्वज मुनिराई ॥ संनक सनातन कपिल रहाई ॥ सनत कुमार गर्ग बलि आवैं ॥ च्यवन शाण्डिल धौर्व्व कहावैं ॥ ४३०७ ॥ शरभङ्ग दधीचि चित्र विक नामं ॥ जैमिनि शतानन्द सुखधामं ॥ विश्वश्रवा मातङ्ग कहायं ॥ नारद अज्ञु विभाण्डक आयं ॥ ४३०८ ॥ वालमीक मुनि शृङ्ग रहाये ॥ कहंलग लिखौ नाम मै गाये ॥ अस्त उदय तक जवन रहावैं ॥ तवन सर्व्व देखन मख आवैं ॥ ४३०९ ॥ यती सती ब्राह्मण नर नारी ॥ आये सब देखन मख भारी ॥ किष्किन्ध्यामो खबर पठाये ॥ अङ्गद और कौश पति आये ॥ ४३१० ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

सरभ सुषेण कुमूद अरु नल्लो आम्बुवान ॥ नल आदिक सब सर्वं को ले तिष्टे भगवान ॥ सो तिष्ठे भगवान सन्त लङ्कापति आये ॥ कटक सहित रघुवीर निकट अपने तीष्ठाये ॥ उदय अस्तके मध्य रहे भुनता जो कोई ॥ सब आये मख शाल नगर शोभा अति होई ॥ ४३११ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

इन्द्रादिक निर्ज्झर गण आये ॥ मुनिवशिष्ट मख करण लगाये ॥ जनक जानकीको मगवाई ॥ गांठ जोड़ बैठे रघुराई ॥ ४३१२ ॥ ब्रह्म मन्त्र पढ़ि अग्नि जलाये ॥ द्विज स्वाहा भण हव्य गिराये ॥ पावक लाट गगण लो जावैं ॥ नारायण मख बाह मगावैं ॥ ४३१३ ॥ कृष्णवर्णं खुर शुक्ल रङ्गाये ॥ स्वर्णवर्णं पञ्च कर्णं धराये ॥ ताके शिर जय पत्र लिखाई ॥ अश्वमेध करतै रघुराई ॥ ४३१४ ॥ वीर पुत्र जो वीर कहावैं ॥ सो घोटक मम थाम रखावैं ॥ अस लिख बाजिन भाल बंधाये ॥ छोड़े नगर मध्य फरवाये ॥ ४३१५ ॥ कटक सहित शत्रुघ्न बुलाई ॥ दीना अर्ज्जुन साथ पठाई ॥ पूर्ब्ब दिशा प्रस्थान कराये ॥ कोय न हयको शाम शङ्काये ॥ ४३१६ ॥ विरूपाक्ष नामक गिरि पावैं ॥

पर्ब्बत नामक भूप रहावैं ॥ सो घोटकको थाम रखाई ॥ बांधि तिन्है शत्रुघ्न पठाई ॥ ४३१७ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

रघुपतिका दर्शन करै अवधि पुरीमो आय ॥ तत्त काल बन्धन खसै नृप पर्ब्बत हरषाय ॥ नृप पर्ब्बत हरषाय जोड़ कर स्तोत्र अलाये ॥ भव सागरका बन्ध कटै दर्शन तव पाये ॥ शुनत वचन रघुनाथ निकट तिनको लोटावैं ॥ लै घोटक शत्रुघ्न दिशा उत्तरको धावैं ॥ ४३१८ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

जो जो देश मध्य है जावैं ॥ सो सो भूप नजर लै आवैं ॥ कोय तुरग नहिं थाम शकाये ॥ गिरि कैलाश नांव हय जाये ॥ ४३१९ ॥ विक्रम नामक भूप कहावैं ॥ सो सैधवको थाम रखावैं ॥ तिनसे समर रिपुहन करते ॥ जीत प्रधन ताको पुन धरते ॥ ४३२० ॥ कर बन्धन करि अवधि पठाये ॥ दर्शन मात्र मुक्त हो जाये ॥ कोना कोट नुती नृप आई ॥ नाथ निकट ताको बैठाई ॥ ४३२१ ॥ पश्चिम दौक वाह लै धाये ॥ घेरा व्याध कोट तय आये ॥ तिन सबको शत्रुघ्न खपावैं ॥ लै अर्ब्बन दक्षिण दिश जावैं ॥ ४३२२ ॥ बालमीक मुनिके बन

आये ॥ लव कुश तुरग देख हरषाये ॥ कोप करैं जयपत्र पढ़ाई ॥ अश्व भ्रात पख बांध रखाई ॥ ४२२३ ॥ कीना समर रिपूहन आये ॥ को ताको कवि भोष शकाये ॥ कोमल गात शिशू पख भाई ॥ सो शत्रुघ्न वीरको घाई ॥ ४२२४ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

बलयं सर्बं तव भागकी भगे अवधिमो जाय ॥ शुनत अवर वधको प्रभो लक्ष्मण भरत पठाय ॥ लक्ष्मण भरत पठाय प्रथम धरणी मो आये ॥ राम तुल्य लखि रूप युग्म भ्राता भय पाये ॥ सीता सुत पख गर्ज्जं समर कीना अस धाई ॥ कहां तलकसो लिखौं ग्रन्थ बहुता बढ़ जाई ॥ ४२२५ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

लक्ष्मण पर कुश बाण चलाये ॥ गिरे वीर धरणी तड़फाये ॥ पश्च्य भरत अति कोप कराई ॥ भिड़े गर्ज्जं सम्मुख द्रुत धाई ॥ ४२२६ ॥ तिनको लव शर मार गिराये ॥ भागे कटक सर्व्व भय पाये ॥ नारायणको हाल जनायो ॥ शुन रघुपति अतिशय भय पायो ॥ ४२२७ ॥ महावीर आदिक ले वीरं ॥ चले प्रभो कर मो धरि तीरं ॥ बलय सहित लङ्का-पति जावैं ॥ प्रलय काल सम शोर मचावैं ॥ ४२२८ ॥

पहुंचे समर भूमिमो धाये ॥ पश्य प्रभो सुतको हरषाये ॥ कौशकान्त लक्ष्मि बतावें ॥ राम नयन देखन में पावें ॥ ४३२९ ॥ सुतसे समर करौं कसु जाई ॥ तब सम रूप लखौं रघुराई ॥ तब रघुपति बोले मुसकाये ॥ माया ते मम रूप धराये ॥ ४३३० ॥ भूत प्रेत क्या सुर हैं कोई ॥ क्या मम पुत्र युगल यह होई ॥ सीताको वनवास कराये ॥ मास मास तब गर्भ धराये ॥ ४३३१ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

नारायणकी वचन सुन भये विभीषणसन्त ॥ सत्य सत्य तव पुत्र हैं क्यों करि करि हौ अन्त ॥ क्यों करि करि हौ अन्त नाथ बोलैं घबड़ाई ॥ पूछौं सुतसे जाय पुत्र किनके हैं भाई ॥ चले विभीषण शक्त पुत्र शर चाप लगाये ॥ भागे ताको देखु सन्त मनमो भय पाये ॥ ४३३२ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

अब कुशने घेरा द्रुत धाये ॥ यातु सर्व्व तब बाण चलाये ॥ भयो परस्पर खूब लड़ाई ॥ सीताद्दुत बलको धरिध्याई ॥ ४३३३ ॥ तब सन्मुख सुग्रीव सिधाये ॥ कीन्हा घोर समर सुत धाये ॥ कटक सहित तिनको सुतघाई ॥ तब रण कीन पवन सुत धाई ॥ ४३३४ ॥

तिनको भी सीता सुत घाये ॥ मल्ल आदिक पहुँचे कपि धाये ॥ सबको सुत पवन मार गिरावें ॥ नारायण लड़नें तब आवें ॥ ४३३५ ॥ लव कुशनें मारा शर धाई ॥ चरण चूम खग गमन कराई ॥ रामचन्द्र तब बाण चलाये ॥ सो सुतके चूमे गिर आये ॥ ४३३६ ॥ पश्चे अमर मनमो हरषावें ॥ जनकपुत्र भल युद्ध करावें ॥ नारायण शर गर्व्व चलाये ॥ सुतको लगे पुष्प सम आये ॥ ४३३७ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

अखय जीत शर जोड़के मारें लवकुश धाय ॥ गिरे अचेतन होयके विश्वकर्म्म शर खाय ॥ विश्वकर्म्म शर खाय युगल भ्राता तब आई ॥ प्रभुका कुण्डल चाप बाण कीना हरषाई ॥ जामवन्त हनुमन्त युगल भ्राता ले धाये ॥ जननीको दिखलाय हर्ष रण हाल जनाये ॥ ४३३८ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

हाहाकार करें शुन माई ॥ कराघात करि माथ खपाई ॥ लव कुशको बोलें धमकाये ॥ पापी हत्या जनक कराये ॥ ४३३९ ॥ शुनतें युगल भ्राता भय पाई ॥ करि क्रन्दन लोटैं तड़फाई ॥ सीता रामनाम गुण गाये ॥ जामवन्त हनुमन्त जिलाये ॥ ४३४० ॥

वीर युगल चेतनको पाई ॥ जगदम्बा पदमो शिर नाई ॥ आशीर्व्वाद मात दे भाषे ॥ हाल सर्व्व मनमो यह राखे ॥ ४३४१ ॥ समर भूमि सीता तव आई ॥ निरख कान्त लोटैं तड़फाई ॥ तवन लिखा मुझसे नहि जाये ॥ जवनकौन माता गम आये ॥ ४३४२ ॥ सती होनको कौन तयारी ॥ आये बालमीक मुनि भारी ॥ भणै जानकीको समुझाई ॥ क्यों तू जरैं अग्निमो माई ॥ ४३४३ ॥ लै आत्मज आश्रममो जावैं ॥ अबहो प्राणनाथ तव पावैं ॥ कवन प्रभोको मार शकाये ॥ ग्रन्थ कौन पूरण मम आये ॥ ४३४४ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

अस भण सीताको मुनी पुत्र सहित लै जाय ॥ आश्रममो तौष्ठायकै रण अवनी पुन आय ॥ रण अवनी पुन आय विप्र द्रुत ध्यान लगाई ॥ मृत्युन् जीवी कुण्ड ओर देखनको पाई ॥ शिष्य सर्व पठवाय उदक मुनि वर मगवाये ॥ करि सिञ्चन सब कटक और रघुनाथ जिलाये ॥ ४३४५ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

पश्चविप्रको नाथ अलावैं ॥ कहां वीर सुत मोहि बतावैं ॥ तिनको मै यमलोक पठाई ॥ करौं मेध मुनिवर गृह जाई ॥ ४३४६ ॥ शुन मुनिवर बोलैं

समर कराये ॥ मारे पुत्र युगल वह पाये ॥ मुनि प्रसाद जीवन प्रभु पाई ॥ कीना अश्वमेध यह आई ॥ ४३५८ ॥ दान पुण्य बहु भांत कराये ॥ सुत भार्य्या नहिं भवन बुलाये ॥ यतनी कथा पुत्र जब गाई ॥ तब राघव पूछैं मुसकाई ॥ ४३५९ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

को गायक पख भ्रात हौ मुझको देहु बताय ॥ तव स्वरूप पख बीरने मुझको दीन खपाय ॥ मुझको दीन खपाय पुत्र बोलैं मुसकाये ॥ जनक नाम मम नाथ मात नहिं मोहि बताये ॥ सीता जननी नाम जनक मातामह जानौ ॥ दशरथ दादा नाम भवन जङ्गल मो मानौ ॥ ४३६० ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

शुन रघुपति अतिशय कलपाये ॥ पुत्र युग्म द्रुत गोद उठाये ॥ करि क्रन्दन उर मध्य लगावैं ॥ बालमीक मुनिसे बतलावैं ॥ ४३६१ ॥ कपट धार मुनि राख रहाये ॥ मुझको कछु नहिं खबर बनाये ॥ भये विप्र प्रभुको मुसकाई ॥ सब तुम जानत हौ रघुराई ॥ ४३६२ ॥ मै क्या भखौं नाथको आये ॥ रट तव नाम मुनी कहे आये ॥ शुन रघुबीर भये सुख-काई ॥ लावैं द्रुत सीताको आई ॥ ४३६३ ॥ शुनत

वचन मुनिराज सिधाये ॥ पुष्पक पर सीता ले आये ॥ मुनिवरको रघुनाथ पठावें ॥ सभामध्य सीताको लावें ॥ ४२६४ ॥ शुनत विप्र मनमो कलपाये ॥ सभा मध्य सीता ले आये ॥ कन्त चरण वन्दन करि माई ॥ करि क्रन्दन कर जोड़ पठाई ॥ ४२६५ ॥ धन्य भाग दर्शन तव पाये ॥ क्या कारण प्रभु चेत कराये ॥ भणे राम तिनको मुसकाई ॥ परीक्षा तव लङ्कामो पाई ॥ ४२६६ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

अवधि पुरीके लोग सब हाल न जाने कोय ॥ ताते पुन निज देशमो देहु परीक्षा सोय ॥ देहु परीक्षा सोय अयश मम सर्व नशाये ॥ शुन सीता करजोड़ भूमिको याद कराये ॥ वसूमती स्त्रीरूपधार पहुंची द्रुत आई ॥ ले सीताको गोद गर्ज्ज पाताल सिधाई ॥ ४२६७ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

अधो भूमिमो गात तजाई ॥ अम्म्याकृप धार जगमाई ॥ चढ़ि विमान गोलोक सिधावें ॥ पुष्प अमर मङ्गल सब गावें ॥ ४२६८ ॥ आपुसमो सब लेख चलाये ॥ नारायण पहुंचे \ अब आये ॥ दूत रघुपति कर जोड़ पठावें ॥ मम सीता शासू दे

समुझाये ॥ त्रास पाय बालक भग आये ॥ मेध करी घोटक ले साई ॥ कवन वीर खोजौं मे आई ॥ ४३४७ ॥ यद्यपि मता नाथ नहि पावैं ॥ हाल जाय तब पास जनावैं ॥ शुन रघुपति मनमो मुशकाये ॥ कटक सहित घोटक ले धाये ॥ ४३४८ ॥ काट अश्व मख पूर्ण कराई ॥ धन द्विज गण प्रभुसे बहु पाई ॥ उत मुनि वर सीताको आये ॥ समाचार सब हर्ष बलाये ॥ ४३४९ ॥ कान्त कुशल शुनके हरषाई ॥ तिष्ठो गोदाङ्कज ले माई ॥ बालमीक सब शिष्य बुलाये ॥ लव कुशको ले साथ सिधाये॥४३५०॥ पहुंचे अवधिपुरीमो आई ॥ पश्य त्रिभूवन कन्त अखाई ॥ धन्य भाग देखन निज पाये ॥ दौरा मुनि दर्शन गृह आये ॥ ४३५१ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

अस भण मुनिवरको प्रभो आसन पर तौष्ठाय ॥ कन्दमूल पकवान दे प्राशन खूब कराय ॥ प्राशन खूब कराय आचमन विप्र कराये ॥ दे दखिना कर पान तिलक द्विज भाल लगाये ॥ भये खलासा सिंह दुष्ट गुरु देव मनाई ॥ अश्वमेध करि नाथ विप्रका मान बढ़ाई ॥ ४३५२ ॥

अथ श्रीसीतादेवीका स्वर्गारोहण।

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

प्रात समय रघुनाथजी बैठे सभा लगाय॥ भूप सर्ब्ब अरु विप्र लै जो मखमो सब आय॥ जो मखमो सब आय शिष्य सबको लै भाई॥ बालमीक मुनि जाय सभा परफुल्ल कराई॥ लव कुश बीण बजाय श्लोक रामायण गाये॥ नरपति मुनि शुन तान सर्ब्ब मोहित हो जाये॥ ४३५३॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

सप्तकाण्ड रामायण गाये॥ शुन शुन सभा सर्व सुख पाये॥ जब वर्ण्णन माताको गावैं॥ तब रघुपति मनमो कलपावैं॥ ४३५४॥ गावत बीण बजा पख भाई॥ गर्भवती सीता जब माई॥ तब बनमो रघुनाथ पठावैं॥ प्रसव जमल सुत मात करावैं॥ ४३५५॥ लव कुश तिनका नाम रखाई॥ कीना प्रतिपालन सुत माई॥ अश्वमेध जब नाथ कराये॥ तुरग भाल जय पत्र लिखाये॥ ४३५६॥ बीर धुव जो बीर कहावैं॥ सो बाजी मम थाम रखावैं॥ ताको पढ़ लव कुश मुशकाई॥ बांधैं अश्व कोप करि भाई॥ ४३५७॥

बरस सहस्त्र दीर्घ प्रभु पाये ॥ तब केकय सुत दूत पठाये ॥ ४३७६ ॥ जोड़ प्रवेष्ट तबन पार गाई ॥ लोमश छत गन्धर्व निताई ॥ प्रजा सर्वको मार खपाये ॥ धनदारा ले भवन सिधाये ॥ ४३८० ॥ ताकोरघुपति देहु खपाई ॥ तब मातुल यह बोल पठाई ॥ सुनत प्रभो द्रुत भरत बुलाये ॥ सत्राजितकी सदन पठाये ॥ ४३८१ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

लखि पुत्रको पश्यशै सत्राजित हरषाय ॥ बहु प्रकार सन्मान करि निज शत्रु दिखलाय ॥ निज शत्रु दिखलाय भरत तब समर कराये ॥ लोमशका शिर काट यशः मातुलसे पाये ॥ भये खालसा सिंह कछुक दिन वास कराई ॥ मातुलसे हो विदा अवधि पहुंचे हरषाई ॥ ४३८२ ॥

अथ सम्भ्राता एवं सअयोध्यापुरी श्रीरामचन्द्रजीका स्वर्गारोहण ।

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

करि प्रणाम रघुनायकी भरत भये रत हाल ॥ तव प्रसाद रण जीतके आये दीन दयाल ॥ भये

दीन दयाल नाथ सुनयो हरषाये ॥ देकरि आशीर्वाद अनुजको कण्ठ लगाये ॥ धर्म्मराज सम राज करें सानुज रघुराई ॥ मन्हर अब्द सहस्र वयस पूरण हो आई ॥ ४३८३ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

लक्ष्मण भरत रिपुहन भाई ॥ सबको भार्य्या स्वर्ग सिधाई ॥ ब्रह्मा धर्म्मराजको आये ॥ भणे लाव नारायण आये ॥ ४३८४ ॥ कन्त बिना कामना दुख पावें ॥ काल नाथको जाय अनावें ॥ सुनत बचन यमराज सिधाये ॥ भणे अवधि रघुपतिको आये ॥ ४३८५ ॥ लिख ज्येष्ठ मुझको पठवाई ॥ गुप्त कथा बोले रघुराई ॥ गृह बाहर सबको करि दीजे ॥ द्वारपाल लक्ष्मणको कीजे ॥ ४३८६ ॥ और सत्य कीजे रघू राई ॥ कोय लोक आगे नहि पाई ॥ यद्यपि कोय यहां अलि आवें ॥ अवरज वर्जन नाथ करावें ॥ ४३८७ ॥ जो यह सत्य करें रघुराई ॥ तो मे भणे हाल सो गाई ॥ सुन ईश्वर द्रुत सत्य कराये ॥ लक्ष्मणको भाषें समुझाये ॥ ४३८८ ॥ कोय यहां आवें नहीं भाई ॥ लव वर्जन पैं सत्य कराई ॥ सावधान हो भ्रात रहावें ॥ आर्ते कोय विपत्ति न आवें ॥ ४३८९ ॥

शून्य वसुधाको जाये ॥ ४४०१ ॥ ताते अर्जुन मृत्यु कराई ॥ जित कोजे जगका रघुराई ॥ अस भाष लछमण वहुत खिमाये ॥ रघुपति चित्त एक नहिं आये ॥ ४४०२ ॥ अवरजको प्रभु कण्ठ लगाए ॥ भये अचेत मृत्यु सम भाई ॥ सुरनर मुनि रोवैं कलपाये ॥ पशु पक्षी जित जीव रहाये ॥ ४४०३ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

जब चेतन पायो प्रभो कोट युक्ति द्विज कीन ॥ सुख्यते प्रभु बोलैं नहीं कर घुमाय कहि दीन ॥ कर घुमाय कहिदीन विप्र सब भाष सुनावैं ॥ अर्जुन प्रभुने कीन पाप चाहे जित जावैं ॥ शुन लछमण कलपाय नाथ पदमो शिर नाये ॥ झपट प्रभो पुन थाम अनुजको कण्ठ लगाये ॥ ४४०४ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

लपट परस्पर गल रघुराई ॥ करि क्रन्दन अस शोर मचाई ॥ जाको शुन पुर भर कलपावैं ॥ विप्र सकल मिलि युक्ति करावैं ॥ ४४०५ ॥ कीनी लछमणको सब आई ॥ तब अवरज छोड़े रघुराई ॥ अस विचार मुनि वर सब आये ॥ लछमणको कीने समुझाये ॥ ४४०६ ॥ चले और प्रभुको शिरनाई ॥ लखणा लखण भवा नाथ चलाई ॥ जब अदृश्य लछमण हो

जावैं ॥ तब रघुपति निज शोश हरावैं ॥ ४४०७ ॥ मृत्यु तुल्य प्रभु शयन कराये ॥ मिलि भरत शत्रुहन धाये ॥ लक्ष्मणसे भेटे पञ्च भाई ॥ रघुपतिसे चौगुण कलपाई ॥४४०८॥ कहं लग तिनका शोक लिखावैं ॥ लिखत लिखत लोचन जल जावैं ॥ प्रजा सर्व्व भेटनको आये ॥ सबको नाथ प्रबोध कराये ॥ ४४०९ ॥ सरयू मध्य गये रघुराई ॥ राम रटत तन गुप्त कराई ॥ पश्च्य लोक व्याकुल सब धाये ॥ शुख सम्पद गृह नार तजाये ॥ ४४१० ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

अब चेतन पाये प्रभो तब पुरजन बतलाय ॥ सरयू नदिमो जायके लक्ष्मण बास कराव ॥ लक्ष्मण बास कराय शुनत राघव घबड़ाये ॥ करि क्रन्दन चिल्कार मार बोलैं कलपाये ॥ अब बनमो हम गये साथ जावैं बन भाई ॥ गये नदीमो भ्रात मिलौं तिनसे मे जाई ॥ ४४११ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

कहैं भरतको नाथ बुझाये ॥ तिष्ठौ राज सिंहासन जाये ॥ मै लक्ष्मणके निकट सिधावैं ॥ राज अनुज यह पाप करावैं ॥४४१२॥ कहै भरत प्रभुको शिर नाई ॥ मै भी साथ चलौं रघुराई ॥ तब बिछुड़

सहानहिं आये ॥ करौं सिव तव निकट रहाये ॥ ४४१३ ॥ सुनत वचन रघुपति कलपाई ॥ भयो रिपु-हनको समुझाई ॥ बैठे राजसिंहासन आये ॥ मथू हन कर ओड़ पलाये ॥ ४४१४ ॥ तव सिया करिहौं रघुराई ॥ आते मोचन गात जुड़ाई ॥ सुन रघुपति अतिशय कलपाये ॥ नगर नगरमो खबर पठाये ॥ ४४१५ ॥ जो जो स्वर्ग साथ मम जावें ॥ सो सो वाप्र अवधि मो आवें ॥ खबर पाय पहुंचे नर नारी ॥ पक्षी लूल्हे लङ्गड़े सारी ॥ ४४१६ ॥ हनू-मान सुग्रीव कपीशा ॥ अङ्गद जामवन्त सब कोशा ॥ पहुंचे भक्त विभीषण आये ॥ और भक्त जित तौन रहाये ॥ ४४१७ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

देख दशा रघुनाथको करते हाहा कार ॥ पुत्र अष्ट ले गोदमो तौष्टे सभा मझार । तौष्टे सभा मझार नाथ मनमो हरषाई ॥ लवकुशकी दे तिलक तख्त अपने बैठाई ॥ भरत पुत्र अरु भ्रात नाथ पुन निकट वुलाये ॥ शिरमो तिलक लगाय राज अभिषेक कराये ॥ ४४१८ ।

॥ पादाकुलक छन्द ॥

मल्लदेश अङ्गदने पाये ॥ चन्द्रकेतुको अङ्ग

पठाये ॥ लक्ष्मणको पक्षपुत्र बुलाई ॥ कीना राज तिलक रघुराई॥४४१९॥ मकरध्वज लक्षका पुर पाये ॥ इन्द्रदेश इन्द्रध्वज धाये ॥ सो लै राजसभा हरषाई ॥ तिहै राज्य सिंहासन जाई ॥४४२०॥ पुन शत्रुघ्नात्मज पक्ष लाये ॥ राज तिलक दीना हरषाये ॥ नाम सुबाहु शत्रुघाती ॥ दहि नगर मथुरा विख्याती ॥ ४४२१ ॥ भ्रात सुग्रीवको हरषाये ॥ तिहै राज्य सिंहासन आये ॥ भयो विभिषणको रघुराई ॥ पक्ष राज कीजे गृह आई ॥ ४४२२ ॥ जोड़ भुजा इम शब्द उचारें ॥ मैं भी साथ नाथ तब आवें ॥ भने प्रभो तिनको समुझाई ॥ तुमसे है कीर्ति मम भाई ॥ ४४२३ ॥ सुखसे लङ्का भोग करावे ॥ पव नहिं मुझको भ्रात सतावें ॥ पवनात्मज पुन नाथ बुलाये ॥ कार क्रन्दन तिनको बतलाये ॥ ४४२४ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

तव मम एक शरीर है तातें शुनी चितलाय ॥ जहा ग्रन्थ मेरो बचे तहां शुनो तुम आय ॥ तहां शुनौं तुम आय वीर मशहूर कहाये ॥ आम मल्लको भयो नाथ वर दान पठाये ॥ वृद्ध गात तव तातें युवा होवो तुम आई ॥ फिरि द्वितीय अवतार भेट करिहौं पुन पाई ॥ ४४२५ ॥